दिल्लीक पार्क



(शब्दचित्र)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

दिल्लीक पार्क

(शब्दचित्र)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक
गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा
(दरभंगा)
मो.-8986261756

Dillik Park (Maithili Literary Sketch)
by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2018, **₹ 200/-**

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला- दरभंगा
पिन- 847233 (बिहार)

प्रथम संस्करण : वर्ष 2018

पोथी प्राप्तिस्थान : **विद्यार्थी पुस्तक भंडार**
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : **₹ 200.00**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण



पूज्यवर पिताजी **स्व. बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. गोसाउनि देवीक**
पुण्यस्मृतिमे
सादर समर्पित ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

एक टहलान ईहो

'दिल्लीक पार्क' क गुड़किल्ली बुझबा लेल 'शार्प' दिमाग तँ चाहबे करी । जते दिमाग लड़ायब तते गहीँरमे जायब, तते अधिक आनन्द पायब । ओते कसरत जँ नहियोँ करब, हल्लुक मने पढ़ितो बढ़ब, तैयो कतहु अपने अँटकब नहि, मन कतहु भटकत नहि, रस ग्रहण होइते रहत । अन्त कयलापर प्रभाव आर पुष्ट होयत, अबस्से सन्तुष्ट होयब ।

श्री नन्द कुमार मिश्रजी कवि-गीतकार छथि, कथाकार-उपन्यासकार छथि, ललित पद्य आ सुरुचिपूर्ण गद्य लिखै छथि, से बहुत दिनसँ लिखै छथि, उपस्थापन-कलामे पटुता प्राप्त छनि, कथ्यकेँ सुन्दर गढ़नि दै छथि, कतहु-कतहु जँ गम्भीर चिन्तनक कसीदो कढ़ै छथि तँ ठाम-ठाम व्यंग्य-रंगो भरै छथि । कविता-कथा-उपन्यासक हिनक सात गोट पोथी पूर्वप्रकाशित छनि । 'शब्दचित्र'क ई कृति हिनक आठम उपहार थिकनि । अतएव, मैथिली संसारमे सुपरिचित ई पूर्वेसँ छथिहे । लोकरुचिक लेखक-रूपमे अपन समाजमे हिनक प्रतिष्ठा स्थापित भऽ चुकल छनि । एहन कृती लेखकक आब परिचयक आवश्यकता की ? हिनक कोनो पोथीक उपस्थापन-प्रोत्साहनक हेतु आनक स्वस्तिवाचनक प्रयोजन कोन ?

बंगलाक सुप्रसिद्ध साहित्यकार मिथिला-निवासी विभूति भूषण मुखोपाध्याय एक ठाम बाजल रहथि जे हुनक बेसी कथा-उपन्यासक विषयवस्तु हुनका रेलवे स्टेशनपर अथवा ट्रेनक सफरमे भेटल छलनि । नन्द कुमार बाबूक आन पोथी दऽ तँ नहि कहि सकब, एहि पोथीक सामग्री ई कतऽसँ पौने छथि से तँ पोथीक नामेसँ साफ कऽ देने छथि ।

मुदा, ई 'हाफ' अछि । 'रिमेन' मुदा 'मेन हाफ' जे अछि से थिक कुकूर । तकरा ई नुका देलथिन शीर्षकमे । से वेश ! नहियोँ नुकबितथिन, 'दिल्लीक पार्कमे कुकूर' ईहो जँ कहितथिन तँ सेहो नहि बेजाय । भऽ सकैछ, जानि-बूझिकऽ एना ई कयने होथि, किएक तँ हिनक कुकूर हिनक मनुक्खपर भारी पड़ैछ । आ, मनुक्ख तँ कुकूर थिक नहि ! तेँ डर मानने होथि ई ! जे-से ।

परिच्छेद कहू वा खण्ड कहू, नौ भागमे पोथी विभक्त अछि । सभ परिच्छेद स्वतंत्र अछि । योजक अछि तँ यैह टा जे अन्तिमकेँ छोड़ि प्रत्येक खण्डक आरम्भ होइछ दिल्लीक पार्कसँ । कथावाचक टहलैत काल जनिका-जनिकासँ परिचित होइ छथि, सभकेँ कुकूर रहिते छनि आ ई सभ गोटेसँ कुकूर पोसबाक अनिवार्यतापर जिज्ञासा करिते छथिन । हुनका लोकनिक तर्कसँ अवगत होइ छथि । अन्तिम परिच्छेदमे दिल्लीक पार्क तँ नहि अछि, कारण कथावाचक हुनक आवासपर जाकऽ भेट करै छथिन, मुदा ओतहु कुकूर आबि जाइ अछि आ अपन सत्ता स्थापित कऽ लै अछि ।

पहिल परिच्छेदकेँ पोथीक प्रस्तावना मानल जा सकैछ । आगाँक आठ परिच्छेदमे आठ मुख्य व्यक्ति छथि, आठ वर्ग अछि, आठ परिस्थिति छै, आठ मानसिकता छै, किन्तु परिणाम छै एक– गामसँ पलायन, मूलसँ विस्थापन, अपनसँ दूरी– कारण, शोषणजन्य मजबूरी ।

दोसर परिच्छेदक खुशवंत सिंह तथा चारिम परिच्छेदक खन्ना साहेबकेँ छोड़ि सभ प्रधान पात्र मिथिलाक थिका जे आब प्रवासी, दिल्ली-निवासी भऽ गेल छथि । अजय बाबू रिटायर्ड आइ.ए.एस. छथि, सुधाकरजी पूर्व शिक्षक छथि, रमणजी इंजिनियर छथि, किरण झा डाक्टर छथि, बूधनजी दलित श्रमिक छथि तथा रघुवंशजी एम.एल.ए. छथि । सभ गोटे अपन-अपन आप्तसँ पीड़ित-प्रताड़ित छथि, एते धरि जे डीह-डाबर पर्यन्त त्याग करऽ पड़लनि आ दिल्लीक शरणापन्न होबऽ पड़लनि । विश्वासघातसँ तते सीदित भेला जे आप्त मनुक्खकेँ हेय मानि लेलनि, आस्थावान कुकूर श्रेय भऽ गेलनि ।

ठीक थिक, अपन समाजमे जे पलायन प्रवृत्ति एम्हर जोर पकड़ि

लेलकै अछि, स्वार्थ-कटुता-वैमनस्य माथ उठा रहलै अछि, गाम खाली भऽ रहल छै, नगर-महानगर भरि रहल छै– ई बात साहित्यमे अयबाक चाही । संगहि, एकर जे खतरा देखै छी, जेना– लोकमे सामाजिकताक लोप भऽ रहलै अछि, भीड़मे मनुक्ख एकसर भऽ गेल अछि, परिचिति क्षीण भऽ रहल छै, लोक जड़िविहीन भऽ गेल अछि, अमरलत्ती जकाँ कोनो गाछपर लतरि गेल अछि, गामक उन्मुक्त वातावरणसँ मुँह मोड़ि फ्लैटक कोहामे निमुन्न भऽ गेल अछि, नव पीढ़ीमे संस्कार-संस्कृति स्वाहा भऽ रहलै अछि– एहू दिस प्रबुद्ध वर्ग आब ध्यान देबऽ लागल अछि, ओकर मानसक कोनो कोनमे एहन चेतना अँकुरा रहलै अछि जकर प्रस्फुटन भेलाक बाद संभव थिक जे लोक फेर घरमुहाँ होयबाक बेगरता बूझय । शुभ थिक जे अपन साहित्योमे एकर मद्धिम आहट सुनऽ लगलिऐ अछि । प्रबुद्ध लोक 'इजोत दिस' ताकऽ लगला अछि । ओ देखऽ लगला अछि जे हुनक गोसाउनिक घर आ भड़ार-घरकेँ मूस भीतरे-भीतर खुक्ख कयने जा रहलनि अछि । तेँ संभव थिक जे तखन एहन लोक 'झाउँ-झाउँ' सुनबाक अपेक्षा 'म्याउँ-म्याउँ' सुनब पसिन्न करथि ! अस्तु, कुकूरो-बिलाड़िक बेगरता साहित्यकेँ आगुओ रहतैके ।

आशा अछि, अपने लोकनि एहि शब्दचित्र सभमे अनेक कोणसँ अनेक भंगिमा देखब आ अपन रुचिक अनुसार ताहि सभमे रंग भरब । एते विचारोत्तेजक विषय उठयबाक हेतु श्री नन्द कुमार बाबूकेँ अशेष बधाइ दै छियनि ।

दरभंगा

प्रो.राधाकृष्णचौधरी-स्मृतिदिवस

15 मार्च 2018

भीमनाथ झा

लेखकीय

प्रिय पाठकगण,

आइ विज्ञान कतेक रास प्रगति कयलक अछि । लोक चन्द्रमा आ मंगल पर जयबाक लेल उत्सुक अछि । से सुनि मन प्रफुल्लित भ' उठैत अछि, मुदा दोसर दिस ओतबहि तेजीसँ मानव मूल्यक पतन भेल जा रहल अछि । लोक स्वार्थी भेल जा रहल अछि, ईर्ष्यालु भेल जा रहल अछि । जँ ओकरा असामाजिक कही तँ अतिशयोक्ति नहि होयत । मनुक्ख सँ बेशी लोक कुकूर-प्रेममे पागल अछि । जतेक अनुरागसँ लोक माय-बापक सेवा नहि करैत छथि, ओहिसँ बेसी अनुराग कुकूरक प्रति देखबैत छथि । ओकर भोजनपर ध्यान रखैत छथि, ओकर घुमबा-फिरबाक फिकिर करैत छथि । आइ बच्चा पढ़ि-लिखिक' जीविकाक लेल शहर ध' लैत छथि । ओ माय-बापकेँ अपना संग रखबामे असमर्थ भ' जाइत छथि । तकर कारण जे- किछु होउक । माय-बाप एसकर रहबाक लेल बाध्य भ' जाइत छथि । जे सम्पन्न लोक छथि, तनिका नोकरक सहारा लेब' पड़ैत छन्हि । मुदा ओहिसँ कतेको गोटे अपनाकेँ असुरक्षित बुझैत छथि । तेँ हुनका लेल कुकूर संग रहब लाचारी छन्हि । समाजमे जे विश्वासक वातावरण छलैक, तकर अभाव बुझना जाइछ । आइ मनुक्खक दायरा जतेक बढ़ि गेलैक अछि, ओतबहि ओकर विचार-विवेक संकुचित भेल जा रहल छैक । आइ परिवारक परिभाषा बदलि गेल अछि । सब केओ मात्र अपन कनियाँ आ बाल-बच्चाक विषयमे सोचैत छथि । सहोदर भाय आ संयुक्त परिवारक अर्थ बदलि गेल अछि । तेँ आइ मनुक्ख कुकूरक

संग रहबाक लेल विवश अछि, खासक' पैघ शहरमे । ओकरा संग राखि अपन दिनचर्या आ बचल-खुचल जीवनकेँ व्यस्त बनौने रहैत अछि ।

प्रस्तुत पोथी यथार्थ पर आधारित अछि, मुदा एकर स्थान आ पात्र सब काल्पनिक अछि । कदाचित कोनहु घटना कोनहु गोटेसँ मिलैत हो तँ एहि लेल क्षमाप्रार्थी छी ।

पोथीक प्रकाशन लेल सर्वप्रथम हम आभारी छी साहित्य अकादेमी नई दिल्ली सँ सम्मानित प्रखर आलोचक प्रो. डा. भीमनाथ झाजीक, जनिकर प्रचुर प्रोत्साहन आ आशीर्वाद हमरा भेटल । पुनः आभारी छी साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत, सेवानिवृत्त लेखापाल डा. योगानन्द झाक, जनिकर रचनात्मक सहयोग समय-समय पर भेटैत रहल अछि । अपन धर्मपत्नी, अनुज, बालक-बालिकाकेँ सेहो बहुत योगदान रहलाक कारणेँ धन्यवाद दैत छियन्हि । हम गोसाउनि-बैद्यनाथ स्मृतिमंचक सब सदस्यकेँ धन्यवाद दैत छियन्हि ।

रामनवमी
25.3.2018

नन्द कुमार मिश्र
उफरदाहा, दरभंगा
मो.- 8986261756

दिल्लीक पार्क

1

श्याम बाबू दिल्ली गेल छलाह। श्याम बाबूकेँ एकटा बेटा छन्हि विवेक। विवेक दिल्लीमे रहैत छन्हि। ओ कतेको बेर श्याम बाबूकेँ दिल्ली अयबाक लेल आग्रह कयलकन्हि। श्याम बाबू सरकारी विभागमे कार्यरत छलाह। आब साल भरि पूर्व सेवानिवृत्त भ' चुकल छथि। ओ समाजक बीच रहब बड़ पसिन्न करैत छथि। हुनका शहरक जीवनसँ गामेक जिनगी नीक बुझना जाइत छन्हि। मुदा एहि बेर ओ बेटाक आग्रहकेँ टारि नहि सकलाह। छओ मास दिल्लीमे रहि क' आबि रहल छथि। एक दिन हम पुछि देलियन्हि, "श्याम भाइ! दिल्लीमे की सब देखलहुँ? ओहि ठाम तँ बड़ नीक लागल होयत। नीक-नीक भोजन आ नीक-नीक ठाम घुमब-फिरब। अहाँ तँ गाम आ गामक लोक सबकेँ बिसरि गेल होयब।"

श्याम बाबू बजलाह, "गाम आ गामक लोककेँ कोना बिसरि जायब? जे जाहि खोभाड़मे रहि आयल अछि, ओकरा कोना बिसरि जायत? तखन, दिल्लीमे की देखब? भोजन-भात तँ अवश्य नीक-निकुत भेटि जाइत छल, मुदा गप्प-शप्प ककरासँ करितहुँ? साँझ-भिनसर कनेक पार्कमे टहलि लैत छलहुँ आ भरि दिन टी.भी. लग बैसल रहैत छलहुँ। दिल्लीमे एकेटा वस्तु सबसँ बेसी भेटल आ ओ छल कुकूर।"

हमरा मुँहसँ अनायास बहरा गेल, "कुकूर?"

श्याम भाइ बजलाह, "हँ... हँ... कुकूर। हमरा तँ बुझायल जे

लोकोसँ बेसी ओकरहि संख्या छैक । एहिसँ पूर्व करीब दस दिनक लेल गेल छलहुँ । तावत् सेवानिवृत्त नहि भेल छलहुँ । हमर बालक जाहि डेरामे रहैत छलाह, तकर निचला तल्लापर एकटा सरदारजी रहैत छलाह । ओ एकटा कुकूर पोसने छलाह । सब केओ तँ धड़धड़ा क' चल जाइत छल मुदा हमरा ओकरासँ परहेज छल । यावत् ओकरा कोनो गोटे हँटा क' नहि रखैत, तावत् हम भीतर नहि जा सकैत छलहुँ । कारण ओ कुकूर सबकेँ सुंघैत छल आ चटैत सेहो छल । हमरा ओ एही दू कारणसँ नीक नहि बुझाइत छल । कहलो गेल अछि जे 'काटे चाटे श्वान के दुहू भाँति विपरीत' । हम ठहरलहुँ शिवक पुजारी । कतेको बेर सुलतानगंजसँ गंगाजल भरि बाबा बैद्यनाथकेँ चढ़ौने होयब आ ओहि बाटमे कमरथुआ लोकनिकेँ कुकूर अर्थात् भैरवसँ परहेज करैत देखने होयब । ओ सभ ओकरासँ बाँचि क' चलैत छथि । जाधरि कान्ह पर गंगाजल रहैत छन्हि, ताधरि अपनाकेँ आ गंगाजलकेँ कुकूरक स्पर्शसँ बचबैत छथि । एहन मान्यता अछि जे कुकूरक स्पर्शसँ कमरथुआ आ गंगाजल दुनू अपवित्र भ' जाइत अछि । एहन गंगाजल बाबाक ऊपर रिसाल नहि कयल जा सकैत अछि ।''

''मुदा दिल्लीमे कुकुरसँ बाँचब कठिन छल । ठीक तहिना जेना काशीमे विधवा आ संन्यासीसँ, जेना लोक सभक मुहेँ सुनैत छी । जेम्हरे जाउ, ओम्हरे कुकूर । अधिकांश घरोमे बोर्ड टांगल देखैत छलियैक **'कुत्ते से सावधान', 'यहाँ कुत्ते रहते हैं'** । देखि क' मने-मन हँसियो लगैत छल । एकर की मतलब भेलैक ? एहि ठाम लोक नहि रहैत अछि की ? जखन डेरा पहुँचैत छलहुँ तँ बालककेँ इशारा करैत छलियन्हि, कुकूरकेँ हँटयबाक लेल । ओ कुकूरकेँ हँटबैत छलाह, तखन हम भीतर जाइत छलहुँ । कुकूर हमरा सबकेँ देखि बाघ जकाँ गुड़राइत रहैत छल आ देखबामे सेहो बड़ भयानक लगैत छल । हँसी-चौलमे बालककेँ कहि दैत छलियन्हि, यावत् एहि डेरामे रहबह, हम सब दिल्ली नहि आयब ।''

''ओहि डेरामे जे कुकुर पोसने छलाह, से एकटा सरदारजी छलाह । ओ तँ हमरा लेल डेरा नहि छोड़ि सकैत छलाह आ ने कुकूरेकेँ हँटा सकैत छलाह । हमरा लेल ओ अपन कुकूर-प्रेमकेँ बलिदान किएक करितथि ? मुदा हम तँ छोड़ि सकैत छलहुँ । हमरा पर तँ कोनो प्रतिबंध

नहि छल । जखन किराये द' क' रहब तँ कतहु रहि सकैत छी ।

''ओना मिला-जुला क' डेरा बड़ नीक छलैक । ओहि ठामक वातावरण आ परिवेश हमरा बड़ आकर्षित कयलक जकर बेसी ठाम अभाव रहैत छैक । तेँ डेरा बड़ नीक लागल, मात्र ओहि कुकूरकेँ छोड़ि क' ।''

पुनः एहि बेर जे गेलहुँ तँ बालक दोसर डेरा लेने छलाह । हम कुकूरक जिज्ञासा कयलहुँ तँ बालक बजलाह, ''एहि ठाम कुकूर नहि छैक ।''

हमरा बड़ आश्चर्य लागल । दिल्लीक डेरा, ताहूमे सरदारक महल्ला आ बिना कुकूरक । जखन डेरामे प्रवेश कयलहुँ तँ हम ओ दृश्य देखि थकमका गेलहुँ ।

बालक पुछलन्हि, ''की भेल ?''

हम कहलियन्हि, ''ओहि ठाम तँ बाट छेकैत छल । एहि ठाम तँ ओछाओने पर बैसि प्रतीक्षा क' रहल अछि ।''

बालक बजलाह, ''ई तँ नकली अछि । कपड़ाक बनाओल गेल अछि । एहिसँ बच्चा सब खेलाइत अछि ।''

हम कहलियन्हि, "नकली हो की असली, कपड़ाक हो वा चमड़ाक, थिकैक तँ कुकूरे ने !"

मुदा बालक मानबाक लेल तैयार नहि भेलाह । हमर नजरि देबाल पर टांगल एकटा फोटो पर पड़ल । हम बालकसँ पुछलियन्हि, ''ई की थीक ?''

ओ बजलाह, ''ई तँ भगवानक फोटो थिकनि ।''

हम कहलियन्हि,''ई तँ कागज केर अछि । ई तँ नकली थीक । एकरा भगवान कोना मानबैक ?''

ओ निरुत्तर भ' गेलाह आ तुरंत ओहि नकली कुकूरक स्थान परिवर्त्तन करैत दोसर ओछाओनक इन्तिजाम कयलन्हि । तखन हम सब ओहि पर बैसलहुँ । हम बालककेँ इहो कहलियन्हि, ''जँ बच्चेकेँ खेलयबाक लेल नकलीये सामग्री देबाक अछि तँ बाघ-सिंह दिऔक, हाथी-घोड़ा दिऔक, आ अन्य वस्तु सभ दिऔक, ई कुकूर किएक ?''

एक दिन रंजनजी डेरा पर अयलाह । ओ हमरा बालक केर अभिन्न संगी छथिन्ह । दुनू गोटे एकहि कार्यालयमे काज करैत छथि । रंजनजी अपनहि इलाकाक लोक छथि । डेरा सेहो लगेमे छन्हि । ओ बेसी काल डेरा पर

अबैत-जाइत रहैत छथि । व्यवहारसँ एहन नहि लागत जे दुनू सहोदर नहि होथि । गप्पक क्रममे एक दिन रंजनजी पुछलन्हि, ''दिल्लीमे की सब देखलहुँ ?''

हम हुनका उत्तर देलियन्हि, ''एखन धरि तँ एकेटा वस्तु देखल अछि ।''

ओ उत्सुकतावश पुछलनि, ''कोन वस्तु देखल अछि ।''

हम कहलियन्हि, ''कुकूर ।'' ओ बजलाह, ''कुकूर ?''

''हँ...'' हमर उत्तर छल ।

रंजनजी बजलाह, ''हम अपनेक अभिप्राय नहि बुझलहुँ ?''

हम कहलियन्हि, ''हम जेम्हर गेलहुँ, बाटमे, घाटमे, पार्कमे, ककरहु डेरा पर, एखन धरि कुकूरे देखल अछि ।''

''एहिसँ बेसी किछु भेटबो नहि करत । ई दिल्ली थीक । एहि ठाम दू प्रकारक कुकूर भेटत । एकटा चिन्हारकेँ देखि क' भूकैत अछि आ ताधरि भूकत जाधरि ओ चिन्हार लोक ओहि ठामसँ चलि नहि जाथि । दोसर अनचिन्हारकेँ देखि क' भूकैत अछि आ ताधरि भूकत जाधरि ओ आगंतुककेँ सुंघि वा चाटि नहि लेत वा मालिकक आदेश नहि भेटतैक ।'' रंजनजी बजलाह । हम रंजनजीक इशारा बुझि गेलहुँ आ सोचलहुँ, ''कतेक सटीक हिनकर व्यंग्य छनि, मुदा एकरा बुझनिहार के अछि ?''

एक प्रकारक कुकूर अपना मालिकक रक्षा करैत अछि । ओ मालिकक लेल अपन प्राण द' सकैत अछि । मुदा दोसर प्रकारक कुकूर देश आ समाजकेँ गर्त्तमे मिला रहल अछि । देशकेँ बेचि रहल अछि । देशक टाका विदेशी बैंकमे जमा रखैत अछि, महज अपना स्वार्थक लेल ।

हम नित्य भोरे छओ बजे पार्क टहलबाक उद्देश्यसँ जाइत छलहुँ । हम तँ धोती-कुर्त्ता पहिरि क' जाइत छलहुँ । मुदा अन्य लोक पैंट-शर्ट, पैजामा-कुर्त्ता वा हाफपैंट-गंजीमे सेहो अबैत छलाह । हमर वेश-भूषा देखि बहुतो गोटे हमरा दिस आकृष्ट होइत छलाह । एही क्रममे किछु लोकसँ चिन्हा-परिचय भेल । हमर प्रवृत्ति सब दिनसँ जिज्ञासु रहल अछि । हमरा ई बुझबाक उत्कट इच्छा भेल, जे प्राय: लोक श्वान-पालनमे किएक व्यस्त रहैत अछि ? एकर किछु तँ अर्थ होयतैक । एही परिप्रेक्ष्यमे सबसँ पहिने गप्प भेल खुशवंत सिंहजीसँ ।

2

खुशवंत सिंह फौजमे कर्नल छलाह आ पन्द्रह वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त भेलाह । ओना खुशवंत सिंह सेवाकालमे प्राय: देशक सब क्षेत्रमे भ्रमण कयलनि । सेवानिवृत्तिक बाद दिल्लीमे अपन मकान बनौने छथि । कर्नल साहेबकेँ मात्र तीनटा बेटा छन्हि । तीनू फौजमे नीक पदपर कार्यरत छथिन्ह । सभक अपन परिवार आ धिया-पूता संगे रहैत छन्हि । एहि ठाम दिल्लीमे कर्नल साहेब दुनू प्राणी रहैत छथि । बेटा लोकनि छुट्टीमे बीच-बीचमे अबैत रहैत छथिन्ह । हुनका मैथिलीमे बजैत सुनि हमरा बड़ आश्चर्य भेल । ओ पंजाबी छथि । एहि ठाम मैथिल तँ दिन तका क' मैथिली बजैत छथि । ओहि ठाम जँ कोनो अन्य भाषा-भाषी मैथिलीमे गप्प करथि, तँ की एकरा आश्चर्यक गप्प नहि कहबैक ? हम कर्नल साहेबकेँ पुछलियन्हि, ''कर्नल साहेब, अपने मैथिली सेहो बाजि लैत छी ?''

कर्नल साहेब बजलाह, ''किएक, मैथिली मात्र अहीं सभक थीक ? दोसर नहि बाजि सकैत अछि ? औजी, मैथिली तँ सम्पूर्ण विश्वक थिकीह । जगत जननी जानकीक दोसर नाम मैथिलीये थिकन्हि ने !''

हम कहलियन्हि, ''नहि...नहि...एहन गप्प नहि छैक । अपने तँ पंजाबी थिकहुँ । दोसर गप्प, दिल्ली आबि क' तँ सब अपन असलो भाषा बिसरि जाइत अछि । ओकरा पटरीपर अयबामे छओ मास लागि जाइत छैक । तैओ किछु ने किछु छाप रहितहि छैक । तेँ...''

कर्नल साहेब बजलाह, ''अपनेक सोच सही अछि । मुदा हम खूब नीक जकाँ तँ नहि, तखन टो-टा क' तँ बाजिये सकैत छी । ओना बुझबामे कोनो दिक्कत नहि होइत अछि । जखन दरभंगा हवाइ अड्डा बनैत छल, तँ हम ओतहि छलहुँ । करीब तीन साल ओतहि रहलहुँ आ ओहि ठामक मजदूर सब जखन आपसमे गप्प करैत छल तँ हमरा बड़ नीक लगैत छल । हमहूँ ओकरा सभक संगे रहैत-रहैत ई भाषा सीखि गेलहुँ । तेँ हमरा अहाँ सब सनक लोकसँ गप्प करबामे बड़ नीक लगैत अछि । हम तँ जखने अहाँकेँ धोती-कुर्त्तामे देखलहुँ, आभास भ' गेल जे

अहाँ अवश्य मैथिल छी ।''

हम कहलियन्हि, ''से की धोती-कुर्त्ता केवल मैथिलेटा पहिरैत छथि ? आर केओ नहि पहिरैत छथि ?''

कर्नल साहेब बजलाह, ''पहिरत किएक नहि, बहुत लोक पहिरैत अछि, मुदा धोती-कुर्त्ताक संग ई लाल ठोप आ पाछाँमे लटकल टीक, ई मिथिला छोड़ि कतहु नजरि नहि आयल ।''

हम पुछलियन्हि, ''आर की की देखल अपने मिथिलामे ?''

कर्नल साहेब बजलाह, ''विशेष तँ नहि, मुदा जे देखल से अद्भुत । दरभंगा हवाइ अड्डा तँ शहरसँ बहुत बाहर अछि । हमरा सभक खयबा-पीबाक इन्तिजाम भीतरेमे छल । तेँ बेसी काल बाहर नहि अबैत छलहुँ, मुदा यदा-कदा शहर दिस आबि जाइत छलहुँ । शहर ओतेक व्यवस्थित नहि, सड़क आ यातायात सेहो ओतेक सुदृढ़ नहि । सम्भवत: बाढ़िग्रस्त क्षेत्र होयबाक कारणे । तखन ओहि ठामक लोक बड़ नीक आ ताहूसँ नीक ओकरा सभक भाषा । ओना तँ सभकेँ अपन मातृभाषा अति प्रिय होइत छैक । हमरहु पंजाबी अति प्रिय अछि, मुदा मैथिली सेहो हमरा नीक लागल । हमरा तँ कोनो मैथिल भेटैत छथि तँ हम कहुना क' हुनकहि भाषामे गप्प करैत छी ।

मिथिलाक अतिथि सत्कार सेहो अपूर्व होइत अछि । हमरा सभक टीममे एकटा मधुबनीक इन्जिनियर छलाह । हुनक आग्रह पर एक दिन हुनका गाम गेलहुँ । ओहि ठाम भोजनमे जे विन्यास देखल, से अवर्णनीय अछि आ आग्रह ततेक जे खाइत-खाइत पेट अफरि गेल । अंतत: भोजन छोड़िक' भाग' पड़ल ।''

कर्नल साहेब दूटा कुकूरक स्वामी छथि । नित्य ओकरा पार्कमे ल' क' अबैत छथि । कौखन ओ कुकूरकेँ दौगबैत छथि, तँ कौखन कुकूरे हुनका । ई कार्यक्रम नित्य घंटाक घंटा चलैत अछि ।

एक दिन कर्नल साहेब साँझक चाह पीबाक लेल डेरा पर बजौलनि । हम कतेको बहाना बनौलहुँ, मुदा कर्नल साहेबक आग्रह देखि अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ । हुनक बात-विचार आ गप्प-शप्प देखि हुनक प्रस्ताव मानबाक लेल विवश भेलहुँ ।

ओही दिन साँझमे कर्नल साहेबक डेरा पर गेलहुँ । डेरा बहुत

भव्य, मुदा ओहिमे रहनिहार मात्र कर्नल साहेब दुनू प्राणी आ हुनकर प्रिय दुनू कुकूर । कर्नल साहेब फूल-पत्तीक बड़ शौकीन छलाह । से हुनक फुलबाड़ी देखि क' बुझायल । रंग-बिरंगक फूल । हमरा तँ कनेक कालक लेल बुझायल जे काश्मीरे आबि गेल छी । गेट खटखटबैत देरी दुनू कुकूर एकहि बेर खूब जोरसँ आवाज कयलक । सम्भवत: गृहस्वामीकेँ सूचनार्थ । ओ तँ नित्य हमरा पार्कमे कर्नल साहेबसँ गप्प करैत देखैत छल ।

कर्नल साहेब अयलाह । गेट खोलि हम सब भीतर जा' क' बैसलहुँ । हम सब किछु एम्हर-ओम्हरक गप्प-शप्प करितहि छलहुँ कि श्रीमती कर्नल साहेब एकटा प्लेटमे किछु मधुर, एक गिलास जल आ एक कप चाह ल' क' आबि गेलीह ।

हम प्लेट देखि बजलहुँ, ''ई तँ बहुत बेसी अछि । एहिमे सँ आधा बहार क' दिऔक ।''

कर्नल साहेब बजलाह, ''औजी ! एहि ठामक लोकक लेल तँ आधा ठीक छैक, मुदा अपनेक लेल ई बहुत थोड़ अछि । दरभंगाक लोक तँ खयबेक पाछाँ गरीब भेल अछि । हम एकटा बरियातीमे एहन लोककेँ देखल, जकरा फूकि देबैक तँ उड़ि जायत आ ओ खयला-पीलाक बाद दू सय रसगुल्ला खयलक । हमरा तँ देखि क' आश्चर्य लागि गेल । ओकरा समक्ष तँ ई सामग्री सभ ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन जकाँ होइतैक । कर्नल साहेबक पत्नी सेहो बड़ व्यावहारिक आ मिलनसार लोक, मुदा हुनका मैथिलीमे गप्प करबामे कठिनता होइत छलनि । तेँ ओ हमरा सभक गप्प मात्र सुनैत छलीह । बीचमे टोक-टाक नहि करैत छलीह । ओ जेँ ल' क' अपने भाषामे बजैत छलीह, तेँ ओकर जवाबो कर्नल साहेब स्वयं द' दैत छलथिन ।

चाह पीलाक बाद हम कर्नल साहेबसँ पुछलियन्हि, ''कर्नल साहेब ! अपने कुकूर किएक रखने छी ! ई दिल्लीक कोनो फैशन छैक की ? एहि ठामक लोककेँ विशेष कुकूर-प्रेम देखैत छियनि । एकर की कारण छैक ?

एहि पर तँ खर्चो बहुत होइत होयत । दू गोटेक भोजन तँ ई एकसरे खा जाइत होयत । एहिसँ नीक तँ एकटा नोकर रखितहुँ जे सेवो-सुश्रूषा करैत, टहलो-टिकोरा करैत आ हाट-बजार सेहो करैत ।''

कर्नल साहेब बजलाह, ''दोसराक गप्प तँ नहि, हम अपन विषयमे

कहि सकैत छी । ई जे काज क' सकैत अछि, से कोनो नोकर नहि क' सकैत अछि । कुकूर कखनहु निमकहराम नहि भ' सकैत अछि । ओ कखनो अपना स्वामीकेँ धोखा नहि द' सकैत अछि । मुदा नोकर निनानबे प्रतिशत निमकहरामे भेटत । एकाधटा नीको होइत होयतैक, भ' सकैत छैक ।''

हम कहलियन्हि, ''एकर अनुभव हमरा नहि अछि ।''

कर्नल साहेब बजलाह, ''एकटा नोकर रखने छलहुँ । ओना तँ हमरा नोकरक आवश्यकता नहि छल आ ने हम नोकर रखबाक पक्षमे छलहुँ । मुदा बाल-बच्चा सब बाहर रह' लगलाह आ कनियाँकेँ ठेहुनक दर्द बढ़ि गेलनि । ओ नोकर रखबाक लेल जिद्द ठानि देलनि । हम हुनका बहुत बुझौलियन्हि । नोकरक गुण-अवगुणक विषयमे जनौलियन्हि । मुदा हमर सबटा प्रयास बेकार सिद्ध भेल । त्रिया हठसँ आइ धरि के उबरल अछि ? जनीजातिकेँ ज्ञान देब आ गोबरमे घी ढारब दुनू समान अछि । नोकर करीब पाँच वर्ष धरि नीक जकाँ काज कयलक । ओ मात्र नामक नोकर छल । ओकरा ओहिना रखैत छलहुँ जेना घरक कोनो समांग । जखन आयल छल तँ ओकर ओजन मात्र पचीस किलो छलैक, मुदा साले भरिमे ओ चालीस किलोक भ' गेल । दरमाहा सेहो पाँच हजार टाका दैत छलियैक । काज किछु नहि, मात्र गेट खोलब-लगायब आ फूल सबमे जल देब । ओकर संगति खराब भ' गेल छलैक । ओ जखन डेरासँ बहराइत छल तँ अनेक घंटा धरि बाहरे रहैत छल । अयला पर पुछैत छलियैक तँ जे-से जबाब दैत छल । कहिओ क' कोनो अनठीया लोककेँ ल' क' डेरा पर चलि अबैत छल आ पुछैत छलियैक तँ ओकरा अपन सम्बन्धी बना लैत छल । ओकर हाव-भावसँ हमरा ओकरा ऊपर संदेह भ' गेल । हम सतर्क भ' गेलहुँ आ ओकर गति-विधि पर नजरि राखब शुरू क' देलहुँ ।

ओकरा संगे जे लोक सभ अबैत छल, से सभ एही टोहमे अबैत छल जे कखन ई सब की करैत छथि । एक दिन ओकरा संगे दू गोटे आर आयल । ओ सब आबि क' सीधे सोफा पर बैसि गेल । ओना हमर नोकर कहिओ सोफा पर बैसबाक साहस नहि करैत छल वा हम नहि देखने छलियैक । मुदा ओहि दिन बैसल देखि हमरा मनमे बड़ रंज भेल । हम ओकरा पर बिगड़लियैक तँ ओकर व्यवहार हमरा प्रति बड़ खराब भेलैक ।

हम स्तब्ध रहि गेलहुँ । जेना हमहीँ ओकर नोकर होइयैक आ ओ हमर मालिक । हमर संदेह आर पक्का भ' गेल । हम पत्नीकेँ पुलिसकेँ टेलीफोन लगयबाक लेल कहलियन्हि आ अपने लाइसेंसी बन्दूक ल' क' गेटक ताला बन्द कयलहुँ । ओकर बाद ओकरा सबसँ पूछ-पाछ करब शुरू कयलहुँ । पहिने तँ ओ सब बहुत पैतरा देलक । कखनो किछु बाजए त' कखनो किछु, मुदा जखन हम अपन फौजीवला रंगमे अयलहुँ आ कहलियैक, 'हम फौजमे हजारो लोककेँ मारने छी । हमरा ककरहु मारबामे कनेको दिक्कत नहि बुझाइत अछि ।' तखन ओ सब टुटि गेल आ सही स्थिति बयान कयलक ।

ओकरा सभक योजना छलैक ओहि राति हमरा ओहि ठाम डकैती करबाक । तावत् पुलिस आबि गेलैक । हमर पत्नी गेट खोलि देलथिन्ह । पुलिस ओकरा सभक बयान सुनलाक बाद तीनूकेँ पकड़ि क' ल' गेल । हम प्रात: काल बजार गेलहुँ आ इएह दुनू कुकर कीनि अनलहुँ । एकरा दुनूसँ बहुत लाभ अछि । एकरा दुनूसँ घरक रक्षा सेहो होइत अछि आ एकरा लाड़-दुलारमे समय सेहो नीक जकाँ कटि जाइत अछि । तेँ एकरा फैशन नहि कहिऔक । ई तँ आब एकटा आवश्यकता भ' गेल छैक । एकर आश लेमहिटा पड़त ।''

हम पुछलियन्हि, ''फेर कोनो दोसर नोकर नहि राखल ?''

कर्नल साहेब बजलाह, ''हमर तँ सब दिनक धारणा छल जे नोकर कखनहुँ नहि राखी । ओकरासँ घरक भेद बहराइत छैक जे हमरहु संग भेल । ओ अपना लोक जकाँ पवित्रतासँ कोनो काज नहि करत । जल मँगबै तँ केहनो बासनमे ल' क' द' देत । जँ ओकर नियत खराब भ' जयतैक, जेना कि ओहि नोकरक भेल छलैक, तँ भोजनोमे किछु मिला सकैत अछि । केओ किछु बुझबो नहि करतैक । ई तँ धिया-पुताक बेसी आग्रह छलैक, तेँ रखने छलहुँ । तकर जे परिणाम भेल, से तँ सुनबे कयलहुँ ।''

हम कहलियन्हि, ''हम तँ कतेको ठाम देखल अछि जे जतेक तत्परतासँ नोकर बूढ़-सूढ़क सेवा-सुश्रूषा करैत छनि, ततेक तत्परता सँ घरोक लोक नहि करैत छनि ।''

कर्नल साहेब बजलाह, ''अवश्य देखने होयब । एहिमे दू टा गप्प छैक । पहिल तँ ई जे कतेक बूढ़ कटाह सेहो होइत छथि । हुनकर सेवा करब सभक बुते सम्भव नहि होइत छनि । कतबहु कयलाक बादो लोक

लग घिनायब हुनक स्वभाव बनि जाइत छनि । तेँ घरोक लोक आजिज भ' क' कतिया जाइत छथि । दोसर गप्प, जत' धरि नोकरक सेवाक प्रश्न छैक, तँ ओकर नोकरीये ताही लेल छैक । तेँ ओकरा संगे ई करब मजबूरी छैक । तखन अपने जे कहल सेहो भ' सकैत छैक, मुदा एहन लोक विरले देखबामे अबैत अछि । सबटा नियमक अपवाद होइत छैक की नहि ? तेँ ओकरा नियम नहि ने कहबैक !''

राति विशेष भ' गेलाक कारणे कर्नल साहेबसँ विदा लैत डेरा अयलहुँ आ सोचि रहल छलहुँ, ''आइ मानवक की दशा छैक ? लोक मनुक्खसँ बेसी कुकूर पर भरोस करैत अछि । मनुक्ख परसँ मनुक्खक भरोस उठि गेल छैक । एहि लेल दोषी के ?''

3

किछु दिनक बाद एक दिन अजय बाबू भेटलाह । अजय बाबू मधुबनीक रहनिहार आ भारतीय प्रशासनिक सेवासँ निवृत्त भेल छथि । दिल्लीमे खूब सुन्दर डेरा छन्हि, जाहिमे मात्र दुनू प्राणी रहैत छथि । संतानक नाम पर दूटा बेटी आ एकटा बेटाक अलावा पोता-पोती, नाति-नातिनसँ घर भरल छन्हि । दुनू बेटी दिल्ली हाइकोर्टमे अधिवक्ता छथिन्ह आ बेटा भारतीय प्रशासनिक सेवामे मद्रासमे पदस्थापित छथिन्ह । दुनू जमाय भारतीय पुलिस सेवामे, एकटा दिल्ली आ दोसर पंजाबमे छथिन्ह । बेटी दुनूक डेरा अगले-बगल, बेसी दूर नहि । अजय बाबूक डेरामे एकटा विशाल कुकूर । पहरेदार बुझू वा घरक सदस्ये ।

हम पुछलियन्हि, ''अजय बाबू ! गाम-घरसँ मतलब रखैत छी की नहि ?''

अजय बाबू, ''कोनो खास नहि ।''

हम पुछलियन्हि, ''कतेक दिनसँ गाम नहि गेल छी ?''

अजय बाबू, ''करीब तीस वर्षसँ ।'' हम तँ अवाक् रहि गेलहुँ ।

पुछलियन्हि, ''से किएक ?''

अजय बाबू बजलाह, ''कोनो प्रयोजन नहि बुझायल ।''

हम पुछलियन्हि, ''घर-परिवारक लोक, गाम-समाज, खेत-पथार, की ई सब देखबाक इच्छा नहि होइत अछि ?''

अजय बाबू, ''नहि, एकदम नहि ।''

हम पुछलियन्हि, ''से किएक ? जननी जन्मभूमिश्च... ।''

अजय बाबू बजलाह, ''अपने ठीक कहल अछि । ककरा नहि इच्छा हेतैक जे अपन गाम देखी, अपन समाज देखी, ओहि ठामक लोकक बीचमे बैसी । शहरी परिवेशमे तँ लोक लाचारी रहैत अछि । जे स्वच्छ बसात, स्वच्छंद वातावरण गाममे भेटतैक से शहरमे कत' पाबी ? लोक पढ़ि-लिखि क' नौकरी करैत अछि, तेँ शहरमे वा बाहर रहब ओकर लाचारी छैक, मजबूरी छैक । मुदा सेवानिवृत्तिक बाद गाम छोड़ि क' बाहर रहबामे कोनो ने कोनो कारण अवश्य होयतैक । हमरहु संग किछु ओहने स्थिति भेल अछि । नोकरी शुरू कयलाक बाद छुट्टीमे, खास क' दुर्गापूजा आ फगुआमे, गाम अवश्य जाइत छलहुँ । गामक लोक सेहो हमरासँ बहुत प्रेम करैत छलाह । तकर एकटा कारण आर छलैक । हम जखन कखनहुँ गाम जाइत छलहुँ तँ गामक सब बच्चाकेँ पढ़बाक लेल प्रेरित करैत छलहुँ । ओकरा सबकेँ जे कोनो किताबी दिक्कत होइत छलैक, से बुझा दैत छलियैक । ओहिसँ हमरहु लाभ होइत छल । आन धन बाँटलासँ कम होइत छैक, मुदा विद्या धन एकटा एहन धन थिक, जे बाँटलासँ आर बढ़ैत छैक । एहिसँ हमरो मन लागि जाइत छल आ गामक छात्र सभ हमरासँ अत्यधिक स्नेह करैत छल । हमर इशारा पर ओ सब पैघसँ पैघ काज क' सकैत छल। ओकरा लोकनिक माँ-बाबूजी सेहो हमरा बड़ मानैत छलाह । सब ठाम एहने बुझाइत छल जे अपनहि घरमे छी ।''

''किछु दिनक बाद हम आइ.ए.एस. परीक्षा पास कयलहुँ आ नौकरी भ' गेल । गाम-घरमे बेरोजगारीक समस्या तँ सब ठाम छैक । हमरो गाम ओहिसँ वंचित नहि छल । कतेक लोक धिया-पूताक नोकरीक लेल कहैत छलाह । हम हुनका लोकनिकेँ आश्वासन दैत छलियन्हि, ''जखन हम ओहि जोगरक भ' जायब तँ अवश्य ध्यान देब । एखन तँ हम अपनहि नव छी । एखन हमरा ओ अधिकार नहि भेटल अछि । हमर अपनहि पित्ती

अपना बेटाक लेल हमरा कहलन्हि । हुनकर बेटा मधुकर मैट्रिको पास नहि छलनि । गाममे उद्दण्ड जकाँ करैत छलनि । बुझू तँ ओहो ओकरासँ तबाहे छलाह । नित्य कोनो ने कोनो बखेरा ठाढ़ क' दैत छलनि । हम डी.एम. साहेबकेँ कहि क' अस्थायी रूपेँ ओकरा अपने संदेशवाहकमे राखि लेलियैक । ओ हमर डेराक सब काज कर' लागल । एही बहाने हम ओकरा पदानुकूल अपना काजमे दक्ष बनयबाक प्रयास कर' लगलहुँ । हम तँ ई सोचलहुँ जे हमर भाय कोनो दोसर अफसरक टंडैली करत, से उचित नहि । मुदा इएह सोच हमरा लेल विषक गाछ भ' गेल । हमर कोनो गप्प ओकरा लेल गुप्त नहि रहल । कारण, हम तँ ओकरा अपन समांग बुझैत छलियैक ।

''पाँच वर्ष धरि तँ मधुकर बड़ नीक जकाँ काज कयलक, मुदा ओकर बाद ओ हमर डेराक अदखोइ-बदखोइ यत्र-तत्र करब शुरू क' देलक । हमर पित्ती सेहो हमरा कहलन्हि, ''मधुकरकेँ नोकर बना क' रखने छहक । ओ तोहर भाय नहि छियह की ?'' एहि गप्पसँ हमरा बड़ पैघ आघात लागल । एखन धरि तँ हम ओकरा अपने बुझि क' चलैत छलहुँ, मुदा स्थिति एतेक भयावह भ' जायत, हम सोचिओ नहि सकैत छलहुँ । एम्हर मधुकर सब आरि तोड़ि देलक । सब कार्यालयमे किछु पक्षक लोक रहैत अछि तँ किछु विपक्षक । मधुकर हमरा विरोधी सब लग उठ'-बैस' लागल । ओ सब पेटक गप्प बहार करबाक लेल ओकरा खूब खोआब'-पिआब' लगलैक । हमरा पर जाँच शुरू भ' गेल आ ऊपरसँ बदनामी सेहो । हम सबसँ पहिने डी.एम. साहेबकेँ कहि ओकर बदली करबौलहुँ । ओकर बाद जाँच-कार्यक सामना कयलहुँ । हमरा फिरीशानी तँ बड़ भेल, मुदा हमरा विरुद्ध लगाओल गेल सब आरोप असत्य पाओल गेल । हम बरी भ' गेलहुँ । मुदा हमर पित्ती एतेक ने हमरा प्रताड़ित कयलन्हि, जे हम गाम छोड़बा पर विवश भ' गेलहुँ । गामक लोक सब बहुत कहैत छथि, मुदा हमर मन नहि मानैत अछि । ओ दुनू बाप-बेटा तँ हमरा सड़क पर अनबामे कोनो कसरि बाँकी नहि रखलनि । मुदा भगवतीक कृपा वा हमर स्वच्छ आचरण हमरा बचा लेलक । मधुकरकेँ अपना स्वभावक कारणे कोनो अधिकारीसँ नहि पटैत छलैक । साले-साले ओकर बदली होम' लगलैक । एखन ओ निलम्बित अछि । एकरहु लेल हमर पित्ती हमरहि दोषी मानैत छथि । मधुकर हमरा लग आयल छला । हम हाथ जोड़ि

लेलियैक । ई हमरा बसक बाहर अछि । हमर धिया-पूता सेहो हमरे पर बाज' लगयनि, ''की धयल छैक गाम मे ? छोड़ि दिऔक गाम केँ ।''

गाममे की धयल छैक, से ओ सब की बुझताह ? ओ सब तँ शहरमे जन्म लेलनि आ ओतहि पैघ भेलाह, ओतहि शिक्षा-दीक्षा भेटलन्हि । हम सब तँ गामेक माँटि-पानिमे एतेकटा भेलहुँ । तेँ गामक विषयमे हम सब जे बुझबै, ओ सब कत' सँ बुझताह ? तखन तँ एक समय अबैत छैक जखन लोक अपना मनक दमन करैत अछि आ बाल-बच्चाक गप्प मानबाक लेल बाध्य भ' जाइत अछि । उचितो इएह थिकैक । से जँ नहि करब तँ मनमोटाव होयत, पारिवारिक कलह बढ़त ।''

हम पुछलियन्हि, ''गाम पर खेत-पथार तँ होयत, ओकर उपजा-बाड़ी की होइत अछि ?''

अजय बाबू बजलाह, ''खेत-पथार तँ बेसी नहि अछि । सबटा बटाइ लागल अछि । पहिने तँ हमर पित्ती बटाइदारकेँ बहुत धमकौलथिन । ओकर सोलहो आना उपजा ओएह खाइत छलाह । हम जकरा बटाइदार बनबैत छलहुँ, ओकरा ओ खेत जोत' नहि दैत छलथिन । किछु दिनक बाद हमर एकटा मित्र ओहि ठाम आरक्षी अधीक्षक भ' क' गेलाह । हम हुनका सब स्थितिसँ अवगत करौलियनि । ओ थाना प्रभारीकेँ इशारा क' देलथिन्ह । पित्ती महोदय एकहि डपटानमे ठंढा भ' गेलाह । आब हमर बटाइदार नीक जकाँ खेती-बाड़ी करैत अछि । उपजाक कीमत हमरा बैंकखातामे आबि जाइत अछि । मासमे एक बेर टेलीफोनसँ गामक हाल-चाल सेहो बुझि लैत छी, बस ।''

हम पुछलियन्हि, ''कुल मिला क' गामसँ कोनो सम्पर्क नहि अछि ।''

अजय बाबू बजलाह, ''सम्पर्क कोना नहि अछि ? समय समय पर टेलीफोनसँ गामक हाल-चाल बुझिये लैत छी । गामक जे हमर आप्त लोकसभ छथि, कहिओ काल आबिये जाइत छथि । मात्र हम नहि जाइत छी, मुदा केओ ने केओ तँ अबितहि रहैत छथि । की एकरा सम्पर्क नहि कहल जयतैक ?''

हम पुछलियन्हि, ''से तँ छैक, मुदा जे अपेक्षा ग्रामीणकेँ अहाँसँ छलनि, अपने आश्वासन दैत छलियन्हि जे जखन ओहि जोगरक होयब तँ काज करब । ताहि पर किछु सोचल अछि वा नहि ?''

अजय बाबू हँसैत बजलाह, ''एकहिटामे तँ मुँह पाकि गेल । सौंसे

दुनियाँ सूझ' लागल । कदाचित आर कयने की होइत, कहि नहि सकैत छी । तावत अजय बाबूक पत्नी आबि गेलथिन । ओ दुनू गोटे किछु घरेलू गप्पमे लागि गेलाह आ हम विदा भ' गेलहुँ ।

4

पार्कमे एक दिन खन्ना साहेबसँ भेट भेल । खन्ना साहेब सेहो कुकूरक बड़ शौकीन । एकटा बड़ सुन्नर कुकूर ल' क' नित्य पार्क अबैत छलाह । कुकूर तँ छोटे-छीन छलनि, ठीक खढ़िया सनक । ओहने उज्जर दप-दप आ छोट-छीन हाथ-पयर, मुदा बड़ फुर्तिगर । आवश्यक भेला पर पाँच-छौ फीट धरि कूदि जाइत छल । ओकरा संगे खन्ना साहेब बड़ी काल धरि पार्कमे दौड़ैत रहैत छलाह ।

खन्ना साहेब पेशासँ ओकील छलाह आ भाषा तँ तेहन बुझाइत छल, जकर वर्णन नहि । ओ प्राय: भारतक सब प्रान्तक भाषा बाजि लैत छलाह । गप्पक क्रममे विदित भेल जे खन्ना साहेब तेरहटा भाषा जनैत छथि, जाहिमे खूब नीक जकाँ बाजि सकैत छथि । ओकर अतिरिक्त ओ मैथिली सेहो बजैत छलाह, मुदा खूब स्पष्ट नहि ।

खन्ना साहेबक एकटा मुंशी छलथिन्ह । ओ मिथिलेक रहथि । ओकरहि संग खन्ना साहेब किछु-किछु मैथिली बाजब सिखलनि, मुदा बुझबामे कोनो दिक्कत नहि होइत छलनि । मुंशीक लागिसँ अधिकांश मोवक्किल सेहो मिथिलेक छलथिन्ह ।

खन्ना साहेब दिल्ली सुप्रीम कोर्टमे ओकालति करैत छलाह । विशेष लोकसँ आ विभिन्न भाषा-भाषीसँ सम्पर्कक कारणे एतेक भाषायी ज्ञान छलन्हि ।

खन्ना साहेब मात्र दू प्राणी छथि । हुनका बाल-बच्चा नहि छन्हि । मात्र ड्राइवर आ ओकर परिवार डेरा पर रहैत छन्हि । खूब सुन्नर बंगला आ ओकरा चारू कात फुलबाड़ी तँ अद्‌भुत लगैत छल ! मुदा पूरा बंगला एकटा बच्चा बिनु सून लागि रहल छलनि । हम खन्ना साहेबकेँ पुछलियन्हि, ''खन्ना साहेब ! अहाँक बाद एहि बंगलाक उत्तराधिकारी के होयत ? अहाँक ओहि

ठाम तँ गोद लेबाक प्रचलन छैक । किएक ने ककरो गोद ल' लैत छिऐ ?''

खन्ना साहेबक मन उदास भ' गेलनि । कनेक काल पूर्व जे हुनका मुँह पर रौनक छलनि, से विलुप्त भ' गेलनि । ओ बजलाह, ''सब किछु अपनहि सोचलासँ नहि होइत छैक । ई हमरहु सोच छल जे हम जे करब, सैह होयतैक, मुदा ओ हमर भ्रम छल । जे भगवानक इच्छा होइत छन्हि, सैह होइत छैक । कमसँ कम हम आ हमर पत्नी एहिसँ पूर्ण रूपेँ सहमत छी । हम तँ ई गप्प कतहु बजिते नहि छलहुँ आ संकल्प कयने छलहुँ जे नहि बाजब, मुदा अहाँ जखन एकर चर्चा क' देलहुँ, तखन तँ किछु ने किछु बाजहि पड़त । आइसँ लगभग बीस वर्ष पूर्वक गप्प अछि । हम दू भाइ छलहुँ । दुनूमे बड़ प्रेम छल । कोनो काज बिना हमरासँ पुछने हमर भाय वा बिना भायसँ पुछने हम नहि करैत छलहुँ । हमरा भायकेँ तीनटा बेटा छलन्हि । बड़का भातिज सुधीर जखन पाँच वर्षक छल, हम ओकरा अपनहि लग दिल्ली ल' अयलहुँ । एहि ठाम ओ खूब नीक जकाँ पढ़ैत छल । आइ.ए. पास कयलक । खूब नीक नम्बर आयल छलैक । ओही आधार पर दिल्ली विश्वविद्यालयमे बी.ए.मे नामांकन भ' गेलैक । अपन अभीष्ट ओकरा एल.एल.बी. करायब छल, मुदा होनी किछु आर छलैक ।''

एक दिन सुधीर एकटा संगीक संग डेरा पर आयल । हम तँ कचहरी गेल छलहुँ । पत्नी डेरा पर छलीह । हुनका ओकर व्यवहार गड़बड़ बुझयलनि । संध्याकाल जखन हम डेरा अयलहुँ तँ पत्नी बजलीह, ''सुधीरक संगे ओकर एकटा संगी आयल छल । हमरा ओकर चालि-ढालि नीक नहि बुझायल । हम तँ ओकरा नहि किछु कहलियैक, मुदा अहाँ ओकरासँ पुछिऔक ।'' हम कहलियैन्हि, ''छोड़ू ने, एहिना कालेजमे सब रंगक लोक रहैत छैक ।''

पत्नी बजलीह, ''एक बेर सुधीरकेँ पुछि लिऔक । एहन नहि हो जे काल्हि जखन पानि माथक ऊपरसँ बहए, तखन हाथ मलबाक सिवा आर किछु नहि बाँचय ।'' बात हमरो नीक लागल । हम दोसर दिन सुधीरकेँ पुछलियैक तँ ओकर उत्तर सुनि लिअ'।

''हम अहाँक अपन बेटा नहि छी तेँ अहाँ सब हमरा संग एना क' रहल छी । हमर संगी सब कतेक ठाठ-बाटसँ रहैत अछि । एकटा हमही कंजर जकाँ रहैत छी । हमर संगी सब नित्य सय-पचास खर्च करैत अछि ।

मुदा हमरा संगमे फुटल कौड़िओ नहि रहैत अछि, एहि लेल जे हमर बाप कमाइत नहि छथि। ओ गाममे रहि खेती-बाड़ी करैत छथि। अहाँकेँ जँ हमरा नहि रखबाक हो तँ टिकट कटा क' गाम विदा क' दिअ'। मुदा गलत-सलत गप्प नहि बाजू। हम आब बच्चा नहि छी। अपन नीक-बेजाय सोचबाक शक्ति हमरो अछि।'' एक साँसमे सुधीर बाजि गेल।

हम तँ अवाके रहि गेलहुँ। हम सोचिओ नहि सकैत छलहुँ जे सुधीर हमरा संगे एहि तरहें बाजत। एखन धरि ओकर बापो हमरा संग बहसबाजी नहि कयने छलाह। हम की सोचने छलहुँ आ की भ' गेल। हम तँ सोचने छलहुँ जे सुधीरकेँ अपन उत्तराधिकारी बनायब। दुनू भायमे विचार-विमर्श भ' चुकल छल। ओहो एकर विरोध नहि कयलक, मुदा आइ सुधीरक व्यवहार देखि क्षुब्ध रहि गेलहुँ। ई तँ संयोग बुझू जे एखन धरि कानूनी प्रक्रिया नहि भेल छल। नहि तँ पता नहि, आइ की होइत? हम दुनू प्राणी चुप रहि गेलहुँ। कतहु एकर चर्चो नहि कयल। सात-आठ दिनक बाद भायक पत्र भेटल:

पूज्यवर भैया,

सादर प्रणाम!

कुशलोपरान्त कुशलाभिलाषी छी। अपनेक व्यवहार जे सुधीरक प्रति भेल, ओहिसँ अत्यधिक मर्माहत छी। हम तँ बुझैत छलहुँ जे अहाँ ओकरा अपन बालक बुझि, ओकर भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षाक कार्य क' रहल छी। मुदा सुधीर जे किछु कहलक, से नीक नहि लागल। अहाँसँ एहन अपेक्षा नहि छल। हम तँ इएह चाहब जे सुधीरकेँ गाम पठा दी, सएह नीक रहत। तखन अपनेक जेहन इच्छा।

ई चिट्ठी देखि तँ हम आर विस्मित भ' गेलहुँ। ठीके लोक कहैत अछि, जाहि गाछक बखलोइया रहैत अछि, ओकरहिमे सटैत अछि। हमर सहोदरो हमरा पर विश्वास नहि क' अपना बेटा पर विश्वास कयलनि। हम सब दुनू गोटे सुधीरसँ गप्प-शप्प करब छोड़ि देलहुँ। ओ डेरामे मात्र खयबाक लेल आ राति बारह बजे सुतबाक लेल अबैत छल। ओना तँ ओ बेसी काल डेरामे रहितहि नहि छल, मुदा जतबे काल रहैत छल, पढ़बा-लिखबासँ कोनो सरोकार नहि। हम आर साकांक्ष भ' गेलहुँ, मुदा सुधीरकेँ किछु कहबाक साहस हमरा नहि भेल। एक दिन एकटा मोवक्किलसँ फीस मँगलियैक

तँ ओ बाजल, ''हम तँ फीस द' देने छी।''

हम पुछलियैक, ''ककरा देने छलियैक?''

ओ सुधीरक नाम कहलक। हमरा तँ माथा चकरा गेल। काटू तँ खून नहि। इहो नहि कहि सकैत छलियैक जे किएक देलियैक। एहिसँ पता नहि लोक की सोचैत। तखन पता चलल जे कएटा मोवक्किलसँ सुधीर टाका ऐंठि चुकल छल। हम सोचमे पड़ि गेलहुँ। आखिर ओ ई टाका ल' क' की कयलक? हम पत्नीकेँ सेहो पुछलियैन्हि, ''की सुधीर अहाँकेँ किछु टाका देने छलाह?''

ओहो अचंम्भित भ' गेलीह। हम गुन-धुनमे पड़ि गेलहुँ, तावत टेलीफोनक घंटी बाजि उठल। टेलीफोन उठौलहुँ, ''हेलौ....''

ओम्हरसँ आवाज आयल, ''हम कोतवाली इंचार्ज बाजि रहल छी। अपने खन्ना साहेब बाजि रहल छी?''

हम, ''जी...''

इंचार्ज, ''सुधीर अपनेक भातिज थिकाह?''

हम, ''कोन सुधीर...?''

इंचार्ज, ''सुधीर खन्ना, जे डी.यू.मे पढ़ैत छथि।''

हम, ''जी...जी..., हमरे भातिज थीक, से की?''

इंचार्ज, ''अपने जल्दी कोतवाली आबि जाउ। सब किछु स्पष्ट भ' जायत।''

राति एक बाजि रहल छलैक। हम ड्राइवरकेँ उठौलियैक आ कहलियैक, ''गाड़ी बहार करू, बाहर जयबाक अछि।''

ड्राइवर तँ हड़बड़ा गेल। एहन कोन गप्प भेलैक जे एक बजे रातिमे मालिक बाहर जयताह। कदाचित् ककरहु मन तँ ने खराब भ' गेलैक? ओ एक संगे कतेको प्रश्न कयलक, मुदा हम ओकरा इशारासँ चुप करयलहुँ। ''चलू कनेक कोतवाली जयबाक अछि।''

हम सभ कोतवाली पहुँचलहुँ। इंचार्ज सुधीरकेँ बजौलन्हि आ पुछलथिन्ह ''इएह अहाँक भातिज छथि?''

हम कहलियन्हि, ''जी...।''

''ई की सब करैत छथि, अहाँकेँ एकर अंदाज अछि?'', इंचार्ज

बजलाह ।

हम अकचकाइत पुछलियन्हि, ''हम अपनेक प्रश्नक आशय नहि बुझल ।''

इंचार्ज बजलाह, ''ई राति-राति भरि जूआ खेलाइत छथि, दारू पिबैत छथि । ओहि संग आरो बहुत किछु करैत छथि । छापामारीमे पकड़ायल छथि । हम तँ हिनका चलान करैत छलियनि, मुदा जखन पत्राचारक पता लिखैत छलहुँ तँ अहाँक नाम आयल । तखन हम विवश भ' गेलहुँ आ अहाँकेँ सूचित करब उचित बुझल ।''

हम इंचार्जकेँ आश्वासन देलियन्हि जे आब एहन काज नहि करत । हम ओकरा ल' क' डेरा अयलहुँ । हमरासँ नजरि मिलयबाक साहस तँ ओकरा नहिएँ भेलैक । तैओ हम प्रात:काल टिकट कटबा क' ओकरा गाम पठबा देलियैक ।

हम खन्ना साहेबकेँ पुछलियन्हि, ''अपनेक बाद एहि सम्पत्तिक की होयत ? एकर उत्तराधिकारी के होयत ?''

खन्ना साहेब बजलाह, ''जहाँ धरि एहि सम्पत्तिक उत्तराधिकारीक प्रश्न अछि, एहि लेल एकटा ट्रस्ट बना देल गेलैक अछि । एहिमे हम स्वयं, हमर ड्राइवर आ तीनटा हमर अन्य मित्र सभ छथि, जाहिमे दू टा प्रोफेसर आ एकटा ओकील छथि । वर्षमे दू बेर एकर बैसार होइत छैक । गरीब आ मेधावी छात्रकेँ उच्च शिक्षा लेल एहिसँ मदति कयल जाइत छैक । कोनो सदस्यक स्थान रिक्त भेला पर शेष चारि गोटे मिलि क' ओकर चुनाव नियमानुसार करताह । जेना कि एकटा हमरा ड्राइवरक परिवारक लोक, दूटा वकील आ दूटा विद्वान, जे कमसँ कम प्रोफेसर होथि । हमरा सभक विनोदक लेल ई कुकूर काफी अछि ।''

हम कहलियन्हि, ''भायक संग केहन सम्बन्ध अछि ? गप्प-शप्प होइत अछि वा नहि ?''

खन्ना साहेब बजलाह, ''गप्प शप्प तँ होइत अछि, मुदा ओहन नहि जेहन पूर्वमे होइत छल । हृदय जखन टुटि जाइत छैक तँ ओकरा पुनः जोड़ब सम्भव नहि होइत छैक । किछु दिन पूर्व एहि ठाम आयल छलाह । कहैत छलाह सुधीरक विषयमे हम अहाँ पर संदेह क' बड़ अनुचित कयल ।''

बहुत पश्चात्ताप कयलनि । गाम चलबाक सेहो आग्रह कयलनि । मुदा हमर घाओ तखन धरि सूखल नहि छल । हम कहलियन्हि, ''अहाँ केँ जखन दिल्ली अयबाक हो आबि सकैत छी, जतेक दिन रहबाक हो रहि सकैत छी, मुदा हम गाम नहि जायब । गामक जथा जे किछु अछि, सब अहाँक थिक । हमरा अहाँक बीच जँ राखि सकी तँ मात्र एकटा परिचितक सम्बन्ध रहत, एहिसँ बेसी किछु नहि ।''

हम कहलियन्हि, ''खन्ना साहेब ! अपनेकेँ कोन मुँहेँ धन्यवाद करी से नहि बुझाइत अछि । अपने तँ बड़ पैघ काज क' रहल छी । चाहे मजबूरिएमे किएक ने करी । आइ-कालिह गरीबक उपकार के करैत अछि ? सब तँ ओकरा लुटबेक काज क' रहल अछि । चाहे ओ देशक नेता होथि वा अधिकारी वा सामाजिक कार्यकर्त्ता ।''

5

एक दिन सुधाकरजी भेटि गेलाह । सुधाकरजी अवकाशप्राप्त शिक्षक छथि । मधुबनीक रहनिहार छथि, मुदा दिल्लीमे घर बना क' रहि रहल छथि । मकानमे दूटा किरायादार छन्हि, जे ऊपरक तल्ला पर रहैत छन्हि । अपने नीचाँमे रहैत छथि । कुकूरक शौकीन सेहो छथि । हमरा तँ बुझाइत अछि जे कुकूर दिल्लीक संस्कृति भ' गेल अछि । एखन धरि जतेक लोककेँ देखलहुँ अछि, सब कुकूर सम्राट् । बिना कुकूरक केओ नहि भेटलाह । विरले बिना कुकूरक केओ होथि, तँ से अलग गप्प भेल । सुधाकरजी चारि बालकक पिता छथि । कन्याक अभाव छलन्हि । सुधाकरजीकेँ एकटा कन्याक बड़ इच्छा छलन्हि । एहि प्रत्याशामे चारि पुत्र भ' गेलन्हि । जखन कि ओ दूटा पुत्र आ एकटा कन्या चाहैत छलाह । सब बालककेँ प्रचुर शिक्षा-दीक्षा देलन्हि ।

दूटा बालक इन्जिनियर आ दूटा डाक्टर छथिन्ह । सब दोसर-दोसर शहरमे छथि । बड़का बालक पहिने दिल्लीयेमे काज करैत छलथिन्ह । बादमे हुनकर बदली बंगलोर भ' गेलन्हि । ओ सपरिवार तँ बंगलोर चलि

गेलाह, मुदा सुधाकरजी दुनू प्राणीकेँ एही ठाम छोड़ि गेलाह वा ई दुनू प्राणी एतहि रहब उचित बुझलनि ।

दू प्राणीक अतिरिक्त एकटा कुकूर सेहो छन्हि जे डेराक शोभा बढ़ा रहल छन्हि । सुधाकरजीक निर्वाह पेंशन आ पुत्रक द्वारा देल गेल धनराशि पर चलैत छन्हि ।

हम पुछलियन्हि, ''सुधाकर बाबू ! अपने बेटा सभ लग किएक नहि रहैत छी ?''

''ककरहु स्वतंत्रतामे बाधा करब वा परतंत्र भ' क' रहब उचित नहि बुझना जाइत अछि ।'' सुधाकरजीक उत्तर भेटल ।

हम कहलियन्हि, ''हम किछु बुझलहुँ नहि । कनेक फरिछा क' कहू ।''

ओ बजलाह, ''सभक जीवन-शैली आ जीवाक ढंग अलग-अलग होइत छैक, खास क' एहि वर्त्तमान युगमे । हम सब पुरना जमानाक लोक छी । हमर जीवाक ढंग अलग अछि आ बालक सब नव युग केर लोक छथि । हुनका सभक जीवन-शैली अलग छन्हि । ओहिमे टोक-टाक करब स्वतंत्रता पर खतरा हेतैक की नहि ? आ हम सब आब जँ हुनका लोकनिक मोताबिक चली तँ ई परतंत्र रहब भेल की नहि ? इएह तँ कहल अछि ।''

हम कहलियन्हि, ''अहाँक सोचक सम्मान तँ करहिटा पड़त । एहन सोचनिहार बहुत कम्मे लोक छथि । बालक सभक ओहिठाम कहिओ गेल छलहुँ वा नहि ?''

सुधाकर जी बजलाह, ''हँ....हँ... गेल छलहुँ आ बरोबरि जाइत-अबैत छी । मुदा स्थायी रूपसँ रहब हम पसिन्न नहि करैत छी । किछु दिन पूर्व गेल छलहुँ, बालकेक बहुत आग्रह पर । चारि मास रह' पड़ल । हम तँ अकच्छ भ' गेलहुँ । सब वस्तुक सुविधा छलैक । कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक । मुदा समय केर कोनो पाबन्दी नहि छलैक । आठ बजेसँ पहिने केओ सूति क' नहि उठत आ दस बजे रातिसँ पूर्व केओ घर नहि घुसत । गप्पो-शप्प करब तँ ककरासँ ?''

मनुष्य सामाजिक प्राणी थिक । बिना समाजक रहब कतेक मुश्किल होइत छैक, से तँ समय अयला पर बुझायत । हम तँ कनेक

बाहर-भीतर घुमियो लैत छलहुँ, मुदा कनियाँ घरमे रहैत-रहैत उबिया जाइत छलीह । बजैत तँ नहि किछु छलीह, मुदा भीतरे-भीतर भम्होरैत रहैत छलीह । एहि ठाम छी तँ कतेको परिचित लोक अबैत-जाइत रहैत छथि । हमहूँ सब कतौ ने कतौ जाइते-अबैत रहैत छी । दिन कटि जाइत अछि, मुदा ओहि ठाम कत' जायब ? कदाचित जँ मुँहसँ किछु बजा गेल, तँ पोता-पोती बाजत ''जेनेरेशन गैप... ।'' हमरा हँसी लगैत अछि एखनुक रहन-सहनकेँ देखिक' । एक समय छलैक जखन लोक बाल-बच्चाकेँ अपना बगलमे बैसबैत छल । ओकरा रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत छलैक । ओकरा नीक-नीक शिक्षा द' क' ओकर चरित्र-निर्माण करैत छलैक । ओकरा सुसंस्कृत आ संस्कारी बनबैत छलैक । मुदा आजुक नेनाकेँ की भ' गेल छैक ? ओ बूढ़-पुरान लग बैसहि नहि चाहैत अछि । ओकरा स्कूलक बाद खेल-धूप आ टी.वी.सँ मतलब रहैत छैक । ओना तँ टी.भी. भेलासँ बहुत किछु सुलभ भ' गेलैक अछि । लोक रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथ जकर नामो सुनने होयत की नहि, तकर कथा विस्तृत रूपेँ टी.भी. पर दृश्यावलोकन करैत अछि । मुदा टी.भी.मे किछु खराबिओ छैक । ओहिमे कौखन क' तेहन-तेहन ने वीभत्स दृश्य देखाओल जाइत छैक जकर कुप्रभावसँ आजुक पीढ़ीकेँ बचायब कठिनाह बुझाइत अछि । ओकर प्रभाव आजुक पीढ़ी पर आसानीसँ होइत छैक । सब ओएह बन' चाहैत अछि । सब ओकरहि अनुसरण कर' चाहैत अछि । कतेको एहन दृश्य अछि, जकरा देखने हमरा सभकेँ लाज भ' जाइत अछि, मुदा बच्चा सभ ओकरा खूब चाओसँ आ गौरसँ देखैत अछि । हमरा एखनहु मन अछि, साँझ पड़लाक बाद बाबा कहैत छलाह, 'सब केओ हाथ-पयर धो क' आ खराम पहिरि क' दलान पर आबि क' बैसू ।' आ बैसा क' पढ़बैत छलाह 'सा ते भवतु..... । बालोहं जगदानंद, न मे बाला सरस्वती, आदि ।' अपना संस्कृतिक तँ गप्पे किछु आर अछि । हँ... टी.भी. मे एकटा आर खराबी छैक । ओ लोककेँ असामाजिक बना रहल छैक । किएक तँ कतेको लोककेँ देखैत छियन्हि, टी.भी. लग बैसल रहताह, मुदा कोनो काज रहत तँ कहताह, पलखति नहि अछि । ई हमर सोच अछि । भ' सकैत अछि, एहन गप्प नहिजो होमए ।''

हम पुछलियन्हि, ''सुधाकर बाबू ! गाम अबैत-जाइत छी की नहि ?''

सुधाकरजी बजलाह, ''नहि, गाम गेना करीब बीस-बाइस वर्ष भ' गेल अछि ।''

हम पुछलियन्हि, ''से किएक ?''

सुधाकरजी बजलाह, ''बाहर रहनिहारकेँ गामक लोक लुटिहारा बुझैत छैक । ओकरा सभकेँ होइत छैक, ई सब बाहर रहि क' टाका लुटैत छथि ।''

''नहि...नहि... एहन गप्प नहि छैक । हमहू तँ सेवानिवृत्त भ' क' गाममे रहैत छी । हमरा तँ आइ धरि एहन नहि बुझना गेल । तखन गामक लोककेँ बाहर नोकरी कयनिहारसँ किछु अपेक्षा अवश्य रहैत छन्हि । ओकर ओ पूर्ति चाहैत छथि । ओकर तरीका अलग-अलग भ' सकैत छैक, जे सभक बुझनामे नहि अबैत छैक ।'' हम उत्तर देलियन्हि ।

सुधाकरजी बजलाह, ''अहाँक गामक लोक अपवाद भ' सकैत छथि । अपेक्षा करब कोनो अधलाह गप्प नहि भेलैक । अपेक्षा अवश्य करबाक चाही, मुदा अपेक्षाक पूर्तिक लेल ककरहु चमरी उधेरि दी, ई कोन ठामक न्याय अछि ? हमरा गामक लोकक बस चलैक तँ चमरी उतारि लेत । अहाँ एकरा मानी वा नहि मानी, मुदा हम तँ एकर भुक्तभोगी छी ।''

हम पुछलियन्हि, ''से कोना ? एहन कोन घटना अहाँक संग भेल ?''

सुधाकर जी बजलाह, ''घटना नहि, एकरा दुर्घटना कहिऔक । आइसँ करीब बाइस वर्ष पूर्व हमर माँ आ बाबूजी गामहिमे रहैत छलाह । हमर कनियाँ गामहिमे रहि हुनका सभक सेवा-सुश्रूषा करैत छलथिन । हम पटनामे रहि चारू बेटाकेँ पढ़ा-लिखा रहल छलहुँ । नौकरी करैत, भानस-भात करैत आ समय निकालि बच्चा सभकेँ पढ़बैत सेहो छलहुँ । अपने सोचि सकैत छी, एकटा अल्प वेतनभोगी चारि-चारिटा बच्चाकेँ पढ़ा क' कतेक टाका जमा क' क' राखि सकैत अछि ! ताहू पर जँ माय-बाप दुखिताह होथि तखन ! मुदा हम हारि नहि मानलहुँ आ दृढ़तापूर्वक अपन काज करैत रहलहुँ ।

बीचमे कतेको तरहक उतार-चढ़ाओ आयल । कतेक तरहक प्रलोभन भेटल, मुदा हम निष्ठापूर्वक अपन कर्त्तव्यक निर्वाह करैत रहलहुँ । हमरा देखि क' लोक सभकेँ हमर स्थितिक सही जानकारी नहि होइत

छलैक । हम स्वयं आ हमर बच्चा एकटा कपड़ा पहिरि क' दिन काटि देलहुँ, मुदा ककरहु सोझाँ हाथ नहि पसारल । ड्यूटीसँ अयलाक बाद अंगा खीचैत छलहुँ आ ओकरहि राति भरिमे सुखा क' प्रातःकाल पहिरि क' आफिस जाइत छलहुँ । अचानक गामसँ खबरि आयल, बाबूजी नहि रहलाह । मनमे बड़ दुःख भेल । बाबूजीसँ अगाध स्नेह पबैत छलहुँ, से कत'सँ पायब ? अन्तिम क्षणमे बाबूजीक प्रत्यक्ष सेवा नहि क' पओलहुँ । मुदा ई तँ नियति केर नियम अछि । एहिमे केओ कइओ की सकैत अछि ? ई तँ अवश्यंभावी अछि । ई परिणति तँ एक ने एक दिन सभक संग होयत । गाम गेलहुँ, ओहि ठाम बाबूजीक संस्कार भेलनि । आब श्राद्धक तैयारी होमए लागल । स्थितिक अनुसार हमरा लेल एगारहो जन भारी छल । दरमाहा मात्र बीस हजार टाका भेटैत छल । चारि-चारिटा विद्यार्थीक कालेजक खर्च, डेराक खर्च आ डेराक भाड़ा, ऊपरसँ बाबूजीक दबाइ-दारू । गामो पर खेत-पथार बेसी नहि छल, तेँ किछु ने किछु सब मासमे गामहु पर पठायब आवश्यके छल । मुदा से बुझनिहार के ?

ठीक चारि दिनक बाद बैसार बजाओल गेल । परम्परागत रूपेँ गामक गण्यमान्य लोक बजाओल गेलाह । विचार-विमर्श शुरू भेल । केओ किछु बाजथि, तँ केओ किछु । हमरा पुछल गेल । हम कहलियन्हि, ''हमर स्थिति ठीक नहि अछि । अपने सबसँ कोनो गप्प चोरायल नहि अछि । तखन बाबूजीक श्राद्ध फेर तँ नहि होयतनि, तेँ कमसँ कममे एकरा संपादित करबाक प्रयास कयल जाओ ।''

सब केओ कनफुसकी कर'मे लागि गेलाह । उचित बाबू जे ओहि समयमे नवका धनिक भेल छलाह, से बजलाह, ''ई कोना होयतैक ? जँ सुधाकरजी एना करताह, तँ दोसर गोटे की करत ? हम मानैत छी जे एखन भ' सकैत अछि, हिनकर हाथ खाली होइन्हि, हाथ पर टाका नहि होइन्हि, मुदा एकरहि लेल ने समाज अछि । समाज बड़ पैघ होइत अछि । इएह तँ हमरा समाजक खूबी अछि । ककरहु काज बेथूत नहि होमए दैत अछि । केओ गोटे अपन श्राद्धक वा हुनक धिया-पूता हुनक श्राद्धक इन्तजाम क' क' नहि रखैत छथि । मरनी-हरनी कोनो विचारि क' नहि होइत छैक । ई तँ अकस्मात् होइत अछि । तखन तँ समाजे ने मिलि क' ओकर निष्पादन करैत अछि !''

हमरा मने अछि उचितजीक बाबाक श्राद्ध । हम हाइ स्कूलक विद्यार्थी छलहुँ । मात्र कठियारी लोकनि निर्मंत्रित छलाह । एकादशाह तँ कहुना भेल । द्वादशाह दिन दुनू दियादिनीमे से अठ्ठा-बज्जर भेल जे पंच लोकनिकेँ भोजनो पर आफत भ' गेलनि । से आइ दोसरकेँ टिटकारि रहल छथि आ सामाजिकताक गप्प क' रहल छथि । ई सब समाजक नाम पर कलंक छथि । ई सब ककरहु विवशताक नाजायज फायदा उठबैत छथि । एहि नाम पर लाखक सम्पत्ति हजारमे कीनैत छथि आ लोकक सोझाँ मुँहपुरुष बनैत छथि । मुदा अपन टेटर के देखैत अछि ? तखन तँ हमरा गराँमे एखन उतरी अछि, तेँ चुप्पे रहब उचित बुझना गेल । समाजोक सब केओ हुनकहि हँ मे हँ मिला देलथिन । हमर विवशता पर केओ विचार नहि कयलनि । उगैत सूर्यकेँ सब केओ... । दू लाखक फेहिरिस्त बनि गेल ।

हम पुछलियन्हि, ''एकर इन्तिजाम कोना होयतैक ?''

एक गोटे बजलाह, ''अपने उचित बाबूसँ गप्प क' लेब । ओ सब इन्तजाम क' देताह । ई तँ समाजक कार्य ने थिकैक ! एहि लेल अपने चिंता किएक करैत छी ? अपने चुपचाप बैसल रहू आ क्रिया-कर्मक मादे जे किछु काज होइ से करैत रहू ।''

संध्याकाल हमर एकटा पितिऔत सागर भाइ अयलाह आ पुछलनि, ''उचित बाबूसँ गप्प-शप्प भेल ?''

हम कहलियन्हि, ''नहि, हमरा अलगसँ तऽ कोनो गप्प-शप्प नहि भेल अछि । जे किछु भेल से तँ सभक समक्षे भेल ।''

सागर भाइ बजलाह, ''हुनका बजा क' पुछबैन्हि ने, कतेक टाका लेबैक, कोना लेबैक आ कहिआ धरि आपस करबैन्हि ।''

''हमरा तँ एखन धियो-पूता नहि अयलाह अछि । एकसरहि छी, बजाब' लेल के जयतनि ?'' हम कहलियन्हि ।

सागर भाइ बजलाह, ''हमहीं जाइत छी । अहाँ थोड़े कतहु जायब !''

ओ उचित बाबूकेँ बजयबाक लेल चलि गेलाह । उचित बाबू नव पर धनिक भेलाह अछि । सुनैत छियैक जे एक दिन महींस ल' क' पौशर चरबैत छलाह । झोंझमे एकटा बोड़ा देखलनि । ओहि बोड़ाकेँ ठेंगासँ

ठकठकौलन्हि । बुझयलनि जे किछु भारी वस्तु ओहिमे छैक । ओ बोड़ाकेँ माँथ पर उठौलनि । महिसिक सोहरि हाथमे ल' घर अयलाह । बोड़ाकेँ एकटा कोठीमे राखि क' बन्न क' देलनि । ओ चोरीक माल छल । किछु चोर चोरी क' क' ओहि बाटे जा रहल छल । भोर भ' गेलाक कारणे पकड़ा जयबाक डरसँ ओ सब बोड़ाकेँ झोंझमे राखि देलक आ चलि गेल । पुनः दोसर राति जखन चोर ओहि सामानक तक्का-हेरी कयलक तँ सामान निपत्ता छलैक । ओ सब गुप्त रूपेँ सौंसे गाममे पता लगायब शुरू कयलक । के भोरे उठैत अछि ? के महींस ल' क' पौशर चराब' जाइत अछि ? आदि... आदि... । गाममे एकर खूब चर्चा छलैक, मुदा उचित बाबू एना दम सधने रहलाह, जेना माँटि तरक अल्हुआ । छौ मास बीति गेल । जखन गप्प ठंढा भ' गेलैक, तखन उचित ओहि बोड़ाकेँ खोललनि । ओहिमे सोना-चानीक गहना आ किछु नगद सेहो छलैक । उचितकेँ आश्चर्यक ठेकान नहि रहलनि । ओ तँ सपनहुमे नहि सोचने छलाह । धीरे-धीरे गाममे दस बीघा खेत बनौलनि आ गामक लोककेँ जकरा जरूरति होइत छलैक, पैंच-उधार, लहना आदि देमए लगलाह । ओ लोक केँ कहैत छलथिन जे बेटा मुम्बइमे चिक्कन टाका अर्जित करैत अछि । मुदा बेटा ओहि ठाम टैक्सी चलबैत छन्हि आ एकटा टैक्सी चलौनिहार कतेक जमा क' सकैत अछि सेहो तँ सर्वविदिते अछि । तखन जकरा भगवान जेना देलथिन्ह, ओहिसँ हमरा की लेना-देना ? हम सोचिये रहल छलहुँ जे कोना की होयतैक, तावत सागर भाइ केर संग उचित बाबू अयलाह । कनेक काल एम्हर-ओम्हर केर गप्प भेल । पुनः उचित बाबू पुछलन्हि, ''कतेक टाका लेबैक ?''

हम कहलियन्हि, ''दू लाख ।''

उचित बाबू, ''कोना लेबैक ?''

हम अकचकाइत बजलहुँ, ''मतलब ?''

उचित बाबू, ''मतलब ई जे पैंच लेब तँ मास-दू मासक लेल भेटि सकैत अछि । सूदि पर लेब तँ पाँच रुपैये ।''

हम कहलियन्हि, ''पैंच तँ नहि लेब, एहि लेल जे मास-दू मासमे नहि द' सकैत छी । सूदि पर एहि लेल नहि, जे प्रतिमास दस हजार टाका

सूदि लागत । तखन हम आर काज कोना करब ? पटनामे रहबाक अछि, आ बच्चा सबकेँ पढ़यबाक अछि ।'' पुनः पुछलियन्हि, ''जमीन पर कोना देब ?''

उचित बाबू बजलाह, ''अहाँक कुल जमीनक भरना दू लाख आ रजिस्ट्री चारि लाख । भरना मियादी रहत, सात वर्षक लेल । सात वर्षमे रकम अदायगी नहि भेला पर जमीन स्वतः हमर भ' जायत ।''

हम सोचलहुँ जे भरने ठीक रहत । काल्हि जँ टाका भ' जायत तँ आबि क' छोड़ा लेब, मुदा रजिस्ट्री कयलासँ तँ एखनहि घर-घराड़ीसँ बेदखल भ' जायब । हम उचित बाबूकेँ कहलियन्हि, ''देब तँ भरने, मुदा हमरा किछु आर काज अछि, तेँ हमरा कमसँ कम तीन लाख टाका चाही ।''

उचित बाबू बजलाह, ''ई तँ बहुत बेसी भ' गेल । एतेक नहि भ' सकत ।''

एतेक कहैत ओ उठि गेलाह आ दलानक नीचाँ जा' क' सागर भाइसँ कनफुसकी कर' लगलाह । कतेक घमर्थन भेलाक बाद अढ़ाइ लाख पर गप्प तय भेल आ श्राद्ध कार्यक तैयारी शुरू भेल । श्राद्धसँ पूर्व हमर बालक सब सेहो आबि गेलाह । हुनकहु सबकेँ सब गप्प कहलियन्हि । ओहो सब संतोष व्यक्त कयलनि । सब कार्य सम्पन्न भेलाक उत्तर भगवानक पूजा कयलहुँ आ प्रातःकाल उचित बाबूकेँ बजा क' सबटा हिसाब-किताब कयल । कुल खर्च एक लाख पञ्चानबे हजार भेल । शेष पचपन हजार टाका उचित बाबूसँ प्राप्त कयल आ सबटा जमीनक भरनाक कागत बनाक' उचित बाबूकेँ दैत तत्काल हुनक ऋणसँ उऋण भेलहुँ । दोसर दिन कुलदेवता आ ग्रामदेवताकेँ गोड़ लागि माय आ पत्नी सहित सबटा बाल-बच्चाक संग पटना अयलहुँ । एहि ठाम पूर्ववत् अपना दिनचर्यामे लागि गेलहुँ । धिया-पूता सब पढ़ि-लिखि क' नोकरी-चाकरी कर' लागल । उचित बाबूक टाकाक इन्तजाममे किछु देरी भ' गेल । देरी तँ मात्र दस दिनक भेल छल । हम टाका ल' क' गाम जायब सोचिये रहल छलहुँ, तावत् उचित बाबूक चिट्ठी भेटल, जाहिमे लिखल छल, ''भरनाक मियाद खतम भ' गेल । शर्त्तक मोताबिक अहाँक सब जमीनक अधिकारी हम भ' गेलहुँ ।'' हम सोचलहुँ गाम जा' क' व्यर्थमे घोंघाउज करी आ

परिणाम किछु नहि भेटए, एहिसँ नीक जे संतोषे करी । बेटा सबकेँ पुछलियन्हि तँ ओहो सब हमरहि समर्थन कयलन्हि । जँ भगवानक इएह इच्छा छन्हि तँ इएह सही । तेँ गाम नहि जाइत छी । जँ जायब तँ कत' जायब, कत' रहब आ ककर मुँह देखब ? ओहने चण्डाल सभक जे दोसराक मजबूरीसँ अपन फायदा उठबैत अछि ! समाज तँ ओ थीक जे दोसराक दुःखकेँ अपन दुःख बुझए । मुदा एखनुक समाज किछु आर अछि । सुनने होयबैक, जखन कोशीमे बाढ़ि आयल छलैक तँ ओहि ठामक नाविक लोककेँ पार उतारबाक लेल नाव पर चढ़ा लैत छलैक आ बीच धारमे ओकर सब किछु छीनि ओकरा धारमे डुबा दैत छलैक । एहन समाजसँ की आशा करब ?

हम सुधाकरजीकेँ पुछलियन्हि, ''एखन जे अपने जीवन व्यतीत क' रहल छी, ताहिसँ संतुष्ट छी ?''

सुधाकरजी बजलाह, ''हँ...हँ... बिल्कुल संतुष्ट छी । सब बालककेँ समय निर्धारित कयने छियैक । सप्ताहमे एक दिन ओकरा सबसँ खूब गप्प-शप्प करैत छी । दस बजे राति धरि ओहो सब आपस डेरा आबि जाइत अछि आ हमहू खा-पीबि क' निश्चिंत भ' जाइत छी ।''

6

पार्कमे टहलैत छलहुँ कि एक दिन रमणजी भेटि गेलाह । रमणजी इंजिनियर छलाह, संगहि हमर सहपाठी सेहो । हम सब हाइ स्कूलमे संगे पढ़ैत छलहुँ । पहिने तँ ओ हमरा नहि चिन्हलन्हि आ हमहूँ नीक जकाँ नहि चिन्हलियनि । लगभग चालीस वर्षक बाद भेट भेल छलाह। आब तँ चेहरो-मोहरा बदलि गेल छलनि । मुदा नाक पर एकटा कटलाहा निसानसँ पकड़ा गेलाह । बहुत मेधावी छलाह । इंजिनियरिंग कयलनि आ बंगलोरमे नोकरी कर' लगलाह । हम अचानक पूछि देलियनि, ''अपने रमणजी थिकहुँ ने ?''

रमणजी अकचकाइत बजलाह, ''हँ...हँ.... हम तँ रमणजी थिकहुँ

मुदा अपने के थिकहुँ बाबू आ हमरा कोना चिन्हैत छी ?'' बजबाक वैह शैली जे आइसँ चालीस वर्ष पूर्व छलनि ।

हम अपन परिचय देलियनि । रमणजी हमरा भरि पाँज क' उठा लेलनि आ भाव-विभोर भ' गेलाह । पुछलनि, ''कहू...कहू....भाइ, एतेक दिन कोना-कोना आ कत'-कत' गमौलहुँ ?''

हम सबटा वृत्तान्त कहलियन्हि । हुनका संगे किछु आर लोक छलथिन्ह । रमणजी चाय पीबाक लेल डेरा पर बजौलन्हि आ सेहो एकसर नहि, दुनू प्राणीक संग । दू-चारि दिनक बाद हम दुनू प्राणी रमणजीक डेरा पर गेलहुँ । रमणजी डेरे पर छलाह, मुदा सबसँ पहिने कुकूरक दर्शन भेल । कहलियन्हि, ''श्रीमान् ! एहि महाशयकेँ पकड़ब, तखन ने हम सब भीतर प्रवेश करब !''

रमणजी, ''आउ ने, नहि काटत ।''

हम कहलियन्हि, ''मुदा चाटत तँ अवश्ये ।''

रमणजी, ''हँ, से तँ चाटत ।''

हम कहलियन्हि, ''पढ़ने छी की नहि, काटे-चाटे श्वान को...'' ।

रमणजी, ''की कहू, हम तँ एकर घोर विरोधी छी । हमरा तँ ई एकदम नहि सोहाइत अछि । मुदा कनियाँ एकर प्रेमी छथि । तेँ हमहूँ एकरा निमाहि रहल छी ।''

हम पुछलियन्हि, ''से की, इहो दहेजेमे भेटल अछि की ?''

रमणजी, ''सैह बुझू ।''

हम कहलियन्हि, ''तखन तँ एकर सम्मान करहिटा पड़त ।''

तावत् हुनकर कनियाँ सुनयना सेहो बाहर आबि गेलीह आ बजलीह, ''ककर सम्मान कयल जा रहल छैक ?''

हम कहलियन्हि, ''अहीँक नैहरक दहेजक सम्मानक गप्प भ' रहल अछि ।''

''हमरा नैहरक कोन दहेजक गप्प क' रहल छी ?'' सुनयना बजलीह ।

हम कहलियन्हि, ''ओएह चतुष्पद प्राणी जे टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि ।''

सुनयना किछु नहि बजलीह । मुँह पर मुस्की छिड़िअबैत हमरा कनियाँकेँ ल' क' भीतर चल गेली आ हम दुनू गोटे बाहर बैसि गप्प-शप्प कर' लगलहुँ ।

''हिनकर हॉबी छन्हि कुकूर संग खेलायब । कतेक दिन कुकूरकेँ ल' क' दुनू गोटेमे झगड़ो भ' जाइत अछि । अंततः हमहीँ हारि मानि लैत छी ।'' रमणजी बजलाह ।

''बुद्धिमान लोक छी, तेँ ने !'' हम कहलियन्हि ।

रमणजी बजलाह, ''एहिमे बुद्धिमानक कोन गप्प भेलैक ?''

''भेलैक ने, जे जतेक महान लोक होइत छथि, हुनका बरदास्त करबाक क्षमता ओतेक बेसी होइत छन्हि । अपन गलतीक आभास होइतहि माँफी माँगि लेब बुधियारक लक्षण थीक । तहिना पत्नीसँ हारि मानब बुझनुक आ बहादुर लोकक कर्त्तव्य थीक । जँ मूर्ख रहितहुँ तँ अपना कुकृत्यो पर अड़ल रहितहुँ आ किछु बजितहिँ तेरहम विद्या शुरू । आब कहू अहाँ बुद्धिमान थिकहुँ वा नहि ?''

रमणजी बजलाह, ''अरे ! अहाँ एतेक गोल-गोल गप्प करब कहिआ सीखि गेलहुँ ? स्कूलमे तँ ठीकसँ ठाढ़ो होम' नहि अबैत छल । सदरि डाँड़सँ पैन्ट ससरितहि रहैत छल । मन अछि की नहि, रामरूप बाबू कतेक बनबैत रहथि ?''

''कहबी छैक, ककरहु पैघ लोक बनबाक पाछाँ कोनो ने कोनो स्त्रीगणक हाथ होइत छैक ।'' हम कहलियन्हि ।

रमणजी हँसैत बजलाह, ''ओह ! हमरो एहन भाग्य... । खैर छोड़ू एहि गप्पकेँ । कोना की भ' रहल छैक । कत' रहि रहल छी आ एहि ठाम कोना घुमि रहल छी ?''

हम कहलियन्हि, ''हम अपने तँ सेवानिवृत्त भ' चुकल छी आ एखन गामहिमे रहि रहल छी । विशेष समय पूजा-पाठमे व्यतीत भ' रहल अछि । किछु समय लिखबा-पढ़बामे सेहो कटि जाइत अछि ।''

''की लिखि-पढ़ि लैत छी ?'', रमणजी बजलाह ।

हम कहलियन्हि, ''मैथिलीमे कथा-कविता, इएह सब, आर की ?''

"वाह...वाह... अहाँ तँ माय मैथिलीक सेवा क' रहल छियैन्हि। मातृभूमिक कर्ज उतारि रहल छी। एहिसँ पैघ कृत्य की भ' सकैत अछि। मुदा एहिमे कठिनता नहि भ' रहल अछि ?" रमणजी पुछलन्हि।

हम पुछलियन्हि, "कठिनता कोन तरहक ?"

रमणजी बजलाह, "सुनैत छी जे कवि, लेखकके̐ पत्नीसँ नहि पटैत छन्हि, जेना सूर, तुलसी, सब पत्नीक वियोगेमे रचनाकार भेल छथि।"

हम कहलियन्हि, "ओ सब बहुत पैघ लोक छलाह। भ' सकैत अछि, एतेक पैघ लोकक संगे एहन भेल हो, मुदा हम तँ एखन साहित्यजगतमे पयरे राखल अछि। एहन अनुभव हमरा एखन धरि नहि भेल अछि।"

रमणजी बजलाह, "एहि ठाम कोना पहुँचलहुँ ?"

हम कहलियन्हि, "एहि ठाम बालक कार्यरत छथि, तेँ बीच-बीचमे आबि जाइत छी। हम जखन अबैत छी तँ एही पार्कमे नित्य प्रात:काल टहलैत छी। एही क्रममे आइ अहाँ भेटि गेलहुँ। बालसखाक भेटसँ मन कतेक आह्लादित होइत छैक तकरा वाणीमे व्यक्त नहि कयल जा सकैत छैक। धिया-पूता लग ठाढ़ भेने लोक बुढ़ारीक अनुभव करैत अछि, किएक तँ दुनूमे एक पीढ़ीक अंतर भ' जाइत छैक। मुदा एकटा बालसखा लग ठाढ़ भेलासँ आ ओकरा संग नेनपनक गप्प-शप्प कयने बुझाइत छैक जेना नेनपनमे आबि गेल छी। तेँ कहल गेल अछि जे फागुनमे बुढ़ो जुआन भ' जाइत छथि, किएक तँ फगुआमे कोनो पीढ़ीक गप्प नहि रहैत छैक। सभक व्यवहार एक सदृश होइत छैक। ऊँच-नीच, छोट-पैघक कोनो भेद-भाव नहि रहैत छैक। अहाँसँ एहि ठाम भेट होयत, हम तँ एहन कल्पनो नहि कयने छलहुँ। तखन अपने कहू, जे एहि चालीस वर्षमे की सब कयलहुँ ?"

रमणजी बजलाह, "हम पटनासँ इंजिनियरिंग क' बंगलोर चल गेलहुँ। ओत' हवाइ जहाजक फैक्ट्रीमे साक्षात्कार देलहुँ। ओतहि चयनित भ' गेलहुँ। कम्पनीक दिससँ आवास सेहो भेटि गेल। विवाह-दान भेल, बाल-बच्चा भेल। बाल-बच्चामे एकटा बालक आ दूटा बालिका छथि। सबके̐ पढ़ौलहुँ-लिखौलहुँ। बालक इंजिनियर छथि आ ओहो बंगलोरेमे पदस्थापित छथि। दुनू बेटी एम.बी.ए. कयलनि। सभक विवाह-दान

भेलनि। दुनू जमाय आ पुतहु सेहो एम.बी.ए. छथि। सब केओ नोकरीये करैत छथि। एकटा बेटी-जमाय एही ठाम दिल्लीयेमे रहि रहल छथि। बगलेमे डेरा छन्हि। धिया-पूताक विचार छलन्हि जे हम दुनू प्राणी हुनकहि सभक लगमे रही, मुदा ई हमरा सबके̐ पसिन्न नहि भेल। सब केओ ड्यूटी करताह आ हम दुनू प्राणी भरि दिन एकढ़बा जकाँ घरक ओगरबाही करैत रही। कतहु जाइयो-आबि नहि सकैत छी, किएक तँ कखन अओताह, कखन नहि। ऊपरसँ हुनका सभक रोब सहू। ई किएक भेल, तँ ई किएक नहि भेल, आदि-आदि। तेँ हम निर्णय कयलहुँ जे शेष जीवन कतहु शहरमे मकान कीनि क' वा भाड़ा पर ल' क' व्यतीत करी। मुदा पत्नी ओहिसँ सहमत नहि भेलीह। हुनकर इच्छा छलनि जे सब दिन तँ शहरेमे रहलहुँ। किछु दिन ग्रामीणो परिवेशमे रहि ओकर आनंद उठाओल जयबाक चाही। ओना तँ गामक कोनो तुलने नहि छैक। हम सब तँ समर्थो भेल छी ओही परिवेशमे। के अभागल होयत जे गाममे रह' नहि चाहत ? मुदा आब ओ गाम नहि रहलैक। आइ गामक परिभाषा बदलि गेलैक अछि। हमरा सभक समयमे केओ पानो-सुपारी खाइत छल तँ गार्जियनसँ चोरा क', मुदा आइ बच्चा-बच्चा दारू, सिगरेट पीबि रहल अछि आ सेहो बिना रोक-टोकक। शुरूमे तँ ओकरा माय-बापके̐ नीक लगैत छनि। ओ ओकरा नव युगक फैशन बुझैत छथि। समाजक बीच माथ ऊँच क' क' एकरा प्रचारित करैत छथि, मुदा जखन पानि नाकसँ ऊपर भ' जाइत छनि, तखन ओ छटपटाइत छथि। तावत बहुत देरी भ' गेल रहैत छनि। ओकर सुधरबाक सब बाट बन्न भ' गेल रहैत छनि। एहन लोकक संख्या गाममे अधिक भेटत। ओ सब बहरियाके̐ अपन मुल्ला बुझैत अछि आ ओकरासँ अपन क्षुधा-पिपासाके̐ शांत करबाक अपेक्षा करैत अछि। ओकर पूर्ति नहि भेला पर ओकरा विषयमे अदखोइ-बदखोइ क' ओकरा गामसँ पड़यबाक लेल विवश क' दैत अछि। तथापि पत्नीक इच्छाके̐ रोकल नहि जा सकैत छल। दुनियाँमे अहाँ सब पर विजय प्राप्त क' सकैत छी, मुदा त्रियाहठ लग सबके̐ झुक' पड़ैत छन्हि आ तेँ हमहूँ एहि लेल राजी भ' गेलहुँ। संयोग छल जे सेवानिवृत्तिक लाभ एखन धरि भेटल नहि छल। ओहिमे छौ मासक

विलम्ब छलैक । गाममे पैंच-उधार लेनिहार लोकक कमी नहि रहैत छैक । लोक सब एहन मौका तकितहि रहैत अछि । हमरहु ओहि ठाम लाइन लागि गेल । हम जँ ककरहु मना करैत छलियैक वा असमर्थता व्यक्त करैत छलहुँ, तँ लोकके̐ होइत छलैक, लाथ क' रहल छथि । एक गोटे तँ एतेक धरि बाजि गेलाह जे अहाँके̐ की दोसरक आसरा नहि होयत ? अपनहि आगि-पानिसँ निमहि जायब की ? हम तँ अवाके रहि गेलहुँ । गामहि केर एकटा हमर मित्र छथि । नाम तँ हुनकर छन्हि निरंजनजी, मुदा हम सब हुनका नेनपनहिसँ खोखन भाइ कहैत छियैन्हि । खोखन भाइ हमरहि सभक संगे पढ़ैत छलाह । नेनपनहिमे हुनकर माँ-बाबूजी स्वर्गीय भ' गेल छलथिन्ह । ओ पढ़ि-लिखि नहि सकलाह । परिवारक भरण-पोषण लेल गामहिमे रहि खेती-पथारी कर' लगलाह । ककरहुसँ जरूरते भरि मतलब रखैत छलाह । ने हुनका ककरहुसँ विशेष दोस्ती छलनि आ ने ककरहुसँ दुश्मनी । एकर कारण छलैक खोखन भाय केर नेनपन बहुत कष्टप्रद रहलनि । एक तँ मातृ-पितृहीन बच्चा, ऊपरसँ पित्ती-पितियाइनिक प्रतारण । हुनका पित्तीक डरसँ केओ बाज'बला नहि छल । ओना तँ दोसरक टाटमे पयर घुसिअयबाक लोक बाट तकिते रहैत अछि, मुदा ओहिमे जे कमजोर रहैत अछि, ओकरहि संगे । बरियासँ सब छीह कटैत अछि । एकर बड़ बेसी असरि खोखन भाइक जीवन पर पड़ल । हुनका समाजसँ कोनो तरहक सहयोग नहि भेटलन्हि, जकर ओ अपेक्षा करैत छलाह ।''

एक दिन खोखन भाइ भेटलाह आ कहलनि, ''रमणजी ! हमरा होइत छल जे एहि गाममे सबसँ पैघ बेवकूफ हमहीँटा छी, मुदा अहाँ तँ हमरहु गुरु बहरयलहुँ ।''

हम पुछलियन्हि, ''से कोना ?''

खोखन भाइ बजलाह, ''कनेक आँखि पसारि क' देखिऔक तँ, एकहुटा पढ़ल-लिखल आ संभ्रान्त लोक एहि गाममे अछि ? हम तँ कह' नहि चाहैत छलहुँ, मुदा सौंसे गाममे अहीँक चर्चा अछि । अहाँके̐ हम खूब नीक जकाँ जनैत छी, तेँ कष्ट भेल, आ तेँ अपनाके̐ रोकि नहि सकलहुँ । कहबी छैक ''सत्संगेन गुणा दोषाः'' । मतलब जेहने लोकसँ संग करब, ओहने ने परिणाम भेटत ! एहि ठामक लोक बिना कमयनहि

लखपति बन' चाहैत अछि आ सेहो रातिये भरिमे । अहाँ की सोचिक' गाममे रहबाक निर्णय लेलहुँ ?''

रमणजी बजलाह, ''हम तँ सोचलहुँ, सब दिन बाहरे रहलहुँ, आब गाममे जा' क' रही आ ग्रामीण परिवेशक लाभ उठाबी । एहि ठामक लोक सभक बीचमे उठी-बैसी । किछु अपन अनुभव हुनका बीचमे बाँटी आ किछु हुनकर अनुभव ग्रहण करी । आमक गाछीमे बैसि कोइलीक तान सुनी । वर्षाक फुहारक संग बारहमासाक आनन्द उठाबी । कजरीक रसास्वादन करी । गाछसँ पाकल आम खसला पर कोना नेना-भुटका ओहि पर झपटैत अछि, तकर दृश्यावलोकन करी । आमक मुहठी काटि, ओकरा जलमे द' क' अपनहु खाइ आ मित्र-मंडलीके̐ सेहो खुआबी । शहरमे ओ सभ कत' पाबी ? ओहि ठाम तँ कतरे पर संतोष कर' पड़ैत छैक । इएह सब सोचि, गाममे रहबाक लेल आयल छलहुँ । हमरहुसँ बेसी हमर पत्नीक इच्छा छलनि । गामक पाबनि-तिहार देखबाक उत्कट लालसा छलनि । कोना मधुश्रावणीमे नव ललना फूल लोढ़ि डाला सजबैत छथि आ प्रातःकाल पूजा करैत छथि । चड़ुचनमे कोना रंग-बिरंगक पकमान बनैत अछि आ साँझमे सब केओ चौठचन्द्रके̐ गोड़ लागि प्रसाद ग्रहण करैत छथि । ई मनोहारी दृश्य शहरमे कत' पाबी ? जितियामे व्रतसँ पूर्व कतेक तरहक तरकारीक विन्यासक संग मड़ुआक रोटी आ माछक अद्‌भुत समागम होइत अछि । बाहर तँ केओ मड़ुआक रोटी बुझितहु नहि अछि । भाइ-बहिनिक प्रतिरूप सामा-चकेबाक खेल केवल गामहिटामे भेटत ।''

खोखन भाइ बजलाह, ''ई सब तँ नेनपनक कल्पना थिक । नेनपनमे लोकके̐ खयबा-खेलयबासँ मतलब रहैत छैक । यत्र-तत्र मनमौजी करैत अछि । कोनो जिम्मेबारी नहि रहैत छैक, मुदा एहि वयसमे से सब सम्भव छैक की ? एहि ठाम तँ जे किछु कमा क' अनने छी ओकरा बिलहि दिअ' आ अपने हाथमे कटोरी ल' क' घुमू । तखन तँ अहाँ बड़ सुन्नर आ से जँ नहि तँ अहाँ सनक खराब लोक केओ नहि ।''

रमणजी बजलाह, ''ठीक कहल खोखन भाइ ! आब पछता रहल छी । जीवनक सबटा निर्णय सहिये नहि होइत छैक । कोनो-कोनो गलत सेहो भ' जाइत छैक । हम एहि विषयमे पुनः विचार करबाक लेल सोचि रहल छी ।''

खोखन भाइ चल गेलाह आ हम दुनू प्राणी विचार-विमर्श कयलहुँ। गामक सबटा चास बीत-बीत क' मनखप लगा देलहुँ आ दुनू गोटे दिल्ली चलि अयलहुँ। दिल्लीमे छोटकी बेटी रहैत अछि। ओकरा लग एक मास रहलहुँ। ओकर बाद एकटा किरायाक मकान बेटीक बगलेमे ल' क' रहि रहल छी। बेटी बड़ विरोध कयलक, मुदा हम कहलियैक, ''अपना डेरामे लोक स्वतंत्र रूपेँ रहैत अछि। तोरा लग रहब उचित नहि। जखन हमरा पेंशन भेटिये रहल अछि, तखन तोरा लग किएक रहब ? बेटीक देल किएक खायब ? तोरा बगलमे एहि लेल छी जे कोनो नीक-बेजायमे ताक-छेम करबह। एहिसँ दुनू पीढ़ीक बीच रहन-सहनमे कोनो टकराहटिक आशंका नहि रहत जे आइ-काल्हि आम गप्प भ' गेल अछि। इएह हमर चालीस वर्षक उपलब्धि थिक।''

हम आब असली मुद्दा पर आबि गेलहुँ आ पुछलियन्हि, ''कुकूरक शौक कहियासँ ? पहिने तँ नहि छल।''

रमणजी हँसैत बजलाह, ''कुकूर अस्पृश्य अवश्य होइत अछि, मुदा एकर कर्त्तव्य बड़ पैघ छैक। एहि ठाम बेर-बेर उठि क' गेट खोलब कठिनाह लगैत अछि आ खोलि क' राखब उचित नहि। पता नहि कखन के घुसि जायत ? तेँ एहि ठामक लेल ई बड़ उपयोगी अछि। एकरासँ एतेक होइत अछि जे भोरे छौ बजेसँ राति आठ बजे धरि गेट खुजल रहैत अछि आ कुकूर निगरानी करैत रहैत अछि। बेर-बेर उठि क' खोलबा-लगेबाक झंझटिसँ बचि जाइत छी।''

हम कहलियन्हि,''हमरा आब बुझबामे आबि गेल जे ओ लोकनि किएक गामकेँ त्यागि देलन्हि ? गामक लोक तँ कहुना बाहरमे रहि सकैत अछि, मुदा शहरमे रहनिहार किन्हु गाममे नहि रहि सकैत अछि।''

रमणजी बजलाह,''के गामकेँ त्यागि देलन्हि आ गाममे नहि रहि सकैत छथि ?''

हम कहलियन्हि, ''एक बेर मधुबनीक जिलाधिकारी जे दक्षिण भारत केर छलीह, ओ सर्वे करौलनि। देशक कोनो जिलासँ बेसी आइ.ए.एस. आ आइ.पी.एस. मधुबनी जिलामे अछि। तखन ई सबसँ पिछड़ा जिला किएक अछि ? एकर विकास आइ धरि किएक नहि भेलैक अछि ? ने सुव्यवस्थित

रोड आ ने बिजली। यातायातक तँ गप्पे जुनि करू। दू घंटाक बाट जँ चारिओ घंटामे तय क' लैत छी, तँ भाग्ये बुझू। ओ जिलाधिकारी बी.डी.ओ. सबसँ रिपोर्ट ल' क' सब गामक भ्रमण कयलनि। सब आइ. ए.एस. आ आ.पी.एस.क घरे-घर गेलीह, मुदा हुनका ककरहुसँ भेट नहि भेलनि। कतहु घर पर नोकर-चाकर वा जन-हरबाह अपन आधिपत्य जमौने छल तँ कतहु ध्वस्त देबाल पर बड़, पीपर आ पाकड़ि। अनेक वर्षसँ सून पड़ल घर-आंगन अपन अतीतक गाथा कानि-कानि क' सुना रहल छल। आंगनमे चतरल घास ओकर व्यथाक बखान क' रहल छलैक। पुछलापर विदित भेलनि जे अनेक वर्षसँ केओ गोटे नहि अबैत-जाइत छथिन्ह। हँ, यदा-कदा हुनका सभक टेलीफोन अबैत छन्हि आ खेतक उपजा बेचि, टाका हुनका बैंक खातामे जमा करा देल जाइत छन्हि। नवतुरिया सभ तँ कतेकोकेँ चिन्हितो नहि छलनि। एहि पलायनक कतेको कारण भ' सकैत छैक– 1. सामाजिक वैमनस्य, 2. यातायातक अव्यवस्था आ 3. बाढ़ि- ग्रस्तता।

एकर निवारण कहिओ नहि भ' सकैत अछि। कारण, जे करैत ओ तँ भागि गेल आ जे बाँचल अछि, ओकरामे एतेक सामर्थ्य नहि छैक। गाममे रहनिहार लोक अपन हाल-रोजगारक बाद जे पलखति पबैत छथि ओकर उपयोग ताश खेलेबामे आ दोसराक अदखोइ-बदखोइमे करैत छथि। हुनका सभकेँ गामक प्रगतिसँ कोन प्रयोजन ? ओ सभ तँ केवल अपना प्रगतिमे विश्वास करैत छथि आ सेहो उर्ध्वगामी नहि। तखन तँ भगवानेक कृपा बुझू जे हिनका सभक दुनियाँ चलि रहल छनि।''

7

एक दिन पार्कक बेंच पर बैसल एकटा सज्जन भेटलाह। सम्भवत: कातेमे धर्मपत्नी सेहो छलथिन्ह। हाथमे कुकूरक सिक्कड़ि धयने छलाह। ओना तँ वेश-भूषा दिल्लीयेवला छलनि, मुदा मैथिल कतबहु नकल करत, ओ कतहु ने कतहु धराइये जाइत अछि। तेँ हमरहु आभास

भेल जे ई सम्भवतः मैथिले छथि । हमहूँ सहटि क' आगाँ बढ़लहुँ आ बेंच पर बैसि पुछलियन्हि, ''की श्रीमान् ! हम अपनेक परिचय बुझि सकैत छी ?''

ओ बजलाह, ''कोन प्रयोजन अछि ? हम तँ अपनेसँ नहि किछु पुछल अछि ।''

हमरा बड़ खराब लागल, मुदा गलतीओ तँ हमरहि छल । पता नहि ओ कोन मुद्रामे होयताह आ हम हुनका टोकि, हुनकर ध्यान तोड़ि देलियन्हि ।

हम कहलियन्हि, ''श्रीमान् ! कदाचित् हमर प्रश्नसँ अपनेकेँ कष्ट भेल होमए तँ हम एहि लेल क्षमाप्रार्थी छी । हम तँ स्वभाववश अपनेक परिचय पुछल अछि । हम मैथिल छी, आ हमरा बुझायल जे अपनहु मैथिल छी । तेँ एहन धृष्टता कयल ।''

हम उठि क' विदा भ' गेलहुँ । ओ श्रीमान् किछु बजितथि, ताहिसँ पूर्व हुनक कनियाँ बजलीह, ''नहि-नहि, कोनो गप्प नहि छैक । हम अपन परिचय द' रहल छी । हिनकर मन किछु गड़बड़ छन्हि, तेँ बेशी बाज' नहि चाहैत छथि ।''

परिचयक मोताबिक ओ डाकदर छलाह आ नाम छलनि डा. किरण झा आ कनियाँक नाम रश्मि झा । डा. साहेब सेवानिवृत्त छथि आ दिल्लीक तिलक नगरमे अपन मकान बनौने छथि । पुनः हमरहु परिचय पुछलनि आ दुनू गोटेमे गप्प-शप्प होमए लागल ।

हम पुछलियन्हि, ''डा. साहेब ! जँ अन्यथा नहि ली तँ हम अपन जिज्ञासा प्रकट कर' चाहैत छी ।''

डा. साहेब बजलाह, ''कोन तरहक जिज्ञासा अछि ?''

हम कहलियन्हि, ''अपनेक विषयमे किछु बुझ' चाहैत छी । जेना अपने दरभंगा छोड़ि एहि ठाम रहि रहल छी जखन कि लोकके़ँ अपना जन्मभूमिसँ अगाध स्नेह रहैत छैक । बहुत कम मैथिल छथि जे शिवभक्त होयबाक कारणे कुकूरसँ प्रेम करैत छथि । अपनेक कुकूर-प्रेमसँ हम चकित छी ।''

डा. किरण बजलाह, ''ई बहुत पैघ घटनाक प्रतिफल थीक । ई

एहि ठाम नहि कहल जा सकैत अछि । हम तँ एकरा बिसरबाक कोशिश करैत छलहुँ वा बुझू तँ बिसरिओ गेल छी, मुदा अपने पुनः एकरा खोड़ि देल । एहि लेल कोनो रवि क' हमरा डेरा पर आउ । ओही ठाम भोजनो होयतैक आ सबटा गप्पो-शप्प ।''

ओना तँ डा. किरण सेवानिवृत्त छथि आ अवस्था सेहो लगभग पचासीक होयतन्हि । तथापि भोर आ साँझमे दू-चारिटा रोगीकेँ देखिये लैत छथि आ सेहो बिना फीसक । रवि दिन छुट्टी मनबैत छथि । अपन समय अपना परिवारक संग हास्य-विनोद आ टी.भी. आदिमे व्यतीत करैत छथि । हमरा बड़ आश्चर्य लागल जे एहन परोपकारी लोक गामसँ किएक पलायन कयलनि । अवश्य कोनो पैघ दुर्घटना भेल होयतनि ।

हमर उत्सुकता आर बढ़ि गेल । निर्धारित समय पर डा. किरण झाजीक डेरा पर गेलहुँ । ओहि ठाम हमरहु स्वागतक लेल हुनक प्रियपात्र कुकूर ठाढ़ छल । हमरा देखितहि ओकर प्रलाप शुरू भऽ गेलैक । तावत डा. साहेब ओसारा पर अयलाह आ बजलाह, ''आबि ने जाउ, गेट फूजल अछि ।''

ई तँ हमहूँ देखल जे गेट फूजल अछि, मुदा डर तँ पहरेदारक छल आ से हुनकर आवाज सुनितहि शांत भ' गेल ।

हम भीतर गेलहुँ आ एकटा सोफा पर बैसलहुँ । घरक सजाबटि अत्यन्त मनमोहक छल । सब सामग्री अपना स्थान पर आ अपना ढंगसँ राखल छल । देबाल पर मिथिला पेंटिंगक संग-संग दूटा पाग सेहो टाँगल छलैक । हम ई दृश्यावलोकन कइए रहल छलहुँ कि हुनकर मेम साहेब रश्मि जी एक गिलास ठंढा जल आ एक कप चाह ल' क' उपस्थित भ' गेलीह । हम जल पीबि औपचारिकतावश चाहक कप डाक्टर साहेब दिस बढ़ाओल ।

ओ बजलाह, ''हम तुरंत पीलहुँ अछि ।'' चाहक बाद डा. किरणझाजी बजलाह, ''अपने की पूछ' चाहैत छलहुँ ?''

हम पुछलियन्हि, ''अपनेकेँ कएटा बाल-बच्चा छथि आ की सभ क' रहल छथि ?''

डा. किरण झाजी बजलाह, ''हमरा दू टा बालक छथि आ पेशासँ

दुनू गोटे डाक्टर छथि । दुनू अपन कनियाँ आ बाल-बच्चाक संग विदेशमे रहैत छथि । हम दुनू प्राणी एहि ठाम छी, एहि लेल जे एहि ठाम हवाइ सेवा सुदृढ़ होयबाक कारणे हुनका लोकनिकेँ अयबा-जयबामे कोनो असुविधा नहि होइत छन्हि ।''

हम पुछलियन्हि, ''अपनेक गामक की स्थिति अछि ? गाम जाइत-अबैत छी वा नहि ?''

डा. किरणजी, ''गामकेँ हम सब बिसरि गेल छी । बुझू जे गाम आब अछिये नहि ।''

हम पुछलियन्हि, ''से किएक ?''

डा. किरणजी बजलाह, ''अपना कयलासँ किछु नहि होइत छैक । सब किछु पूर्वहिसँ निर्धारित अछि । तदनुकूल सब किछु भ' रहल अछि । हम एहि अवधारणाक विरोधी छलहुँ । आधुनिकताक प्रवाहमे बहबाक कारणे हम एहि सब पर विश्वास नहि करैत छलहुँ । लोककेँ एहि मानसिकतासँ बाहर अनबाक लेल प्रेरित करैत छलहुँ । मुदा हमर भ्रम टुटि गेल ।''

हम पुछलियन्हि, ''से कोना ?''

डा. किरण बजलाह, ''हमरा समाज-सेवामे बड़ मन लगैत छल । जखन हम डाक्टर भेलहुँ तँ हमर नियुक्ति दि ल्ली एम्समे भेल । हम सम्पूर्ण परिवारक विरोध करैत एम्ससँ छुट्टी ल' क' अपना गाममे अपनहि दरबज्जा पर क्लिनिक खोलि लेलहुँ आ निःशुल्क सेवा शुरू कयलहुँ । बाबूजी कहलन्हि, ''बौआ ! गाम तोरा सभक लेल नहि छह । तोँ सब छल-कपट नहि बुझैत छह । एहि ठाम लोक बेवकूफ बनौतह । गाम तँ हमरा सभक लेल अछि । जे जेहन रोगी, ओकरा संग ओहन उपचार । गामक चक्रचालि बड़ खराब होइत छैक । एहिसँ जतेक दूर रहबह, ओतेक नीक । तोरा मनमे सेवाभाव छह, ई बढ़ियाँ गप्प, मुदा एकर स्वाद बुझनिहार के ? हम हुनक गप्प पर ध्यान नहि देलहुँ । किछु दिन तँ बड़ बढ़ियाँ चलल । दूर-दूरसँ लोक सब अबैत छलाह । हमहूँ दिन-राति लागल रहैत छलहुँ । समय कोना बीति रहल छल, किछु आभास नहि होइत छल । कर्मचारीमे मात्र एकटा कम्पाउंडर आ एकटा नर्स छल ।

एकसँ एक असाध्य रोगक इलाज होइत छलैक । कौखन कठिनाइ भेला पर एम्स केर विभागाध्यक्षसँ दूरभाष पर सम्पर्क क' समाधान क' लैत छलहुँ । मुदा होनीकेँ के टारि सकैत अछि ? ओकरा आगाँ सब फेल क' जाइत छथि आ सैह हमरहु संग भेल । ओकर बाद हमरा ऊपर हमरहि नर्सक यौन शोषण करबाक आरोप लागि गेल । ओना तँ पर्दाक पाछू किछु डाक्टर छलाह जनिका हमरा कारणे कमाइमे बेतहाशा वृद्धि नहि भ' पबैत छलन्हि । मुदा आगू ओ व्यक्ति अयलाह जनिका हम किछु दिन पूर्व पाँतीमे ठाढ़ होयबाक शिक्षा देने छलियन्हि । ओ हुनका प्रतिष्ठा पर पड़ि गेलनि, किएक तँ ओ गामक दबंग लोक छलाह । हमरा समाजक एकटा विचित्र विडम्बना अछि । कोनो अफवाहक प्रचार बहुत बेसी द्रुत गतियें होइत अछि । लोक ई नहि देखैत अछि जे एहिमे सत्यता अछि वा नहि ? ओहि अफवाहक आगाँ हमर सबटा सेवा तुच्छ बुझना गेल । हमर कम्पाउंडर छोड़ि केओ हमर संग देनिहार नहि, मुदा ओ तँ हमरहि स्टाफ छल । हमर मन टुटि गेल । तावत बाबूजी सेहो स्वर्गीय भ' चुकल छलाह । हम गाम छोड़बाक निर्णय कयलहुँ । बादमे ओ नर्स आबि क' क्षमा-याचना सेहो कयलक । ओ सबटा गप्प सविस्तर बाजल जे कोना ओकरा पर दबाब देल गेलैक ? ओहिमे के सब छलाह ? हम दिल्ली आबि पुनः एम्समे आवेदन कयलहुँ ? करीब एक मासमे हमर आवेदन स्वीकृत भ' गेल । पुनः हमर नियुक्ति भ' गेल । हम सब परिवारकेँ ल' क' स्थायी रूपसँ दिल्ली आबि गेलहुँ । आइ धरि घुरिक' गाम नहि गेलहुँ ।''

हम पुछलियन्हि, ''गामक खेती-पथारी कोना चलैत अछि ? ओहि ठामक सम्पत्ति रखनहि छी आ कि बेचि देलहुँ ?''

डा. किरण झाजी बजलाह, ''जखन हम सब-किछु छोड़ि देलहुँ, तखन की-कोना चलैत अछि, ताहिसँ कोन प्रयोजन ? तखन सम्पत्ति ने बेचल अछि आ ने बेचब । जकरा उपभोग करबाक छैक, से करओ । हमर पितिऔत जे किछु पठा दैत छथि, राखि लैत छी । कतेको बेरि मना सेहो कयलियन्हि, मुदा नहि मानैत छथि । ओहो सब कहिओ काल एहि ठाम अबैत छथि । हमरहु जे बनि पड़ैत अछि, स्वागत-सत्कार करैत छियन्हि ।''

हम कहलियन्हि, ''अपना स्वार्थक लेल लोक कतेक नीचाँ उतरि

सकैत अछि तकर एहिसँ पैघ उदाहरण नहि भ' सकैत अछि । अपनेक व्यथा उचित अछि ।''

डा. किरण बजलाह, ''जँ ओतबहि रहैत तँ कोनो गप्प नहि । किछु लोक कम्पाउंडरीक लेल बाध्य कर' लगलाह । मुदा हुनकामे ओहि प्रतिभाक अभाव छलनि । एहन लोकके रखलासँ रोगीके आर दिक्कति भ' सकैत छलैक । हमर उद्देश्य कोनो व्यापार करब नहि छल । मात्र रोगीक संतुष्टि हमर ध्येय छल आ ताहिमे हम बहुत हद धरि सफल रहलहुँ । मुदा गामक चक्रचालि बुझि नहि सकलहुँ । एहेन लोक प्राय: सब गाममे दू-चारिटा रहिते छथि । तेँ जे केओ गामसँ बाहर भ' गेल छथि, पुन: गाम जयबाक नाम नहि लैत छथि । गाममे आइ ओहने लोक रहि सकैत अछि जे थेथर हो, निर्लज्ज हो । एकोटा सज्जन लोक गाममे नहि रहि सकैत छथि । इएह कारण अछि जे आजादीक पैंसठि वर्षक बादो गामक पिछड़ापन दूर नहि भेल अछि । पढ़ल-लिखल केर संख्या कम अछि, कारण जे केओ पढ़लक-लिखलक से तँ बाहर चलि गेल आ बाहरेमे रहि जायत । बिजली आ शहरक चकचोन्हीमे रहनिहार डिबिया-लालटेममे कोना रहि सकैत अछि ? आ जे रहबाक प्रयास करत, ओ हमरहि जकाँ मुहेँ भरे खसत । एहि ठाम केवल हमहींटा नहि छी । हमरा गामक करीब पचास गोटे छथि । कहिओ काल हुनका लोकनिसँ भेट भ' जाइत अछि । मुदा पता नहि हमरा की भ' गेल अछि । हमरा ककरहुसँ गप्प करबामे नीके नहि लगैत अछि । बहुत दिनक बाद अहाँसँ भरि मन गप्प कयल अछि ।''

''एहि लेल जे हम अहाँक ग्रामीण नहि छी ।'' हम कहलियन्हि ।

डा. किरण भभाक' हँसि देलन्हि । ओहिमे हुनकर संग हमहूँ देल । हम पुछलियन्हि, ''धिया-पूता सब अबैत-जाइत छथि वा नहि ? जँ अबैत छथि तँ कतेक दिन पर ?''

डा. किरण बजलाह, ''ओना तँ धिया-पूता सब चारि-पाँच वर्ष पर अबैत छथि आ एक मास धरि रहैत छथि । तखन, टेलीफोनक ने युग छैक ! जखने मन भेल, बतिया लैत छी । तेँ एक तरहेँ बुझू तँ लगेमे छथि ।''

हम कहलियन्हि,''ओना तँ हम अपनेकेँ अनेरे खोड़ि देलहुँ, मुदा

एतेक बुझब आवश्यके छल । आब किछु पुछबाक साहस तँ नहि भ' रहल अछि, तथापि एकटा गप्प आर बुझबाक छल ।''

डा. किरण बजलाह, ''कोन गप्प छुटि गेल ? ओहो पुछिये लिअ' ने !''

ओएह अपनेक कुकूर-प्रेम....'' हम कहलियन्हि ।

डा. किरण बात कटैत बजलाह, ''ई तँ आब आवश्यक आवश्यकता सम्बन्धी सूचीमे आबि गेल अछि । एहि ठाम दिल्ली मे ककरो राखब उचित नहि अछि । जकरा राखब ओएह जासूसी करत । आ ने आब ओहि स्थितिमे छी जे केओ आबथि आ जाथि तँ उठि क' गेट फोली आ बन्न करी । एहन स्थितिमे एकटा कुकूरे एहन अछि जकरा पर विश्वास कयल जा सकैत अछि । ओकरा रहने केओ अपरिचित भीतर नहि आबि सकैत अछि आ ओकर अनमनामे हमरहु सभक समय कटि जाइत अछि ।''

तावत् डा. साहेबक कोनो मित्र आबि गेलथिन आ हमहूँ हुनकासँ विदा लेलहुँ ।

8

एक दिन संध्याकाल पार्कमे घुमैत छलहुँ । मन्द-मन्द पुरबा बसात बहि रहल छलैक । पार्क सेहो रंग-बिरंगक रोशनीसँ जगमगा उठल । ओना तँ रातिक आठ बाजि रहल छलैक, मुदा दिल्लीक लेल कोनो बेसी समय नहि भेल छलैक । एहि ठाम तँ आठ बजे साँझे पड़ैत छैक । एकटा पार्कक बेंच पर बैसि तीन-चारि गोटे गप्प-शप्प क' रहल छलाह । गप्प-शप्प तँ दिल्लीयेक भाषामे भ' रहल छलैक, मुदा ओहिमे रहि-रहिक' मैथिलीक शब्द आबि जाइत छलैक । बंगाली जँ कतबहु शुद्ध हिन्दी बाजत, तैओ ओहिमे बंगलाक पुट आबिये जेतैक । तहिना जँ मैथिल कोनो भाषामे गप्प करत, ओहिमे मैथिलीक पुट अयबे करतैक । हमरा बुझायल जे एहिमे एक-दूटा मैथिल अवश्य छथि । हम सहटि क' हुनका सभक लग गेलहुँ आ पुछलियन्हि, ''अहाँ सब कत' केर रहनिहार छी ?''

ओहिमे सँ एकटा बजलाह, ''अहाँ कत' रहैत छी ?''

''हम तँ दरभंगा रहैत छी ।'' हम कहलियनि ।

तावत बुधना बाजल, ''मालिक ! हमरा चिन्हैत छी ?''

''तोरा किएक नहि चिन्हबौक, तोँ बुधना छेँ ने !'', हम कहलियैक ।

बुधना बाजल, ''हँ....हँ... मालिक, हम बुधने छी । कहू गाम-घरक की हाल-चाल अछि ?''

हम कहलियैक, ''तोरा गाम-घरसँ कोन मतलब छौक ? तोँ तँ बीस वर्षसँ गामो नहि गेल छेँ ।''

बुधना बाजल, ''मतलब कोना नहि रहत मालिक ! गाम तँ गामे थिकैक । जन्मभूमि तँ स्वर्गहुसँ सुन्नर होइत छैक । मुदा अहाँ तँ जनितहि छी, हमर बाप केहन लोक अछि । नीको गप्प कहबै तँ गारियेसँ बात करत । हम सब बाहर रहैत छी । टाका पठबैत छलियैक कर्जा उतारबाक लेल । ओ सबटा पीबि जाइत छल । कर्जा जस के तस रखले रहलैक । हमर जनानी किछु बाजय तँ ओकरा बेइज्जति क' दैत छलैक । ऊपरसँ लात-घूसा अलग । माय तँ किछु बजितहि नहि छल । के ओकरासँ गारि-फज्झति सुनओ ? जखन गाम गेलहुँ तँ जनानी जे कहलक से तँ कहबे कयलक, अगलो-बगलक लोक सब कह' लागल, ''विवाह अपना लेल कयने छह की बापक लेल ? जँ नीक चाहैत छह तँ अपना संगे जनानिओ कें ल' जाह ।''

साँझमे मुसहरी पर गेल छलहुँ । बाटहिमे मटरू कका भेट भ' गेलाह । हम गोड़ लगलियनि तँ अकचकाइत बजलाह, ''के बुधना ! कहिआ अयलेँ ?''

हम कहलियनि, ''कका आइये आयल छी । की हाल-समाचार छैक ?''

मटरू कका बजलाह, ''हमरा सभक की हाल-समाचार रहत ! कहुना दिन काटि रहल छी । तोहर की हाल-चाल छौक ?''

''हमहूँ ठीके-ठाक छी कका !'' हम कहलियनि ।

मटरू कका बजलाह, ''भने एहि ठामसँ चलि गेलेँ । हमरा सभक जीवन कोनो जीवन थिक ! बड़द जकाँ दिन भरि खटैत छी आ

बोनि बेर बीसटा बहन्ना । एखन साँझ क' कोठी कोना फोड़ब, आइ बुध क' लक्ष्मी कोना घरसँ बहरयतीह ? एहि ठाम इएह सब होइत छैक । जँ काज करबाक लेल अन्यत्र कतहु चल गेलहुँ तँ पता नहि की की दुर्गति होयत ? तोँ भने एहि सबसँ मुक्त भ' गेलेँ । कमसँ कम भोजन तँ समय पर करैत होयबेँ ।''

हम कहलियनि, ''हँ कका ! कमाइ-धमाइ जे होमए, मुदा खाना पुरकस होइत अछि आ सेहो फ्री । जे कमयहुँ, सोलहो आना बचत ।''

मटरू कका बजलाह, ''से कोना, एहन कोन सेठ हाथ लागि गेल छौक ?''

हम कहलियनि, ''सेठ नहि कका, ओहि ठाम एकटा गुरुद्वारा छैक । ओहिमे जखन मन भेल तँ साफ-सफाइ क' देलियैक आ भरि पेट भोजन क' लेलहुँ । ओना साफ-सफाइ करबाक कोनो नियम नहि छैक, मुदा जखन लंगर खाइत छियैक तँ अपनहि मन नहि मानैत अछि । तेँ जखन-तखन किछु ने किछु क' दैत छियैक । हमरा कॉलोनीमे करीब दू हजार लोक अछि । सभक भोजन ओतहि होइत छैक ।''

मटरू कका बजलाह, ''वाह...वाह... तखन तँ बड़ सुन्नर बात । कतेक दिन रहबेँ ?''

हम कहलियनि, ''करीब पन्द्रह दिन रहब । एखन फैक्ट्रीमे माल नहि छलैक । काम बंद छैक । तेँ चल अयलहुँ ।''

मटरू कका बजलाह, ''किछु कैंचा-कौड़ी अनलेँ की नहि ? महाजन के चुकयबेँ की नहि ?''

हम कहलियनि, ''हँ... हँ... कका ! एहि बेर चाहब जे मोटका महाजनसँ पिण्ड छुटि जाय । छोटका-तोटका जे बाँचि जायत, से दोसर बेर देखल जयतैक ।''

मटरू कका बजलाह, ''सही सोचने छेँ । ओ बड़ दुष्ट आ पाजी अछि । काजो करबा लैत अछि आ नीक जकाँ बोइनो नहि दैत अछि । जँ काज नहि करबैक तँ गारि-फज्झतिसँ तर क' दैत अछि । साप-छुछुन्नरिवला हाल भेल अछि । आब एहि बुढ़ारीमे कतौ जाइओ तँ नहि सकैत छी ।''

बुधना बाजल, ''से तँ ठीके कहैत छी काका ! हमहू तँ ओकरहि

कारण भागि पड़यलहुँ । एहि ठाम कतबहु कमाइत-कमाइत मरि जइतहुँ, तैओ महाजन धयले रहैत आ पेटक जे कष्ट होइत से ऊपरसँ ।''

मटरू कका बजलाह, ''एकटा गप्प आर । एहि बेर अपना संगे अपना जनानिओ केँ ल' जइहेँ । एहि ठाम तोहर बाप ओकरा बड़ फज्झति करैत छैक । दोसर जँ किछु बजैत अछि तँ ओकरहि पर उनटि पड़ैत छैक। ओकरा चरित्र पर सेहो लांक्षना लगबैत छैक । तेँ दोसर ओहिसँ हटले रहैत अछि । तकर ओ नाजायज फायदा उठबैत अछि ।''

बुधना बाजल, ''कका, ओहि ठाम एखन बड़ दिक्कति छैक । अपने तँ कतौ गमछो बिछा क' पड़ि रहैत छी, मुदा जनानीक लेल तँ घरक इन्तजाम कर' पड़तैक । ई एखन सम्भव नहि छैक । पहिने महाजनसँ फारकति पाबि जाइ, तखन जे जेना होयतैक से कयल जयतैक । जहिना ई सब एतेक दिन कष्ट कटलक तँ किछु दिन आर । मात्र छौ मासमे किछु ने किछु इन्तिजाम भ' जयतैक । हम प्रयासमे लागल छी । माय आ जनानी दुनूकेँ ल' जयबैक ।''

मटरू कका बजलाह, ''ओहि ठाम जँ प्लेटफार्मो पर रहतौक तँ एहि ठाम सँ नीके रहतौक । कहने छथिन ने गोसाइँजी '**बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥**'

बुधना बाजल, ''ठीक छै कका, हम विचार करैत छी ।''

ओकर बाद भोरे-भोरे बुधना महाजनक ओहि ठाम गेल । पहिने तँ बुधना महाजन सँ डेराइत छल । ओकरासँ सीधा-सीधा गप्पो नहि क' सकैत छल । मुदा तीन वर्ष बाहर रहि क' बहुत किछु सीखि गेल । कोनो दलाल के ल' क' जायत तँ ओकरहु किछु कमीशन बनतैक । ई सब सोचि बुधना एकसरे पहुँचल । ओहि समयमे महाजन दरबज्जे पर बैसल छलैक ।

बुधना बाजल, ''महाजन गोड़ लगैत छी ।''

महाजन बाजल, ''बुधना ! आइ तीन वर्ष पर कोना निन्न टुटलौ ! तू तँ करार कयने छलेँ जे साले-साल सूदि चुका देल करब, मुदा तोहर तँ दर्शनो दुर्लभ भ' गेल । कहिआ गाम अयलेँ ?''

बुधना बाजल, ''सरकार ! काल्हिये आयल छी । सोचलहुँ जे सबसँ पहिने अहीँक भेट करी । ओकर बादे कोनो अन्य काज करी ।''

महाजन बाजल, ''देह तँ खूब चिकना गेल छौक आ मोट सेहो भ' गेल छेँ । बुझाइत अछि जे खूब टाका कमा क' अनने छेँ ।''

बुधना बाजल, ''बेसी तँ नहि, तखन किछु ने किछु अवश्य अनने छी । अपनेक हिसाब कतेक होइत अछि ?''

महाजन बाजल, ''संगमे टाका ल' क' आयल छेँ की ?''

बुधना बाजल, ''नहि, एखन तँ ल' क' नहि आयल छी ।''

महाजन बाजल, ''जखन ल' क' अयबेँ, तखन हिसाब भ' जयतौक ।''

बुधना बाजल, ''हिसाब बुझि गेला पर हमरहु सहुलियत होयत । कतेक लोक तगादा क' चुकल अछि । ओही हिसाबसँ ने काज करब ! जँ अपनहिकेँ पूरा नहि भ' सकत तँ दोसरकेँ भरोस नहि ने देबैक ।''

महाजन बाजल, ''तोँ जे अनने छेँ से जमा क' दे । जखन फैनल करबेँ, तखन हिसाब भ' जयतौक ।''

बुधना बाजल, ''ओ गप्प तँ ठीक अछि, मुदा हमहू तँ बुझबैक ने जे हमरा कतेक कर्ज चुकयबाक अछि !''

महाजनकेँ बुझा गेलैक जे ई ओ बुधना नहि थीक जे तीन वर्ष पूर्व छल । ओ तँ हमरा संग एना गप्पो नहि करैत छल आ ई तँ बहुत किछु बाजि गेल । होशियारी एहीमे अछि जे एकरासँ जे टानि सकी से टानि ली ।

महाजन बाजल, ''मूर दस हजार छौक आ सूदि तीन वर्षक करीब नब्बे हजार । कुल एक लाख टाका भेलौक ।''

बुधना बाजल, ''महाजन ! ई तँ हम जिनगी भरि कमाइत-कमाइत मरि जायब, तखनहु नहि सधा पायब ।''

महाजन बाजल, ''कर्जा लेबा बेरमे नहि सोचने छलेँ ? ओहि कालमे बड़ नीक लागल होयतौक । आब बुझैत छहीँ ने, टाका कतेक मेहनतिसँ अबैत छैक । कतौ पड़ल नहि रहैत छैक जे जयबेँ आ उठा क' ल' अनबेँ ।''

बुधना बाजल, ''से गप्प तँ ठीक छैक मालिक ! टाका बड़ मेहनतिसँ भेटैत छैक, मुदा अहूँ एतेक अन्याय नहि करू । जे उचित होइ, से लिअ' । हम देबाक लेल तैयार छी ।''

महाजन बाजल, ''तखन की हम अनुचित माँग क' रहल छियौक ? उचित तँ केओ देनिहारे नहि आ अनुचित ककरा के दैत छैक ?''

बुधना बाजल, ''अनुचित तँ माँगिये रहल छी मालिक ! कोना हिसाब कयलियैक अछि, से कहू तँ ?''

महाजन बाजल, ''जे करार छलौक, सएह तँ कयलियौक अछि ।''

बुधना बाजल, ''की करार छलै ?''

महाजन बाजल, ''ओएह दस रुपये सैकड़ा, जे सभक संग... ।''

बुधना बाजल, ''एना जुलुम नहि करू मालिक ! दू रुपये, तीन रुपये तँ लेनिहार नहि अछि आ अहाँ दस रुपये.... । अहाँ तँ मुगलो-खानक बाप बहरयलहुँ ।''

महाजन सोचलक जे बात बढ़यबासँ की फायदा ? आब दिन-दुनियाँ बदलि रहल छैक । आब ओ पुरना जवाना तँ रहलैक नहि । पहिने तँ एहन छलैक जे दूटा पर जुलुम भ' रहल छैक आ बीसटा बैसि क' टुक-टुक देखि रहल अछि । मुदा आब जँ ककरहु संगे जोर-जबर्दस्ती करबैक तँ दस गोटे अनेरे घेरि लेत । ताहूमे बुधना दिल्लीक खेलल अछि । ओकर तँ बाते अलग छैक । तेँ आसानीसँ जे भेटि जाय, ल' लेबाक चाही । ओना तँ दू-ढाइ रुपैयेक हिसाबसँ लगभग बीस हजार होयबाक चाही ।

ओ बाजल, ''तोहीँ बाज बुधना, कतेक होयबाक चाही ?''

बुधना बाजल, ''हमरा बजने की होयत ? हम तँ भेलहुँ खदुका आ अपने भेलहुँ महाजन । हिसाब-किताब तँ अहीँ ने करब ! हमरा सबकेँ जँ एतेक लुरि रहैत तखन तँ दिने-दुनियाँ दोसर रहैत । पढ़बाक दिनमे तँ अहीँक ओहि ठाम चरबाही कयलहुँ ।'' ओना बुधना दिल्लीमे एक गोटे सँ हिसाब-किताब करौने छल । महाजन केर मोटा-मोटी बीस हजार होइत छलैक ।

ओ बाजल, ''हमरा हिसाबे तँ बीसक नीचे भ' रहल अछि ।''

महाजन कनेक भरिआबैत बाजल, ''ई तँ बहुत कम भ' गेलौक । एहन जँ हम लहना लगायब तँ भट्ठिये बैसि जायत ।''

बुधना बाजल, ''मालिक ! अहाँक भट्ठी की बैसत ! अहाँ तँ अपने कतेको के भट्ठी बैसा देलियैक अछि ।''

महाजन बाजल, ''ककर हम भट्ठी बैसा देलयैक ? कनेक बाज तँ... !''

बुधना बाजल, ''एकटा-दूटा थोड़हि अछि ! फकिरबा बेटीक विवाहमे बीस हजार लेलक । बाप-बेटा आ जनानी जिनगी भरि अहाँक ओहि ठाम खटैत-खटैत मरि गेल, मुदा अहाँक देल कर्जा सुरसाक मुँह जकाँ बढ़ितहि गेल । ओ मरि गेल, मुदा कर्ज मुक्त नहि भ' सकल । मनचनमा पाँच हजार टाका जनानीक इलाजमे लेलक । दिन-राति अहाँक ओहि ठाम खटैत अछि, दू सेर धान पर । की एहिसँ ओ कहिओ कर्ज मुक्त भ' सकत ? केओ बाहरो नहि जा सकैत अछि । डेग-डेग पर अहाँक लठैत मुस्तैद अछि । ओ तँ हमहीँ छलहुँ जे कोना-कोना क' भागि पड़यलहुँ । दस ठाम अहाँक आदमी रोक-टोक कयलक । मुदा हमरा संगमे एकटा कपड़ो नहि छल । तेँ भाग'मे सफल भेलहुँ । मात्र एकटा धोती आ गंजी पहिरि हम दिल्ली स्टेशन पहुँचल छलहुँ । गुलबिया, गम्हरिया, सुकना सभक तँ ओएह हाल छैक, कतेक के गनाउ ?''

महाजन बाजल, ''एहिमे हमर कोन दोष ? हम ओकरा बलजोरी तँ टाका देबाक लेल नहि गेलियैक । ओ स्वयं हमरा ओहि ठाम आयल छल । नहि दितियैक तखनहुँ तँ लोक इएह कहैत जे केहन चाण्डाल अछि, दोसराक बेरो-बेगरता नहि बुझैत अछि आ देलियैक तैओ हमरहि दोष ।''

बुधना बाजल, ''नहि-नहि, एहिमे अहाँक कोनहु दोष नहि । दोष तँ हमरा सभक कपारक अछि । गरीब घरमे जन्म भेल, दुःख तँ काटहि पड़त । अहाँ तँ मात्र हमरा सभक मजबूरीक फायदा उठौलहुँ । खैर, छोड़ू एहि गप्पकेँ । बाजू ने कतेक द' दिअ' ?''

महाजन बाजल, ''पचीस हजार द' दे ।''

बुधना बाजल, ''एखनहुँ बेसी अछि ।''

महाजन बाजल, ''तखन तोरे हिसाब, ला बीसे हजार, मुदा फेर कहिओ हमरा लग नहि अबिहेँ कर्ज मँगबाक लेल ।''

बुधना (बीस हजार रुपैया डॉड़सँ बहार करैत) बाजल, ''एहि जन्ममे तँ नहिए आयब । तखन अगिला जन्मक गप्प कहि नहि सकैत छी । टाका देलाक बाद बुधना कागत मँगलक तँ महाजन बाजल, ''कागत

पता नहि कत' राखल छैक, बादमे ल' जइहें ।''

बुधना बुझैत छल जे महाजन कागतो आपस करबामे कमसँ कम दस दिन घुराओत आ बेगारी जे कराओत से ऊपरसँ । तें एखनहि कागत लेब आवश्यक अछि । ओ बाजल, ''तखन ई टाका लाउ । जखन कागत भेटि जायत, हम तखने आयब ।''

महाजन भीतर गेल आ कागत ताकि बुधनाकें आपस कयलक । बुधनाकें जे किछु आर देनदार छलैक, सभक टाका चुका देलक । किछु टाका बापक हाथमे खर्चा-बर्चा लेल देलक । बुधना माय आ जनानीकें ल' क' दिल्ली आबि गेल । ओहुना बाप दोसर भाय केर हिस्सामे छलैक आ माय बुधनाक हिस्सामे । दिल्लीमे तीनू गुरुद्वाराक बगलमे रह' लागल । गुरुद्वारामे तीनूकें लंगर तँ भेटिये जाइत छलैक, मुदा रहबामे बहुत दिक्कत होइत छलैक । दस दिन कहुना गुजर कयलक । ओकर बाद एकटा झुग्गीक जोगाड़ कयलक । बुधना बाजल, ''ओहि झुग्गीकें बनयबामे नेताजी बड़ मदति कयलनि । नेताजी बड़ नीक लोक छथि, आ अपनहि इलाकाक छथि । इमानक तँ एकदम पक्का, बुझू सत्यवादी हरिश्चन्द्रे छथि ।''

'एहि युगमे नेता आ सत्यवादी हरिश्चन्द्र ! तोरा अवश्य धोखा भेल होयतौक ।'' हम कहलियैक ।

बुधना बाजल, ''नहि, नहि मालिक ! हम एकदम सत्य कहैत छी । ओ हमरासँ पहिने दिल्ली अयलाह । हुनकहु शरणस्थली इएह गुरुद्वारा छनि । एहि ठामक सरदार सब जकरा ओहि ठाम काज करैत छी, बजैत अछि, 'एहेन इमानदार लोक भेटब दुर्लभ अछि । मात्र एकटा धोती आ गंजी पहिरि क' आयल छल आ एहि ठामक गुरुद्वाराक साफ-सफाइमे लागि गेल । गुरुक कृपासँ सब किछु पओलक । धीरे-धीरे नेता बनि गेल । ओकरासँ पुलिस-तुलिस सब डेराइत अछि । काज तुरंत करा दैत छैक ।'

हम पुछलियैक, ''अच्छे ! एहन नेता छथि, की नाम थिकन्हि हुनकर ?''

बुधना बाजल, ''हुनकर नाम छन्हि रघुवंश झा । हमरहि सभक झुग्गीमे घर छन्हि । आब तँ सरकारी बंगलामे रहैत छथि, मुदा कहिओ काल क' आबि जाइत छथि आ सबसँ भेट क' हाल-चाल पुछैत छथि ।''

हम बुधनाकें पुछलियैक, ''आब ई कह जे आब तँ कर्जा-बर्जा सधि गेलौक । आब गाम किएक नहि जाइत छें ?''

बुधना बाजल, ''मालिक ! ओना तँ गाम गामे होइत छैक । ओकरा तुलनामे दोसर स्थान तुच्छ अछि । ओतहि जन्म लेलहुँ आ ओत' नहि किएक जायब ? मुदा गाम जयबाक नामे रोआँ काँपि उठैत अछि ।''

हम पुछलियैक, ''से किएक ?''

बुधना बाजल, ''मालिक ! महाजनकें कर्जा रखने छलियैक । एखनहु जायब तँ ओकर काज करहिटा पड़त । ई ओकर ओसूल छैक आ सेहो आधा मजदूरी पर । सेहो कहिओ देत, कहिओ नहि । जहिया ओकर मन होयतैक, तहिया देत । सूदिमे कोनो कमी नहि करत ।

एक दिनक गप्प छैक । हमरा घरमे खयबा-पीबाक लेल किछु नहि छल । सात दिनसँ महाजनेक बेगारी क' रहल छलहुँ । महाजन बोइन देबामे टार-बहटोर क' रहल छल । जँ खायब नहि तँ कमायब कोना, आ कथी लेल कमायब ? हम एकटा दोसर किसानक ओहि ठाम काज करबाक लेल चल गेलहुँ, जाहिसँ तुरंत बोइन भेटि जाइत । ओत' सँ आबि राशन-पानि ल' क' आँगन अयलहुँ आ जनानीकें भानस बनेबाक लेल कहलियैक । तावत महाजनक आदमी बजाबक लेल पहुँचि गेल । हम दिन भरिक भूखल छलहुँ । मन नीक नहि लागि रहल छल । कतेको बहाना बनौलहुँ । ओ जबर्दस्ती हमरा पकड़ि क' ल' गेल । ओहि ठाम महाजन हमरा अपने इच्छे खूब पिटलक । बचओनिहार केओ नहि, जखन कि ओहि ठाम चारि-पाँच गोटे ठाढ़ छल । ओ सब टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेल । जखन ओ थाकि गेल, तखन छोड़लक । हम तँ बुझू बहोश भ' गेलहुँ । आँखिक आगाँ अन्हार भ' गेल ।

कतेक कालक बाद जखन होश भेल, तखन कहुना क' लड़खड़ाइत आँगन अयलहुँ । एहि ठाम सब केओ कानि रहल छल । हमरा जखनहि महाजनक आदमी पकड़ि क' ल' गेल, सबकें तखनहि एहि बातक आभास भ' गेल छलैक । मुदा सब विवश छल । हमर हालत देखि हमर माय आ जनानी चीत्कार क' उठल । हमरा आँगनमे भीड़ लागि गेल । सब महाजन कें जे से कह' लागल, मुदा पीठक पाछुए । प्रत्यक्ष रूपें कहबाक

साहस ककरहुमे नहि छलैक । हम ताही खन निश्चय कयलहुँ जे गाम छोड़ि देब, आ जेना-तेना कमा क' पहिने महाजनक कर्जसँ मुक्त होयब । तखन किछु आर करब आ दोसरे दिन हम बिना ककरहु किछु कहने एहि ठाम चलि अयलहुँ ।''

हम पुछलियैक, ''तोरा संगे जे किछु भेलौक वा अन्यक संग होइत छैक, तकर केओ निराकरण कयनिहार नहि अछि ? की ओहि ठाम कोनो पुलिस चौकी नहि छैक ?''

बुधना बाजल, ''मालिक ! सब किछु छैक । पुलिसो चौकी छैक, मुदा अपना देशक पुलिसक विषयमे अहाँ नहि जनैत छी । ओहो पैसेवलाक संग दैत छैक । हमरा सब, जकरा खयबो पर आफत छैक, पुलिसक स्वागत-सत्कार कोना क' सकैत अछि ? ओहो ऊपरसँ हमरहि सबकेँ दुर्गति क' देत ।''

हम पुछलियैक, ''आब गाममे रहबाक विचार छौक की नहि ?''

बुधना बाजल, ''नहि मालिक ! गाम यदा-कदा जायब तँ अवश्य, मुदा असालतन रूपेँ नहि । आब तँ एहि ठाम अपन झुग्गी भ' गेल । धिया-पूताकेँ पढ़ायब, मनुक्ख बनायब, जे गाममे रहि सम्भव नहि अछि । कोशिशमे छी जे बाप आ भायकेँ सेहो बजा ली । एहि ठाम कमायत तँ कमायत आ जँ नहिओ कमायत तँ भूखल तँ नहि मरत ।''

हम पुछलियैक, ''से कोना, एहि ठाम तोहीं खुएबही की ?''

बुधना बाजल, ''हमरा ओतेक सामर्थ्य कत' अछि ? तखन गुरुद्वाराक कृपा छैक ने ! एहि ठाम चारू कात दू कोसक लोक भूखल नहि सुतैत अछि ।''

हम पुछलियैक, ''एतेक लोकक भानस के करैत छैक ?''

बुधना बाजल, ''हमरहि सभक बीच जकरा कोनो काज नहि रहैत छैक, जेना जनानी सब जे काज कर' गेल से गेल, जे नहि गेल लंगर बनयबामे लागि जाइत अछि ।''

हम सोचलहुँ, बुधना दिल्ली आबि क' कतेक बुधियार भ' गेल अछि ! ओकर विचार बदलि गेलैक अछि । बाहरक हवा लगितहि ओकर बौद्धिक विकास भ' गेलैक । मूर्ख रहितहुँ एकर कतेक उच्च सोच छैक ।

इएह तँ अंतर छैक गाम आ शहरमे । बुधनाक बाप-भाय जे गाममे अछि, ओकर एहेन सोच कहाँ छैक ? संगतसँ लोक बर्बादो होइत अछि आ संगतसँ नीको भ' जाइत अछि । तेँ संगत सदैव नीक लोकक करबाक चाही । गामक लोकक तुलना इनारक बेंगसँ कयल जाइत छैक, से यथार्थे अछि ।

हम पुछलियैक, ''बुधना ! कुकूर पोसने छेँ, की नहि ?''

बुधना बाजल, ''से किएक मालिक ! गाय-महींस पुछितहुँ तँ अलगे गप्प छल । कुकूरक विषयमे पुछि रहल छी ?''

हम कहलियैक, ''दिल्लीमे हम जतेक लोककेँ देखलहुँ, सब कुकूरक स्वामी छथि । तेँ मनमे एहि तरहक जिज्ञासा भेल ।''

बुधना बाजल, ''पोसने तँ नहि छी, मुदा तीन-चारिटा अनेरुआ झुग्गीक सोझाँमे पेटकान देने रहैत अछि । किछु ने किछु खयलाक बाद ओकरहु लेल नेने अबैत छियैक ।''

हमरा मनमे संतोष भेल जे इहो बिना कुकूरक नहि अछि ।

9

दिल्ली आयल छलहुँ तँ विचार भेल जे एक दिन रघुवंश बाबूक भेट करी । रघुवंश बाबू दिल्लीमे विधायक छथि आ नीक सामाजिक कार्यकर्त्ता सेहो । संगहि इलाकाक लोक सेहो छथि । बहुत नाम सुनैत छियनि । बुधनो बड़ प्रशंसा कयने छल । मुदा ओ अपना इलाकाक लोकसँ भेट नहि करैत छथि । हमरा मनमे आर उत्सुकता बढ़ि गेल । एकर कारण की भ' सकैत अछि । लोक इलाकाक लोकसँ भेट करबाक लेल ललायल रहैत अछि, मुदा रघुवंश बाबू एतेक बेरूछ किएक ? अवश्य कोनो ने कोनो पैघ व्यथासँ व्यथित होयताह । गप्पक तहमे जायब उचित बुझायल । हुनकर दिनचर्या छन्हि, नित्य आठ बजेसँ दस बजे धरि क्षेत्रक लोकक भेट-घाँट करैत छथि, ओकरा सभक दुःख-दर्द सुनैत छथि, ओकर समाधान करबाक चेष्टा करैत छथि । दस बजेक बाद अपन अन्य कार्यमे लागि जाइत छथि । रवि दिन क' ओ ककरहुसँ भेट नहि करैत छथि । अपन पूर्ण

समय अपना परिवारक संग व्यतीत करैत छथि । हम एकटा सरदारजीक संग हुनका अतिथिशालामे पहुँचि गेलहुँ । ओ सरदारजी हुनकर अंतरंग छलथिन्ह । हुनकासँ गप्प-शप्प भेलाक बाद ओ हमरा दिश इशारा करैत सरदारजीसँ पुछलथिन्ह, ''ये कौन हैं ?''

सरदार जी किछु बजितथि, ताहिसँ पूर्व हम बजलहुँ, ''श्रीमान् हमर घर मधुबनी भेल ।''

नेताजी साकांक्ष भ' गेलाह आ पुछलनि, ''मधुबनीमे कत' ?''

हम हुनका दूरक एकटा गामक नाम कहि देलियन्हि । ओ बजलाह, ''हमरा पहिनेसँ चिन्हैत छलहुँ ?''

हम कहलियन्हि, ''जी नहि श्रीमान् !''

नेताजी बजलाह, ''भेटक कोनो प्रयोजन ?''

हम कहलियन्हि, ''जी नहि, मात्र औपचारिकता । अपनेक विषयमे सरदारजीसँ बहुत-किछु सुनल । तेँ भेट करबाक उत्सुकता भेल ।''

नेताजी पुछलन्हि, ''अपने की करैत छी ?''

हम कहलियन्हि, ''हम सेवानिवृत्त कर्मचारी थिकहुँ । वर्त्तमानमे साहित्यक सेवा क' रहल छी । एहि ठाम बालक रहैत छथि । हुनकहि लग आयल छी आ हिनकहि घरमे किरायादार छी ।''

नेताजी बजलाह, ''ठीक छैक, एखन तँ हम विशेष गप्प नहि क' सकैत छी । बहुत लोक प्रतीक्षामे छथि । सभक सुनब आ समाधान करब आवश्यक छैक । अपने रवि दिन आउ, ठीक दस बजे ।''

हम कहलियन्हि, ''मुदा श्रीमान् ! अपने तँ रवि दिन ककरहु दर्शन नहि दैत छियैक । तखन हम... ।''

नेताजी बजलाह, ''रवि दिन हम काजक क्रममे ककरहुसँ भेट नहि करैत छियैक । ओहि दिन हम अपन व्यक्तिगत काज करैत छी । अपनेसँ गप्प-शप्प करब हमर व्यक्तिगत कार्यमे अबैत अछि । तखन हँ, पलखति होयबाक चाही । जँ अनायास कतहु बाहर चलि गेलहुँ तँ अहाँके आपस जाय पड़त ।''

हमहूँ उठैत नमस्कार कयल आ बाहर आबि गेलहुँ । गप्पक क्रममे हम विधायकजीकेँ जेहने सरदारजी बखान कयने छलाह, ओहने

पाओल । ओ नेता कम, समाजसेवी बेसी छलाह । हुनकर गामक लोक जे हुनका विषयमे बखान करैत छल, ठीक ओकर विपरीत । रवि दिन ठीक दस बजे नेताजीक आवास पर पहुँचलहुँ । ओहि दिन हमरा संगे सरदारजी नहि छलाह । हम एकसरे छलहुँ । गेट पर पहुँचि दरबानकेँ पुछलियैक, ''नेताजी छथुन्ह ।''

दरबान बाजल, ''छथि तँ, मुदा आइ ककरहुसँ भेट नहि करैत छथि ।'' हम एकटा पुर्जी पर अपन नाम लिखि क' देलियैक आ कहलियैक, ''ई पुर्जी कनेक हुनका द' अबियन्हु ।''

दरबान भीतर गेल आ नेताजीकेँ पुर्जी देलकन्हि । नेताजी अपनहि अयलाह । हुनकर भेष-भूषासँ हम अति प्रसन्न भेलहुँ । धोती-कुर्त्ता आ पयरमे खराम । ठीक ओहिना जेना मिथिलामे देखैत छी । हम नेताजीक संग भीतर गेलहुँ । भीतर हुनकर कनियाँ आ बच्चा सब छलथिन्ह जे सभ सम्भवतः कोनो छुट्टीमे आयल छलथिन्ह । गप्पक क्रममे बुझना गेल जे बेटा-बेटी बाहर रहिक' पठन-पाठन करैत छथिन्ह । हम आ नेताजी दुनू गोटे हॉलमे आरामसँ बैसलहुँ आ गप्प-शप्प शुरू भेल ।

रघुवंशजी बजलाह, ''कहू, अहाँ की बूझ' चाहैत छी ?''

हम कहलियन्हि, ''हम ई बुझ' चाहैत छी जे अपने एहि ठाम धरि कोना पहुँचलहुँ ?''

रघुवंशजी बजलाह, ''औजी ! अहाँ साहित्यकार थिकहुँ की पत्रकार ? खैर एहि ठामक की अभिप्राय, दिल्ली वा नेतागिरी ?''

हम कहलियन्हि, ''दुनू, एहि लेल जे नेतागिरी लोक समाजमे अपन रोब-दाब बनयबाक लेल करैत छथि । गामसँ दूर आबि, अपना समाजसँ दूर आबि, एतेक स्वच्छ आचरणक निर्वहन करैत, एतेक भारी जन समर्थन पओलहुँ । ई बिरले देखबामे अबैत अछि ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''सबसँ पहिने ई कहू, जे अपनेक घर कत' भेल ?''

हम कहलियन्हि, ''उफरदाहा ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''ई तँ दरभंगा जिलामे छैक ! मुदा ओहि दिन तँ अपने मधुबनीक जिक्र कयने रही ।''

हम कहलियन्हि, ''ओहि दिन हम अर्द्धसत्यक प्रयोग कयने रही ।''

रघुवंश जी बजलाह, ''अर्द्धसत्य... माने आधा झूठ... ?

हम कहलियन्हि, ''जी ! आधा झूठ एहि लेल जे हम सकरीमे सेहो मकान बनौने छी आ सकरी मधुबनी जिलामे छैक ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''देखू, हमरा झूठ आ झूठ बजनिहारसँ अत्यन्त घृणा अछि । हम जीवनमे एकहिटा काज कयल अछि । झूठक सहारा कखनहुँ नहि लेलहुँ अछि । आ अपना धियो-पूताकेँ हम इएह शिक्षा दैत छियैक । अहाँ जे किछु करब से करब, मुदा झूठक सहारा नहि लेब ।''

''हमरा ई गप्प बुझल अछि ।'' हम उत्तर देलियन्हि ।

रघुवंशजी बजलाह, ''तखन अपने झूठक सहारा किएक लेल ?''

हम कहलियन्हि, ''एहि लेल जे अपनेसँ गप्प-सप्प भ' सकत । अपनेक विषयमे विस्तृत जानकारी प्राप्त क' सकब । जँ हम सत्य बजितहुँ तँ अपनेसँ साक्षात्कार नहि भ' सकैत ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''मुदा झूठ बाजि क' हमरा कतेक पैघ कष्ट देलहुँ, तकर आभास अछि अहाँकेँ ?''

हम कहलियन्हि, ''अपनेकेँ कष्ट भेल, एहि लेल हम क्षमा चाहैत छी, मुदा हमरा अपनेसँ भेट करबाक उत्कट इच्छाक दोसर विकल्पो तँ नहि छल । तेँ प्रपंचक सहारा लेब' पड़ल ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''जँ हम एखनहुँ अहाँकेँ कोनो जानकारी नहि दी, तँ...''

हम कहलियन्हि, ''हमरा बहुत वस्तुक जानकारी अहाँसँ भेट केर पूर्वहि भ' गेल । अपनेक समक्ष आबि ओकर पुष्टि सेहो भ' गेल । तखन शेष सामग्री तँ कल्पनोक आधार पर तैयार कयल जा सकैत अछि ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''अहाँ बड़ मनलग्गू लोक छी । ओना तँ हम एहि विषयमे एखन धरि ककरहु किछु नहि कहने छी । हमरा कनियाँ वा धियो-पूताकेँ किछु नहि बुझल छैक । मुदा अहाँकेँ हम निराश नहि करब । हम सब किछु अहाँकेँ कहब, मुदा एकटा शर्त अछि ।'' ''शर्त... केहन शर्त ?'' हम पुछलियन्हि ।

रघुवंशजी बजलाह, ''शर्त इएह जे ई गप्प ने कतहु छापब आ ने ककरहु लग प्रकट करब ।''

''से किएक ?'' हम पुछलियन्हि ।

रघुवंशजी बजलाह, ''हम एहि प्रकरणकेँ हरियर नहि कर' चाहैत छी । हम नहि चाहैत छी जे हमरा विवशता पर लोककेँ हँसबाक अवसर भेटैक । हम नहि चाहैत छी जे हमर भूतकाल केओ अन्य बुझए । हम ओ देश आ परिवेश दुनू बिसर' चाहैत छी । तेँ हम गाम-घर सबकेँ त्यागि देलहुँ । ने हम ककरहु चिन्हैत छियैक आ ने हमरा केओ चिन्हैत अछि ।''

हम कहलियन्हि, ''लोक कहैत अछि, जननी जन्मभूमिश्च...''

रघुवंशजी बजलाह, ''ओ कहब एकदम यथार्थ अछि, मुदा ओकरा लेल जे जिबैत अछि । ओना अध्यात्मक अनुसार देह मरैत अछि, आत्मा नहि । मुदा हमर तँ ओहि ठाम आत्मे ने मरि गेल जाहि ठाम हमरा सिद्धान्तक बलि चढ़ा देल गेल, हमर सत्य-निष्ठाक अनादर भेल, ओ स्थान हमरा लेल नरकहुसँ अधलाह अछि ।''

हम कहलियन्हि, ''हम अपनेक शर्त मानि सकैत छलहुँ, मुदा नहि मानब ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''से किएक ?''

हम कहलियन्हि, ''जँ हम अहाँक शर्त मानि लेब तँ ककरहु संग अन्याय होयतैक ।''

रघुवंशजी पुछलन्हि, ''ककरा संग अन्याय होयतैक ?''

हम कहलियन्हि, ''एक सच्चरित्र, सत्यवादी, कर्त्तव्यनिष्ठ आ सर्वगुणसम्पन्न नेताक संग । अहाँ जनैत छी, समाजमे नेताक प्रति लोकक की अवधारणा छैक । ओ कुकूरसँ ओकर तुलना करैत अछि आ किछु हद तक हम ओकरा उचित बुझैत छी । जहिना कुकूर कौराक लेल नाङरि डोलबैत अछि, तहिना नेता वोटक लेल, अपन स्वार्थक लेल ओकर अनुसरण करैत अछि । मुदा अहाँक चरित्र एकर विपरीत अछि । एकरा जँ उजागर नहि कयल जायत तँ लोक कोना बूझत जे नेता एहनो होइत छैक । अहाँ भने बिसरि गेलहुँ वा बिसरबाक चेष्टा करैत होयब, मुदा अहाँक ग्रामीण सभ अहाँकेँ नहि बिसरल अछि । ओकरा सभक दृष्टिमे अपने

घमंडी, स्वार्थी आ विवेकहीन छी । ओकरा सभके ँ ई नहि विदित छैक जे कोन स्थितिमे अहाँ गामसँ पड़यलहुँ । कतेक कठिनतासँ अपन गन्तव्य प्राप्त कयलहुँ । ओ सभ तँ अहाँके ँ शिखर पर देखि अपन स्वार्थक पूर्तिक लेल प्रयास कयलक आ ओहिमे विफल भेलाक बाद अहीँ क ऊपर स्वार्थी होयबाक आरोप लगौलक । ई तँ अहाँक प्रति दुष्प्रचार अछि । तेँ हम एहि वस्तुस्थितिके ँ अपना लेखनीक माध्यमसँ सभक बीचमे ल' जायब । हँ, एतेक हम अवश्य करब जे स्थान, पात्रक नाम आदि बदलि देब । अहाँक नामक चर्चा कतहु नहि करब ।''

रघुवंश जी बजलाह– ''ठीक छैक, तखन सुनू– हमर बाबूजी दू भाय छलाह । हम मात्र हुनक एकलौता संतान छलियन्हि आ हमरा पित्तीके ँ सातटा पुत्र छन्हि । हमर बाबूजी, जखन हम मात्र एगारह वर्षक छलहुँ, स्वर्गीय भ' गेलाह । हम छठम वर्गमे गामेक स्कूलमे पढ़ैत छलहुँ । हमरा परिवारक नियंत्रण हमर पित्तीक हाथमे आबि गेलन्हि । ओ हमरा दुनू माय-बेटाके ँ नजरि पर चढ़ौने रहैत छलाह । मुदा गामक लोकक लाजे-लेहाजे खुलि क' नहि बजैत छलाह । हमरा पढ़ाइ-लिखाइमे सेहो दिक्कत होम' लागल । हम कहुना क' बी.ए. पास कयलहुँ । हमरा पढ़ाइमे पाँच बीघा खेत बिकि गेल, जेना कि हमर पित्ती बजैत छलाह । बादमे विदित भेल जे ओ खेत हमरा माँ केर द्वारा काकीक नाम पर लिखाओल गेल । हुनक एकहुटा बालक नहि पढ़लकन्हि । सब गामहिमे अबंड जकाँ एम्हर-ओम्हर करैत छन्हि । हमर अभिरुचि सब दिनहिसँ समाज-सेवामे छल । गामक गरीब-गुरबा, बूढ़-सूढ़क लेल ब्लौक जा क' ओकरा हकक लड़ाइ लड़ैत छलहुँ । हमर आचरणसँ सब केओ प्रभावित छलाह । हमरा सब केओ मुखिया बनाब' चाहैत छलाह । मुदा हम ओहि लेल तैयार नहि भेलहुँ ।''

हम कहलियैक, ''मुखिया बनलाक बाद चमचा सभक पेट भरबामे लागि जायब । उपेक्षितक सेवा अपेक्षानुकूल नहि क' पायब ।''

ओकर बाद दोसर गोटे मुखिया बनलाह । ओ सबटा योजना पेटेमे राखब शुरू क' देलथिन । ओहिमे सँ किछु-किछु हमरा पितिऔतके ँ सेहो दैत रहलथिन, एहि लेल जे हमरा द्वारा ओकर विरोध नहि होइक । बुझू तँ हमर पितिऔत ओहि मुखियाक प्रमुख सलाहकार छलाह, जनिका नीक

जकाँ अपन नामो लिखब नहि अबैत छलन्हि । किछु दिनक बाद इन्दिरा आवासमे घपलाबाजी भेलैक । जे प्रबल हकदार छल, से वंचित रहि गेल आ जे सभ ओहि कोटिमे नहि अबैत छल, से सभ लाभान्वित भ' गेल । सम्पूर्ण इलाकामे गप्प गुलगुला गेलैक । किछु गोटे हमरहु लग अयलाह । हम मुखियासँ गप्प कयलहुँ । ओ गोल-मटोल गप्प कयलक । हम तँ सोझ-साझ लोक छलहुँ । हम गामक चक्रचालि बुझि नहि पओलहुँ । हम आवेदन तैयार क' क' बी.डी.ओ. साहेब लग गेलहुँ । बी.डी.ओ. साहेब निरीक्षण करबाक लेल अयलाह, मुदा जे शिकाइत कयने छलाह, कोनो गोटे नहि अयलाह । निरीक्षणक कोनो निष्कर्ष नहि बहरायल । बी.डी.ओ. साहेब सेहो हमरहि डीमोरलाइज कयलनि । जखन गाम पर अयलहुँ तँ पितिऔत सब अलगे जे-से बाजब शुरू क' देलक । हमरा आ हमरा मायक संग जे व्यवहार भेल, तकर वर्णन नहि कयल जा सकैत अछि आ ने ओ हम अहाँके ँ कहि सकैत छी । हमरा घृणा भ' गेल ओहि समाजसँ जकरा लेल हम किछु कर' चाहैत छलहुँ । कहबी छैक, *जकरा लेल कनलहुँ, ओकरा आँखि नोरे नहि* । हमरा लग मात्र दूटा विकल्प बाँचि गेल । एक तँ आत्महत्या क' ली, दोसर ओहि ठामसँ पड़ा जाइ । जँ आत्महत्या करब तँ लोक कायर बूझत आ माय कत' जयतीह ? तेँ दोसर विकल्प पर विचार कयल । हम माँके ँ सब गप्प कहलियनि आ इहो कहलियनि ? जे हम बाहर जा रहल छी, अहाँ कनेक दिक्कत-शिक्कत काटि क' रहब । हमर माय हमरा आज्ञा द' देलनि । हम वर्ष 1982 मे दिल्ली आबि गेलहुँ । दिल्ली अयबासँ पूर्व हमरा संगमे मात्र दू सय टाका छल । हम ओहिमे सँ पचास टाका मायके ँ द' देलियनि । माय तँ टाका नहि लैत छलीह ।

ओ बजलीह, ''हमर दिन तँ कहुना कटि जायत । तोँ बाहर जाइत छह, ई टाका तोहीँ राखह ।''

मुदा हम बुझा-सुझाक' हुनका पचासटा टाका द' देलियन्हि आ एक सय पचास टाका ल' क' दिल्ली विदा भेलहुँ । दिल्ली स्टेशन पहुँचला पर हमरा लग मात्र बीसटा टाका बाँचि गेल । एहि बीस टाका मे हम कत' आ कोना जायब ? ने कोनो गन्तव्य छल आ ने कोनो साधन । हम अपना इष्टक स्मरण करैत पैदल विदा भेलहुँ । राति नौ बजैत छलैक ।

गाम-घरक लेल तँ बहुत राति भ' गेलैक, मुदा दिल्लीक लेल एकरा साँझे कहल जयतैक । रोशनीक प्रचुर व्यवस्था छलैक । चलैत-चलैत थाकि गेलहुँ । भूख आ पियास सेहो बड़ जोरक लागल छल । कनेक सुस्तेबाक इच्छा भेल । कनेक दूर पर बहुत भीड़ लागल देखलियैक । आकार-प्रकारसँ कोनो मंदिर बुझना गेल । सहटि क' लग अयलहुँ आ पुछला पर पता लागल जे गुरुद्वारा थीक । ओहि ठाम प्रसाद बाँटल जा रहल छलैक जकरा पंजाबी भाषामे लंगर कहल जाइत छैक । ओकर मात्रा पर्याप्त छलैक । बुझू तँ एक गोटेक भोजने छल । मुदा हमरा सभक लेल ओकरा जलखैये बुझू । भूख तँ बड़ जोरसँ लागल छल आ संगमे ओतेक कैंचो तँ नहि छल । मँगबामे लाज सेहो होइत छल । हम सीढ़ीक बगलमे ठाढ़ भ' गेलहुँ । एकटा सरदारजी हमरा हाथमे ओ प्रसाद राखि देलनि । हम तँ सकपकयलहुँ, मुदा ओ जबर्दस्ती द' देलनि । हम ओकरा खा क' हाथ धोलहुँ । लंगरमे पाँचटा पूरी आ बेस तरकारी छलैक । भोजन बड़ रुचिगर लागल । ओना तँ ततेक भुखायल छलहुँ जे ओहि क्षण मड़ुओक रोटी नीके लगैत । ओ बड़ स्वादिष्ट छलैक । गामक बाद अही ठाम नीक जकाँ भोजन भेटल । जल पीलाक बाद मन तृप्त भ' गेल । तावत राति करीब एगारह बाजि गेल रहैक । पेट भरलाक बाद निन्न सेहो अबैत छैक आ ट्रेनक झमारल सेहो छलहुँ । ओही ठाम गुरुद्वाराक सीढ़ी पर गमछा ओछा क' पड़ि रहलहुँ । भोर कखन भेलैक से किछु नहि बुझलियैक । हमर निन्न तखन टुटल जखन भोरे एकटा सरदारजी हमरा उठौलनि। हुनकर नाम छलनि हरनाम सिंह । सम्भवत: ओ गुरुद्वाराक प्रमुख छलाह, जेना कि हुनक गप्प-शप्प सँ बुझायल । ओ हमरासँ सब परिचय ल' आ आन कोनो आश्रय नहि देखि गुरुद्वाराक साफ-सफाइमे लगा देलनि । हम नित्य गुरुद्वाराक साफ-सफाइ अपन दायित्व बुझि कर' लगलहुँ । भोजन सेहो लंगरक रूपमे दुनू साँझ भेट' लागल, सेहो इच्छानुसार । हमरा काजसँ हरनाम सिंहजी बड़ प्रभावित भेलाह आ तीन-चारि दिनक बाद हमरा लेल गुरुद्वाराक खर्चसँ एकटा झुग्गी बनबा देलन्हि । ओ झुग्गी गुरुद्वाराक बगलेमे छलैक, जत' पहिनहिसँ करीब पाँच सय झुग्गीधारी बसल छलैक । एही बीचमे गुरुद्वाराक मुंशी कतहु बाहर चलि गेल । ओहो काज हरनाम सिंह हमरहि सौंपि देलन्हि । हमर

दिनचर्या बनि गेल, भोरे उठि गुरुद्वाराक साफ-सफाइ, लंगरक इन्तजाम, आमद-खर्चक हिसाब-किताब, लंगरमे खायब आ झुग्गीमे रात्रिविश्राम करब । एकटा संतक वचन अछि, 'जखन केओ ककरहु एकटा बाट बन्न करैत अछि, तँ भगवान ओकरा लेल अनेक द्वारा खोलि दैत छथिन ।'' एकर हम प्रत्यक्ष प्रमाण देख' लगलहुँ ।

एक मास बितलाक बाद हरनाम सिंह हमरा बजौलनि आ हमरा हाथमे एक सय टाका थम्हा देलनि । हमरा तँ किछु बुझबामे नहि आयल । हम कहलियन्हि, ''हम एकर अर्थ नहि बुझल ।''

ओ बजलाह, ''जब तक आप कोई दूसरा काम नहीं करते हो, तब तक गुरुद्वारा की ओर से तुम्हें सौ रुपया माहबारी मिलेगा । जब तुम नौकरी करोगे, फिर तुम जो कुछ भी देना चाहोगे, गुरुद्वारा में दे सकते हो । यही यहाँ का नियम है ।''

हम टाका राखि लेलहुँ आ मुस्तैदीसँ अपन काज कर' लगलहुँ । एक दिन नगर निगम सँ किछु लोक आयल आ झुग्गी तोड़ब शुरू क' देलक । पाँच-दसटाकेँ तँ तोड़िओ देलकैक । तावत हल्ला भ' गेलैक । चारू कातसँ सब केओ दौड़ल । पुरुष सब तँ जत' तत' काज करबा लेल चलि गेल छल, मुदा स्त्रीगण जे ओहि क्षण अपना झुग्गीमे छलीह, सब ओकरा घेरि क' हल्ला करब शुरू कयलनि ।

शोर सुनिक' हमहूँ पहुँचि गेलहुँ । हमरा संगे चारि-पाँचटा सरदारजी सेहो आबि गेलाह । सब केओ मिलिक' नगर निगम कर्मचारी सभकेँ भगौलहुँ आ दोसर दिनसँ आंदोलन शुरू क' देलहुँ । ओहि ठामक लोकक हमरा पूर्ण समर्थन भेटल । जकरा सभक झुग्गी छलैक, से सभ तँ हमरा संगे रहबे करए । ओहि ठामक जे दोकानदार वा अन्य गृहस्वामी छल, ओकरहु समर्थन भेटल । कारण ओकरहु आधार तँ ओएह झुग्गी-बस्ती छलैक । केओ कतहु चौका-बर्त्तन केर काज करैत छल तँ केओ भानस-भातक । सब किछु ने किछु अवश्य करैत छल । तेँ हमरा सभक पूर्ण सहयोग भेटल । कतेको दिन रोड जाम कयलहुँ । डी.एम., एस.पी. सब आबिक' आश्वासन देलन्हि जे झुग्गी नहि तोड़ल जायत । यद्यपि जत' झुग्गी छल ओ सरकारी जमीन छल । गुरुद्वारा रहबाक कारणे ओकर रौनक

बढ़ि गेल छलैक । तेँ कोनो बिल्डर लीज पर ल' क' एतेक खेला करा रहल छल । एकर पता हमरा सभकेँ बहुत बादमे लागल ।

आन्दोलनक क्रममे एस.पी. साहेब एक दिन हमरा उठा क' अपना कार्यालय ल' अयलाह । प्रतिक्रियामे ओहि ठामक लोक सब पटिया, चादरि, जकरा जे किछु भेटलैक, ओछा क' मुख्य सड़क पर सूति रहल । आधा घंटामे करीब दस किलोमीटर धरि गाड़ीक लाइन लागि गेलैक । एहन जाम कहिओ नहि भेल छलैक, जेना कि लोक सब बजैत छल । कतेको नेता सभ सेहो ओहि जाममे फँसि गेलाह । एकर चर्चा संसदमे सेहो भ' गेल । प्रशासन तबाह भ' गेलैक । अंततः नगर निगम लिखित करार करबाक लेल तैयार भेल । मुदा ओहि ठामक लोक कहलकैक जे एहि पर झुग्गीधारीक दिशसँ दस्तखत रघुवंशेजी करताह । तखन एस.पी. महोदय हमरा ल' क' आंदोलन स्थल पर अयलाह आ हम झुग्गीधारीक प्रतिनिधिक रूपमे ओहि करार पर दस्तखत कयल । ओहि करारमे उल्लेख छलैक, ''सब झुग्गीधारीकेँ दस फीट लम्बा आ आठ फीट चौड़ा जमीनक स्वामित्व प्रदान कयल जा रहल अछि । एकर एवजमे पचीस रुपैया प्रतिवर्ष कर केर रूपमे नगर निगम कार्यालयमे जमा करब अनिवार्य होइतैक । जे केओ उक्त राशि जमा नहि करत, ओ झुग्गीसँ बेदखल भ' जायत । शर्त्तक मुताबिक नगर निगमकेँ शीघ्र झुग्गीक दुनू बगलमे दू-दू टा शौचालय आ दसटा चापाकलक प्रबंधक करबाक छलैक ।''

हमरा एस.पी. साहेबक संग गेलाक बाद आन्दोलन स्थल पर जे किछु भेल से हरनाम सिंहजी केर योजना छलन्हि । ओहो अद्‌भुत लोक छथि आ हमरा पर बहुत स्नेह रखैत छथि । हम आइ जे किछु छी, से हुनकहि बदौलति । नहि तँ हमरा सन-सन कतेको दिल्लीमे बौआ रहल अछि ।

एहि घटनाक बाद हमरा ओहि ठामक सब लोक चीन्हि गेल । कोनहु संघर्षक गप्प होइक तँ रघुवंशकेँ बजाबह । आ हमरहु जन्म तँ भगवान एही लेल देलन्हि । हमरा सेहो एहिमे खूब मन लगैत छल । हम तँ गाम छोड़ने छलहुँ गुमनामीक जिनगी व्यतीत करबाक लेल, मुदा एहि ठामक लोकक दुःख-दर्द आ उत्साह देखि अपन हम अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ ।

हमरा जखन एस.पी. साहेब पकड़ि क' ल' गेलाह, तँ ओ हमरा

बहुत डेरौलनि-धमकौलनि, जेना कि-

एस.पी. साहेब बजलाह, ''जानते हो, अगर ठीक से नहीं रहोगे, तो इतनी धारा लगा देंगे कि जीवन भर जेल में सड़ते रहोगे ।''

हम कहलियनि, ''बस... एतबहि कि आर किछु ?''

ओ हमर उत्तर सुनि चकित भ' गेलाह, आ पुछलनि, ''क्या नाम है ?''

हम कहलियनि, ''रघुवंश झा ।''

एस.पी. साहेब, ''बाबूजी का नाम ?''

हम कहलियनि, ''हरिवंश झा ।''

एस.पी. साहेब, ''घर ?''

हम कहलियनि, ''दरभंगा ।''

एस.पी. साहेब, ''कितना पढ़े हो ?''

हम कहलियनि, ''बी.ए. ।''

एस.पी. साहेब, ''घर में और कौन-कौन है ?''

हम कहलियनि, ''कोई नहीं ।'' तखन हुनकहु बुझयलनि जे बिढ़नीक खोंतामे हाथ द' देलहुँ । पहिने तँ हुनका भेलनि जे कोनो मजदूर वर्गक लोक होयत । डेरा-धमका क' कात क' देबैक, मुदा पाशा तँ उनटा पड़ि चुकल छलनि । ओ हमरा बुझाब' लगलाह । ''देखो अभी जवान हो, पढ़े-लिखे हो, कहीं नौकरी-चाकरी कर घर बसा लो । झगड़ा-झंझट से किसी का फायदा हुआ है क्या ?''

हम कहलियनि, ''एकरा अहाँ झगड़ा-झंझटि कहैत छियैक ? ई तँ अधिकारक लड़ाइ थीक । अधिकारक लेल लड़ब तँ हमरा सभक कर्त्तव्य थीक । सब हिन्दुस्तानीक ई मौलिक अधिकार थीक ।'' विद्वानक कथन अछि-

की केहरि शिशु केहनो निर्बल,
नहि कूदि पड़ए गजवर शिर पर ?
निज जन्मसिद्ध अधिकार हेतु,
यदि मरब, मरब नहि, बनब अमर ।

एस.पी. साहेब पुछलन्हि, ''इसका क्या मतलब हुआ ?''

हम कहलियन्हि, एकरा हिन्दीमे बुझिऔक–

अधिकार खोकर बैठना, यह महा दुष्कर्म है ।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दंड देना धर्म है ॥

एस.पी. साहेब, ''देखो ! ये सब किताबी बातें हैं । इट इज नॉट प्रैक्टिकेबुल ।''

हम कहलियन्हि, ''श्रीमान् ! गाँधीजीक नाम सुनने छियन्हि ।''

ओ बजलाह, '' कौन गाँधीजी ?''

हम कहलियन्हि, ''मोहनदास कर्मचन्द गाँधी, जे लड़िक' 1947 मे भारतकेँ अंग्रेजक चंगुलसँ आजाद करओलनि ।''

ओ बजलाह, ''तो क्या तुम भी अपने को गाँधी समझते हो ?''

हम कहलियनि, ''जी नहि, श्रीमान् ! हम तँ गाँधीजीक चरणक धूलिओक बराबरि नहि छी, मुदा हुनकहि आदर्श मानि हुनकहि पदचिह्न पर चलबाक प्रयास क' रहल छी ।''

तावत हुनका ककरहु टेलीफोन आबि गेलनि । ओ हमरा ल' क' गाड़ीमे बैसि गेलाह आ पुनः आंदोलन स्थल पर आबि गेलाह ।

आब हमर दैनिक कार्य भ' गेल गुरुद्वाराक कार्य कयलाक बाद झुग्गीधारी सभक खोज-खबरि लेब । ओकरा सभक सुख-दुःखमे संग देब । ओकरा सभक अधिकारक रक्षा करब । ओहि ठाम सड़क निर्माण आ रोशनीक व्यवस्था आदि । एहि क्रममे बहुतो लोकसँ चीन्हा-परिचय भेल ।

वर्ष 1984मे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधीक हत्या भेलनि । दिल्ली आ देशक अन्य भाग सिख दंगासँ धधक' लागल । हम झुग्गीधारीक पाँचटा दल तैयार कयलहुँ आ विभिन्न क्षेत्रमे सिखक सुरक्षाक लेल पठौलहुँ । ओ लोकनि सिखक खूब मदति कयलनि । ठेला भरि-भरिक' आवश्यक सामान घरे-घरे पहुचओलन्हि, जकर परिणाम भेल जे हमर नाम पूरा इलाकामे विख्यात भ' गेल ।

दिल्ली नगर निगम पार्षद केर चुनाव आबि गेल । एगारह गोटे चुनाव मैदानमे छलाह । हरनाम सिंहजी सब गोटेकेँ बजौलन्हि आ कोनो एक गोटेक नाम पर सर्वमान्य होयबाक लेल प्रयत्न कयलनि, मुदा विफल भ' गेलाह । तखन ओ हमरा नामक प्रस्ताव कयलन्हि । हम एहि लेल

तैयार नहि छलहुँ । हमर संघर्ष तँ मात्र झुग्गी धरि सीमित छल आ पार्षदक क्षेत्र विस्तृत छलैक । हमरा मनमे भय छल जे हम सफल भ' पायब वा नहि । मुदा हरनाम सिंह हमर किछु नहि सुनलनि । सम्भवतः ओ हमरहि लेल बैसार कयने छलाह । सब प्रत्याशीकेँ बजाक' सर्वमान्य करब मात्र एकटा बहाना छलैक । हमरा नामक प्रस्तावक संग ओ 1984 क घटनाक उल्लेख सेहो कयलनि । जतेक प्रत्याशी छलाह सब अपन नाम वापस ल' लेलनि । हम पार्षदक लेल निर्विरोध चुनल गेलहुँ । एकर कारण दुनू भ' सकैत अछि । एक तँ हरनाम सिंहक प्रभाव, दोसर हमर कार्यकलाप आ व्यक्तित्व । एहि प्रक्रिया मे जे किछु टाका खर्च भेल से हरनाम सिंह गुरुद्वारा कमीटीसँ कयलन्हि ।

एकहि वर्षमे हम अपना क्षेत्रकेँ बिजली, रोडसँ जोड़ि लेलहुँ आ जलापूर्तिक प्रचुर इन्तजाम कयलहुँ । झुग्गीमे कोनहु ठाम स्कूल नहि छल । हम अपना झुग्गी लग मिडिल स्कूल खोलबौलहुँ, जकर देखा-देखी आइ कतेको स्कूल बनि गेल । हमरा ओहि ठाम जे कोनो गोटे कोनो समस्या ल' क' अयलाह, ओकर निवारण तुरंत कयल गेल । हमरा महल्लामे चारिटा सुलभ शौचालय तँ पहिनेसँ छल । पुनः छौटा आर बीच-बीचमे बनबाओल गेल । ओहि बिना लोककेँ बड़ कष्ट होइत छलैक । झुग्गीमे रहनिहारकेँ ने ओतेक स्थान छलैक आ ने ओतेक साधन, जाहिसँ निजी शौचालय बनबाओल जाइत । तेँ ई सब नगर निगम दिशसँ बनबाओल गेल । प्रत्येक पचीस झुग्गी पर एकटा चापाकल भेटलैक । सब महल्लामे दू गोटेक चयन कयल गेल अछि जकरा सभक बैसार प्रत्येक रवि क' होइत अछि । कतहु कोनो दिक्कत बुझायल तँ ओकर समाधान कयलहुँ । तकर परिणाम अछि जे आइ पन्द्रह वर्षसँ ओहि क्षेत्रक विधायक छी ।

सबसँ आश्चर्य तँ एहि बातक अछि जे सिख दंगाक कारण एहि ठामक सिख कांग्रेस विरोधी भ' गेल अछि जे स्वाभाविके अछि । स्व. राजीव गाँधीक अपीलक बादो किछु नेताक स'ह पर असामाजिक तत्व कतेक सिखक दोकान लुटलक, कतेकोक घरमे आगि लगौलक, कतेकोक हत्या कयलक, कतेकोक संग बलात्कार कयलक, कतेको अपन पुस्तैनी घर छोड़ि भागक लेल विवश भ' गेल आ व्यवस्था हाथ पर हाथ धयने

मूकदर्शक बनि क' रहि गेल । ई सबटा कृत्य कांग्रेसकेँ बदनाम कयलक । एकर असरि सम्पूर्ण सिख परिवार पर भेल आ ओ लोकनि कांग्रेसक विरोधी बनि गेलाह । ओकर बादो हम कांग्रेसी विधायक छी ।

दिल्ली विधान सभाक चुनाव आबि गेल । एहि ठाम सब दलक लोक प्रत्याशी भेलाह, मुदा कांग्रेससँ केओ ठाढ़ो भेनिहार नहि छलाह । एखन धरि दंगाक आगि शांत नहि भेल छल । कांग्रेसक लोक बुझैत छलाह जे एहि ठामसँ जीतब तँ दूर, केओ बैसहु नहि देत । तखन एहि पर खर्च करब वा माथापच्ची करब मूर्खताक सिवाय आर किछु नहि । एहि क्षेत्रमे केओ अपनाकेँ कांग्रेसीओ नहि कहि सकैत छल, ने कतहु जनसभाक आयोजन क' सकैत छल । एहन स्थितिमे ओकर जीत कतेक सुनिश्चित होइतैक, सोचि सकैत छी । हम पार्षद तँ छलौहें । ई गप्प कतेको नेता सभकेँ सेहो बुझल छलैक ।

एक दिन रातिमे जखन हम सब काज निपटा क' अपना झुग्गीमे गेलहुँ तँ ओहि ठाम एक गोटे हमर प्रतीक्षामे छलाह । गप्पक क्रममे विदित भेल जे ओ बड़ पैघ कांग्रेसी नेता छथि । हम पुछलियन्हि, ''अपने के थिकहुँ आ कोन प्रयोजने एतेक रातिमे आयल छी ?''

ओ बजलाह, ''हम कांग्रेस पार्टीक कार्यकर्त्ता थिकहुँ आ अपने केँ एहि क्षेत्रक विधायक प्रत्याशीक लेल प्रस्ताव ल' क' आयल छी ।''

हम कहलियनि, ''एहि क्षेत्रमे आ कांग्रेस, ई तँ पाथर पर दूभि जनमायब भेल । एहि ठाम वोट तँ दूर कांग्रेसक नाम पर घुमिओ नहि सकैत छी ।''

ओ बजलाह, ''ई तँ सत्य अछि, मुदा अहाँक लेल किछु कठिन नहि अछि । पार्टीकेँ अहाँ पर पूर्ण भरोस छैक । अहाँकेँ छोड़ि दोसर केओ सफल नहि भ' सकैत अछि ।''

हम कहलियनि, ''हम एहि विषयमे आइ किछु नहि कहब । अपने काल्हि संध्याकाल आउ । तावत हम अपना बन्धु-बान्धवसँ विचार-विमर्श करैत छी ।''

हम सीधे हरनाम सिंहजी लग गेलहुँ आ हुनका सब गप्प कहलियन्हि । ओ बड़ी काल धरि चुप रहलाह । पुनः हमरा ठाढ़ होयबाक

आदेश द' देलन्हि । ओ गुरुद्वारामे हमरा प्रत्याशी होयबा पर विचार-विमर्श कयलनि । बहुत हुज्जतिक बाद सब केओ तैयार भेलन्हि । मुदा कांग्रेसक नाम पर नहि, मात्र रघुवंशक नाम पर । हमर 1984 मे कयल उपकारक फल आइ भेटल ।

संध्याकाल नेताजी पुनः अयलाह । हम हुनका अपन स्वीकृति द' देलियन्हि । संगहि इहो कहलियन्हि, ''एहि क्षेत्रमे बाहरसँ केओ प्रचारमे नहि आबथि आ पार्टीक कोनो ह्वीप जँ सिख विरोधी होयत, तँ हम ओकर विरोध करब । ओ मानि गेलाह । एहि तरहेँ हम विधायक बनलहुँ । हमरा विधायक बनयबामे हरनाम सिंहक भूमिका अत्यन्त सराहनीय रहलनि । हम हुनकर ई उपकार कहिओ नहि बिसरि सकैत छियनि । चुनावक क्रममे ओ दिन-राति हमरहि संगे रहलाह । कतेको ठाम हमरा लोक सब घेरि लेलक । तखन हरनाम सिंह अपना विवेकसँ सबकेँ शांत करैत छलाह आ सबकेँ अपना पक्षमे करैत छलाह । तहिना हमहूँ हुनक एक इशारा पर आगिमे कूदि सकैत छी ।

एहि बेर हरनाम सिंह हमरा लोकसभासँ चुनाव लड़ौताह । जँ कांग्रेस टिकट देलक तँ ठीक, अन्यथा स्वतंत्र प्रत्याशीक रूपमे जेना कि ओ बजैत छथि । एहि बीचमे मुख्यमंत्री दिशसँ हमरा मंत्री पदक आमंत्रण भेटल, मुदा हम ओकरा स्वीकार नहि कयलहुँ । हमर इच्छा अछि, हम सतत अपना क्षेत्रक लोकक बीच रही । से मंत्री बनलासँ सम्भव नहि होइत ।

एम्हर जखन हमरा गामक लोककेँ वा इलाकाक लोककेँ हमरा विषयमे जानकारी भेटलन्हि तँ ओ सब हमरासँ सम्पर्क करबाक प्रयास कयलन्हि । मुदा हम ककरहुसँ गप्प नहि करैत छी । हम पहिने कहने छलहुँ जे हमरा केओ गारि पढ़ि देत तँ कष्ट नहि होयत । मुदा हम झूठ आ झूट्ठाकेँ देख' नहि चाहैत छी । तेँ अपनहुँसँ कष्ट भ' गेल छल, मुदा अपने तँ बड़ चतुराइसँ झूठ बजलहुँ । हमरा तँ जे आश्रय देलक, सैह ने अपन लोक ! जे त्यागि देलक, ओकरा जँ आइ मन पड़ैत छियैक तँ एहूमे ओकर किछु ने किछु स्वार्थे होयतैक । तुलसी बाबा कहैत छथि-
'जहाँ बसहु तहाँ सुन्दर देसू । जो प्रतिपालइ सोइ नरेसू ॥'

तेँ हमर आब सब किछु ई झुग्गी, झुग्गी बस्ती आ ई गुरुद्वारा

अछि जे हमरा नव जीवन प्रदान कयलक । एकटा अनचिन्हारकेँ पहचान देलक, एक भुतिआयल के उचित बाट देखौलक, बेरोजगारकेँ रोजगार, बेघर के घर-बेआसराकेँ आसरा आ एकटा अकर्मण्यकेँ गति देलक । एकरा बिसरब की उचित होयत ? इएह थीक हमर जीवन दर्पण ।''

''अपनेक कथा तँ बहुत दर्दभरल अछि, मुदा एहिसँ अधीर नहि होयबाक चाही । सोनाकेँ आगिमे जतेक तपाओल जाइत छैक, ओकर कान्तिमे ओतेक निखार अबैत छैक । विद्वानक कहब छन्हि–

घनक चोट सहि लौह धातु सँ होइछ जखन तरुआरि ।
रहितहुँ छोट अनेक युद्ध मे दैछ शत्रु स हारि ॥
अग्नि ताप सँ स्वर्ण अपन द्युति द्विगुणित ग्रहण करैछ ।
कर्मवीर बाधाक आगि सँ तहिना दीप्ति पबैछ ॥

अपनेकेँ माँ सेहो छलीह ने ! ओ एखन कत' छथि ?''

रघुवंशजी, "माँजीकेँ तँ हम एक मासक बादे ल' अनलियनि । गाममे हमर पितिऔत सब लंठइ-लुच्चइ करैत छल । ओ सब बात-बात पर माँकेँ प्रताड़ित करैत छलनि । माँकेँ बड़ कष्ट दैत छलनि । ओ तँ हमर माइये एतेक बर्दास्ती लोक छथि जे किछु नहि बजैत छलीह । नहि तँ ओ सब बहुत किछु क' सकैत छल । मुदा ई गप्प हमरा माँ कहिओ नहि कहलन्हि ।

हमरहि गामक बगल केर रहनिहार बुधना एहि ठाम मजदूरी करैत अछि । ओकरहु एकटा झुग्गी बनबा देने छियैक । एक बेर ओ गाम जाइत काल भेट कयलक । हम ओकरा माँक समाचार बुझबाक लेल कहने छलियैक । ओ जखन टेलीफोन पर ओहि ठामक बखान कयलक तँ हमर मन हहरि गेल । माँक संग एहन व्यवहार होइत छलनि जेना ओ निःसंतान आ भूमिहीन होथि । हम हरनाम सिंहजीकेँ सब गप्प कहलियन्हि । ओ कहलन्हि, ''पुत्तर ! तुम्हारे पास तो झुग्गी है ही और खाने के लिये लंगर मिल ही जाता है । फिर चिंता किस बात की ? भाभी को यहीं ले आ ।''

हम बुधनाकेँ टेलीफोन कयलहुँ आ कहलियैक, ''तोँ हमरा गाम पर जा क' बजिहेँ, 'रघुवंशकेँ मन खराब छन्हि । हम तँ एहि लेल नहि कहने छलहुँ जे ओ हमरा सप्पत देने छलाह । मुदा हमर मन नहि मानलक ।'

ई सुनितहि माँ जाहि स्थितिमे छलीह, एहि ठाम अयबाक लेल तैयार भ' गेलीह आ बुधनेक संग आबि गेलीह । हमरा बीमारीक विषयमे हमर पितिऔत सब सेहो बुझलक, मुदा प्रतिक्रिया नहि भेलैक । ओ सब सोचैत होयत जे भने ओम्हरहि मरि-खपि जायत जाहिसँ सोलहन्नी हमरहि भ' जायत । एहन सम्बन्धीसँ सम्बन्ध राखि क' की होयत ?''

हम पुछलियन्हि, ''अपने जखन गाम नहि गेलहुँ, तखन विवाह-दान सेहो अवश्य एही ठाम कयने होयब । कनियाँ सजातीय छथि वा पंजाबीये छथि ?''

रघुवंशजी बजलाह, ''औजी ! अहाँकेँ तँ पत्रकार होयबाक चाही । एकदम खोंइचा छोड़ा क' सब बात पुछिये लैत छी ।

विवाह हमर एही ठाम भेल आ सेहो अपनहि झुग्गी बस्तीमे । हमरहि इलाकाक लोक छथि सुदीन बाबू । अपने तँ सुदीन बाबू एकटा बिल्डरक ओहि ठाम मुंशीक काज करैत छलाह । कन्या एही ठाम रहि क' बी.ए. पास कयलथिन आ माँजीकेँ पसिन्न भ' गेलथिन्ह । बात भेलैक जे एहि ठाम दूर-दूर धरि कोनो मंदिर नहि छलैक । माँ तँ ठहरलीह पुजेगरी । हम तँ अपन काज गुरुद्वारासँ चला लैत छी । भगवान तँ सब ठाम छथि । चाहे ओ मन्दिर हो वा गुरुद्वारा, मस्जिद हो वा चर्च । मुदा माँकेँ बिना मंदिरे संतोष नहि होइत छन्हि आ बिना पूजा-पाठे अन्न-जलो नहि ग्रहण करतीह । झुग्गीमे अधिकांश मजदूरं वर्गक लोक छलाह, जनिका सभकेँ पूजा-पाठसँ कोनो सरोकार नहि । मुदा किछु लोक एहनो छलाह, जनिका मंदिरक अभाव खटकैत छलन्हि । हम एक दिन एहि विषयमे हरनाम सिंहजीसँ गप्प कयलहुँ । ओ गुरुद्वाराक पाछाँमे थोड़ेक जगह देखा देलनि जे सरकारी छलैक, मुदा ओकर कोनो खास उपयोग नहि छलैक । हम सब मिलिजुलि क' राता-राती ओहि ठाम महादेवक स्थापना क' देलहुँ ।

किछु दिनक बाद ओहि ठाम भव्य मंदिरक निर्माण भेल । आब तँ ओहि ठाम पूजा कयनिहारक कमिये नहि अछि । जकरा नहि करबाक चाही सेहो करैत अछि । दूर-दूरसँ सेहो लोक सब आब' लागल । खास क' शिवरात्रिक भीड़ तँ सम्हारने नहि सम्हरैत अछि ।

ठीक शिवरात्रिक दिन छलैक । माँ पूजा करबाक लेल मंदिर गेल

छलीह । शिवानी आ हुनकर माँ सेहो पूजा करबाक लेल मंदिर गेल छलीह । पूजा कयलाक बाद शिवानी भोला बाबाक नचारी गाबि रहल छलीह, 'शिव हो उतरब पार कओने विधि ना' ।

''ई नचारी सुनि हमर माँ मंत्र-मुग्ध भ' गेलीह । ओ ककरहुसँ पुछलथिन्ह, ''ई के गाबि रहल छथि ?''

शिवानीक माँ सेहो मंदिरेमे छलीह । ओ बजलीह, ''ई हमर बेटी शिवानी छथि ।'' गीत खतम भेलाक बाद माँ शिवानीकेँ भरि पाँज क' पकड़ि लेलथिन्ह आ हुनका बहुत आशीर्वाद देलथिन्ह ।

माँ शिवानीसँ पुछलथिन्ह, ''की नाम थीक ?''

ओ बजलीह, ''शिवानी ।''

माँ, ''बाबूजीक नाम ?''

शिवानी, ''श्री सुदीन ।''

माँ, ''गाम कोन भेल ?''

शिवानी, ''मधुबनी ।''

माँ, ''एहि ठाम कत' रहैत छी ?''

शिवानी, ''एही बगलमे झुग्गी न. 493 मे ।'

माँ, ''कतेक पढ़लि-लिखलि छी ?''

शिवानी, ''एही बेर बी.ए. पास कयलहुँ अछि आ एम.ए.मे नाम लिखयबाक लेल सोचि रहल छी ।''

माँ शिवानीक मायसँ बजलीह, ''हमरा शिवानी बड़ पसिन्न छथि । हम हिनका अपन पुतहु बनाब' चाहैत छियनि, जँ अहाँकेँ कोनो आपत्ति नहि हो तखन । माँ शिवानीक रूप, पैघ-पैघ आँखि आ पातर-छीतर देह देखि एतेक मुग्ध भ' गेलीह जे इहो नहि पुछलथिन्ह जे ओ कोन जातिक छथि । हुनका लेल एहि झुग्गीक रहनिहार सब एक जातिक छथि। एहिमे सम्बन्ध कयलासँ कोनो हर्ज नहि होइतन्हि ।''

शिवानीक माय बजलीह, ''अहाँ के थिकहुँ ? हम तँ अहाँकेँ चीन्हि नहि रहल छी । हम कोना क' एखन किछु बाजू ? ई सब निर्णय तँ शिवानीक बाबूजीये करताह जे शिवानीक विवाह कत' आ ककरा संग होइनि ।''

''ठीक छै, अहाँ शिवानीक बाबूजीकेँ हमरा ओहि ठाम पठा देबैन्हि आ संगे अहूँ आयब । आब तँ लोक दुनू प्राणी मिलिक' धिया-पुताक सम्बन्ध तय करैत छथि आ से करबोक चाही । ई कोनो अनर्गल नहि भेलैक । युग बदलि रहल छैक, हमरो लोकनिकेँ बदलबाक चाही ।''

शिवानीक माय बजलीह, ''मुदा कोन ठाम पठा देबैन्हि ? किछु अता-पता तँ देब ।''

माँ बजलीह, ''अवश्य, हमर पता अछि, झुग्गी नम्बर पाँच सय अठारह ।''

शिवानीक माय बजलीह, ''मुदा ओ तँ रघुवंशजीक झुग्गी छियैन्हि ।''

माँ बजलीह, ''जी हँ..., ओ रघुवंशक झुग्गी छियैन्हि आ हम दुखियारिन हुनकहि माय छी ।''

ई सुनितहि शिवानीक माय हमरा माँकेँ पयर छुबि गोड़ लगलथिन्ह आ शिवानीकेँ सेहो गोड़ लगबाक लेल इशारा कयलथिन । पुनः बजलीह, ''अहाँ दुखियारिन किएक रहब ? अहाँ सनक भाग भगवान सबकेँ देथुन्ह । आइ हम सब एहि झुग्गीमे रहि रहल छी, से रघुवंश जीक कृपा छन्हि । ओ हमरा सभक बीच भगवान बनि क' अयलाह । मासमे चारि-पाँच बेर नगर निगमबला आबि क' झुग्गी तोड़ि दैत छलैक । कतेक परिश्रमसँ कहुना बनबैत छलहुँ । निकास-बातक सेहो बड़ असुविधा छलैक । ओ सरकारसँ लड़िक' हमरा सभक झुग्गी स्थायी करौलन्हि । एहि ठाम लग-पासमे ने कतहु मंदिर छल आ ने बच्चा सभक पढ़बाक लेल स्कूल । इहो सब हुनकहि देन थिकनि । कतेक-कतेक दूरसँ एहि ठाम लोक पूजा करबाक लेल अबैत छथि । ई तँ हमर अहोभाग्य अछि जे अहाँकेँ शिवानी पसिन्न पड़ि गेलीह । हम आइये शिवानीक बाबूजीकेँ अहाँक ओहि ठाम पठाबैत छियन्हि ।''

एतेक कहैत ओ पुनः माँक चरण पकड़ि लेलथिन्ह, आ माँ हुनका भरि पाँज क' उठा अपना हृदयसँ लगा लेलथिन्ह । बुझू जे नब्बे प्रतिशत गप्प तय भ' गेलैक । मात्र औपचारिकताटा रहि गेल छलैक, जे शिवानीक बाबूजी सुदीन बाबू आबि पूर्ण करितथि ।

संध्याकाल सुदीन बाबू दुनू प्राणी हमरा झुग्गीमे अयलाह आ माँसँ

सब गप्प-शप्प कयलनि । हम ओहि समयमे गुरुद्वारामे छलहुँ । अयलाक बाद माँ सब किछु कहलनि । हमरा विवाह करबाक इच्छा तँ नहि छल, मुदा माँ केर आज्ञा टारिओ तँ नहि सकैत छलहुँ । सभक माँ केर एकटा मनोरथ होइत छैक । ओकरहु पूरा करब तँ संतानक कर्त्तव्य होयबाक चाही । एहि विषय पर माँ हरनाम सिंहजीसँ सेहो गप्प कयलन्हि । ओहो बड़ प्रसन्न भेलाह । ओ सबटा प्रबंध गुरुद्वारामे कर' चाहैत छलाह । मुदा हमहीँ कहलियन्हि, ''हम एकदम सादगीसँ शिव मंदिरमे अपना कौलिक रीति-रिवाजसँ विवाह करब । हम तँ ओही रूपेँ विवाहक सब इन्तिजाम कयलहुँ, मुदा हरनाम सिंहजी गुरुद्वारा दिशसँ सौंसे बस्तीक भोजनक इन्तिजाम कयलन्हि । ऊपरसँ अगल-बगल केर दू सय सरदारकेँ सेहो बजा लेलनि । विवाह सम्पन्न भेलाक बाद हम सब मंदिरसँ सीधे अपना झुग्गीमे अयलहुँ । ओकर बाद प्रातःकाल गुरुद्वारामे सेहो शिवानीक संग जा क' माथा टेकलहुँ । हम एखन धरि ई नहि बुझि सकलहुँ जे हरनाम सिंह कोन माँटिक बनल छथि । जखन हम आ शिवानी माथा टेकि गुरुद्वारासँ बहरयलहुँ तँ ओहि ठाम हरनाम सिंह साड़ीक किछु गेठरी ल' क' ठाढ़ छलाह आ ओ साड़ी बाँट'क लेल शिवानीकेँ इशारा कयलथिन । एकर हमरा लोकनिकेँ कोनो आभास नहि छल ।''

हम पुछलियन्हि, ''विवाहोपरान्त शिवानीजीक की गति-विधि छन्हि ।''

रघुवंशजी बजलाह, ''विवाहक बाद शिवानी एम.ए., एल.एल.बी. कयलनि । एक वर्ष दिल्ली उच्च न्यायालयमे माननीय गर्गजीक सान्निध्यमे कार्य कयलनि । आब अपन प्रैक्टिस कम आ हमर सहयोग बेसी क' रहल छथि ।''

हम पुछलियन्हि, ''एखन तँ अपने विधायक आवासमे रहि रहल छी । जँ विधायकसँ हटब तँ कत' जायब ?''

रघुवंशजी बजलाह, ''एखनहु हमर झुग्गी सुरक्षित अछि आ हमर बाट जोहि रहल अछि । रवि दिन क' ओही ठाम एक घंटा बैसैत छी । सबसँ गप्प-शप्प करैत छी । सभक दुःख-सुख बुझैत छी । दू घंटा गुरुद्वाराक साफ-सफाइ करैत छी । आब तँ हरनाम सिंहजी बूढ़ भ' गेलाह, मुदा हम हुनकर भेट नियमित रूपेँ करैत छी । हुनका संगे लंगर खाइत

छी । हमरा कतेको लोक जमीन वा मकान खरीद'मे सहयोग करबाक आश्वासन देलन्हि । मुदा हम अपन अतीतकेँ नहि बिसर' चाहैत छी । हम बिसर' नहि चाहैत छी ओहि गुरुद्वाराकेँ जे हमरा नव जीवन शुरू करबाक बाट देखौलक । हम बिसर' नहि चाहैत छी वयोवृद्ध संत हरनाम सिंहजीकेँ जे हमरा मृत जीवनमे प्राणक संचार क' नव जीवन प्रदान कयलन्हि आ दुःखक ओहि घड़ीमे जखन हमरा लग केओ अपन नहि छल, ओ अपन बनि क' ठाढ़ भेलाह । हम बिसर' नहि चाहैत छी अपना मनक भीतरक सत्यकेँ जे विषमसँ विषम परिस्थितिमे हमर संग नहि छोड़लक आ हमरा कतहु झुक' नहि देलक । अन्तमे हम एहि झुग्गीवासीक संग अगल-बगल रह'वला सरदारजी सभक सोझाँ नतमस्तक छी जे हमरा विचारक समर्थन करैत दुर्गमसँ दुर्गम बाटकेँ सुगम आ सुन्नर बनयबामे सहयोगी भेलाह । एहि लेल ई झुग्गी हमर मंदिर थिक आ के मूर्ख होयत जे अपन मंदिर छोड़ि अन्यत्र जायत ?''

हम कहलियन्हि, ''ओना तँ आजुक नेताक सम्बन्धमे लोकक अवधारण छैक–

ब्रह्मासँ वरदान भेटल छन्हि, कहिओ हिनकर भरत ने पेट ।
लाखक लाख करोड़ गटकला, पेट भेलनि गोनू केर ठेक ॥
भ्रष्टाचार समायल नस मे, कतेक लगायब डायलीसीस ।
डेग-डेग पर ठाढ़ उचक्का, काटए कर्मवीर केर शीश ॥

जँ अहाँसँ साक्षात्कार नहि होइत तँ हमरहु इएह धारणा रहैत, मुदा अहाँक व्यथा सुनलाक बाद चाणक्य महाकाव्यक कविता दोहरायब उचित बुझना जाइत अछि–

नेता सैह समाजक दुखमय शोषण-पीड़न जाल ।
उठा लैछ गोबरधन गिरि सम आंगुर पर तत्काल ॥
कालकूट घट पीबि सुधा रस जग मे बाँटि सकैछ ।
मर्त्य लोक सँ देव-लोक धरि नेता ओ कहबैछ ॥

हम पुछलियन्हि, ''नेता जी, एहिठाम अधिकांश लोक कुकूर पोसने छथि । हम देखल जे लोकसँ बेसी कुकूरेक संख्या छैक । एकर की कारण छैक ? की एहि ठामक ई फौशन थिक ?''

नेताजी बजलाह, ''एहन कोनो खास बात नहि छैक । सबकेँ अपन मजबूरी होइत छैक । पता नहि ककर की मजबूरी छैक । हमरा बुझने जे सब दिन समाजसँ दूर रहल, प्रशासनिक महकमामे रहल, ओकरा आब समाजक बीच आब'मे संकोच होइत छैक । एहन लोक जे अपने वृद्ध छथि, बाल-बच्चा बाहर रहैत छन्हि, हुनका समय कटबाक लेल किछु तँ साधन चाहियनि । ओहने लोक कुकूर पोसैत छथि । ई हमर व्यक्तिगत सोच अछि ।''

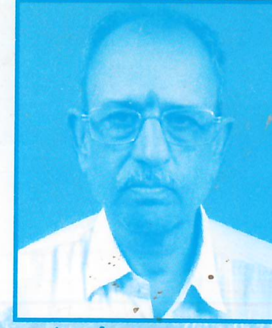
अंतमे रघुवंशजीकेँ नमस्कार करैत विदा लेलहुँ । ओहो दुनू हाथ जोड़ि पुनः अयबाक लेल अनुरोध कयलनि । रघुवंशजीक कथा सुनि कनेक कष्ट आ कनेक प्रसन्नता दुनू भेल । एखनहु समाजमे एहन लोक छथि जनिका केवल सत्येटाक सहारा छन्हि । मुदा एहन लोकक संख्या कम अछि । आइ आवश्यकता एहि बातक अछि जे एहन लोककेँ ताकि क' आगू कयल जाइनि आ प्रोत्साहित कयल जाइनि । हुनका संग गामक लोक जे किछु कयलकन्हि, से अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण अछि । एहिसँ मन ततेक खिन्न भ' गेल जे पुनः कुकूरक विषयमे दोसरसँ किछु पुछबाक साहस नहि भेल । सब केओ अपना-अपना गामक आ गामक लोकक जतेक परिचय देलन्हि, से पूर्णतः सत्य नहि भ' सकैत अछि । तखन दू-चारिटा खराब लोक कत' नहि होइत अछि, जे संख्यामे कम होइतहु सब पर भारी पड़ैत अछि । जनिकामे क्षमता छनि से अन्यत्र जा क' अपन पयर पसारि लैत छथि, मुदा जे अक्षम वा कमजोर अछि, से कत' जायत ? ओ तँ ओहीमे दुबकि क' रहि जाइत अछि । समस्याक सोझाँ अपन पीठ ओड़ि दैत अछि । गलती एक दिससँ कखनहु नहि भ' सकैत छैक । तखन तँ किछु लोहोक दोष तँ किछु लोहारोक....

एकर ज्वलंत उदाहरण रघुवंशजी छलाह । हम सोचलहुँ, आगू वैह बढ़ैत अछि जकरा बाटमे बाधा उत्पन्न होइत छैक, सोना वैह चमकैत अछि जकरा आगिमे तपाओल जाइत छैक, सुखी वैह भ' सकैत अछि जे दुःखमे जीयब सिखि गेल हो, विद्वान वैह अछि जे निरंतर अभ्यासरत अछि ।

ई छलनि श्यामजीक दिल्ली-प्रवासक अनुभव ।

●

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'



जन्म	:	2 जनवरी, 1950
जन्म स्थान	:	भैरव बलिया (मातृक)
पिता	:	स्व. बैद्यनाथ मिश्र सरल-चित्त, साधु-स्वभाव उदारमना एवं धर्मपरायण
माता	:	स्व. गोसाउनि देवी करुणमयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
पत्राचारक पता	:	ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233
शिक्षा	:	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर ।
वृत्ति	:	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)
रुचि	:	गीतकार, सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य कथा आ कविताक माध्यमे (मैथिलीमे)
प्रकाशित पोथी	:	विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) गामघर - (कथा संग्रह) सुजाता - (उपन्यास) महारानी कैकेयी - (व्याख्यात्मक निबंध) गुदड़ीक लाल - उपन्यास) अनठिया कुकुर - (उपन्यास) सुन्दर काण्ड - (सम्पादन-संपादक) आडम्बर - (कथा संग्रह)
उपाधि	:	'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ; भागलपुर, बिहार)
	:	'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर।
	:	'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)
	:	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)।
सम्पर्क	:	08986261756